श्री सिद्ध किशोरी
चरितामृत-सागर

✻ श्री सीताराम जी ✻

श्री सिद्धकिशोरी चरितामृत–सागर

विषय सूची

विषय पृष्ठ संख्या

प्रथम खण्ड

द्वितीय खण्ड

अनन्त श्री रामजी—अनन्त श्री किशोरी जी (बिहौती भवन, श्री अयोध्या जी)

Scanned by CamScanner

(१)

श्री:

भगवते श्री रामानन्दाय नमः

श्री सीतारामचंद्राभ्यां नमः

श्री सिद्धकिशोरीध्यै नमः

श्रीमते श्री हनुमते नमः

श्री गुरुवे नमः

❀ श्री गुरु वन्दना ❀

जे गुरु चरण रेणु सिर धरहीं । ते जनु सकल विभव बस करहीं ॥

जे गुरु पद अम्बुज अनुरागी । ते लोकहु बेदहु बड़भागी ॥

"गुरु बिन भवनिधि तरे न कोई । जो विरंचि शंकर सम होई ॥"

श्री गुरु चरण सरोज रज, निज मन मुकुर सुधारि ।
सिद्ध किशोरी चरित कहुँ, जो दायक फल चारि ॥

श्री गुरुदेव !

आप के श्री चरणों में इस तुच्छ सेवक का कोटिशः प्रणाम है, सादर सप्रेम वन्दना है, साष्टांग दंडवत् है । आप तो मायिक गुणों से निर्गुण एवं निराकार होते हुए भी शिष्यों के प्रेमवश सुदिव्य सगुण साकार हो जाते हैं । प्राकृतिक वाणी से अ-निर्वचनीय हैं, फिर भी शिष्य पर-शिष्य आप का गुणगान करते ही हैं ।

बलिहारी गुरुदेव की, कियो बहुत उपकार ।
महामंत्र हरिनाम दै, छुटा दियो संसार ॥

भगवन् ! आप ने अकारण कृपा-दया से इस दीन सेवक को अपने चरण शरण में लिया । प्रभु की सेवा सुमिरन का मार्ग दिखलाया तथा संत जनों का साथ कर दिया । उन्होंने भी संसारी मोहमाया से छुड़ाकर भगवान की ओर बढ़ाया । गुरुदेव ! आप की अपार कृपा का अनुभव कर मैं तो कृतकृत्य

एवं कृतार्थ हो गया। भगवन ! मैं तो नेत्रों में अश्रु मोतियों की भेंट लेकर अश्रुओं के ही अर्घ से पाद-पद्मों को धो, प्रणाम करता हूँ। मेरी कुपात्रता पर ध्यान न दीजिएगा। पारस लोहे की कुपात्रता पर ध्यान न देकर उसको स्वर्ण बना देना ही अपना स्वाभाविक धर्म समझता है। गुरुदेव ! मैं तो आप की दया का भिखारी हूँ।

बार बार वंदन करूँ, हरि-गुरु संत समान।
बलिहारी गुरुदेव की, दीनो हरि पद दान॥
स्थिर ह्वै मन रमि रहै, मिथिला-अवध ललाम,
यह वर प्रभु मोहिं दीजिये, रटौं सदा सियराम।

इस घोर संसार रूपी समुद्र के एक मात्र कर्णधार ! इस शुष्क जीवन वाटिका में सरसता—विमलता लाने वाले श्री गुरु महाराज ! मेरे हृदय के आराध्य देव !

"करन चहौं निमिकुल गुन गाहा, लघु मति मोर चरित अवगाहा"

हे कृपानाथ ! "मैंने श्री सिद्धकिशोरी जी" की शुभ जीवनी को लिखने का साहस तो कर लिया है। परन्तु लिखने की बुद्धि नहीं, लेखन-शैली भी नहीं जानता, लेखक के नियम क्या २ हैं, इनको भी मैं भूल गया हूँ। इन्हीं कारणों से बड़ी असमंजस में पड़ा हूँ कि अब करूं तो क्या करूं ? भारी कठिनाई दिखाई पड़ रही है। मैं रात दिन इसी उधेड़बुन में हैरान व परेशान हूँ। अब तो केवल एक मात्र आपका ही आसरा और भरोसा है। गुरुदेव ! आपकी शरण हूँ। दयासागर ! इस दास पर दया करना, कृपा करना एवं लाज भी रखना।

आप का चरण-रज पाद-पद्मानुगामी
रामगोपालदास (भइया जी)
(लक्ष्मीनिधि)

❀ सच्चा सुख तथा शान्ति कहाँ ❀

इस संसार चक्कर में फँसा हुआ जीवात्मा अज्ञानांधकार में फँसने के कारण भवसागर के दुखों को तो सहन कर रहा है परन्तु अपने स्वरूप को नहीं पहिचानता, और दिन रात सच्चे सुख और शान्ति की ही चाहना किया करता है, जो कि सहज और आसान काम नहीं है। दुनिया के खटखटे प्रभु का दरवाजा खटखटाने नहीं देते। इच्छा ही मनुष्य को बरबाद करती है। चाह रूपी कीचड़ दिल से बाहर निकाल दो। जहाँ मन शुद्ध हुआ तभी सच्चा सुख और परमानन्द एवं शान्ति की प्राप्ति हो सकेगी।

"चाह चमारी चूहड़ी, सब नीचों में नीच,
है तो पूर्ण ब्रह्म तू, जो चाह न होती बीच"।

जहाँ सुख है ही नहीं वहाँ सुख को खोजना ऐसा है जैसे तप्त मरूभूमि में जल को समझ कर भटकना। यह दुनिया सुलगती हुई भट्टी है, जिसमें दुःख की लपटें उठा करती हैं। यह कोई सच्चा सुख नहीं। सच्चा सुख तो भगवान के नाम, रूप, लीला, धाम एवं सत्संग में ही मिलेगा। उस प्रेम सरोवर का गोता लगाये बिना सच्चा सुख कहाँ ? परन्तु आप लोगों ने उस सरोवर में गोता लगाने का इरादा ही कब किया है ? अभी तो आप सरोवर के किनारे की कीच और दलदल ही में फँस रहे हैं। किसी का जन्म श्रेष्ठ कुल में हुआ, अथवा ऐश्वर्य्य, विद्या तथा लक्ष्मी की बातें तो सब मादक वस्तुयें हैं। इनके मद में रत

हुआ प्राणी किसी को भी अपने समान न समझ कर संसार में सभी का अपमान (तिरस्कार) करता है तब वह सबके सामने प्रभु के सुमधुर नामों का निर्लज्ज होकर कीर्तन भजन कैसे कर सकता है ? बिना भगवान को पुकारे भगवान आते नहीं। भगवान को भुलाने वाले धन, वैभव, गुणों का अभिमान एवं इच्छायें ही हैं जिनके कारण भगवान इनके समीप नहीं आते। इसलिये हमको इन वस्तुओं की कदापि चाहना न करनी चाहिये। यदि भगवान को ऐश्वर्य्य ही प्रिय होता, वैभव से ही आप प्रसन्न होते, तो आप दुर्योधन के सुन्दर एवं स्वादिष्ट छप्पन भोगों को छोड़ कर ग़रीब विदुर के घर सागपात खाने क्यों जाते ? "दुर्योधन घर मेवा त्यागी-साग विदुर घर खायो"। इससे तो पता चलता है कि भगवान अकिंचन प्रिय हैं, दीनों के नाथ हैं, निर्धनों के धन एवं कंगालों की सम्पत्ति हैं। जिस किसी ने भवसागर से पार कर देने वाली औषधि का सेवन किया हो तो कोई बिरला ही प्रभुप्यारा या अपनी मैय्या का दुलारा उस सच्चे सुख को जान सकता है। वह औषधि क्या है, और कहाँ मिलती है ? वह प्रभु का मधुर नाम, उनकी भक्ति एवं सच्चा प्रेम है। यह औषधि पूर्वाचार्य्यों और उपकारी सन्तों के पास रहती है, जो कि श्रद्धालु जिज्ञासु को ही मिल सकती है। पहले मन से विषयविकार रूपी काँटे, झाँकर, कचड़ा, कूड़ा को हटा कर उसमें बोलते पुरुष श्री सीताराम जी को बसावे जिसने चिउँटी से लेकर ब्रह्म तक को बनाया है, तभी सच्चा सुख और शान्ति प्राप्त होगी। मगर जब तक वैराग्य रूपी सर्प नहीं काटता, तब तक होश भी नहीं आता !

सज्जनो ! जब तक जगत की लालसा कम न होगी तब तक सच्चा सुख और शांति कहाँ ?· संसार में सर्वश्रेष्ठ सुख क्या है ? भगवत् भजन और सन्तों का मिलना। और दुःख क्या है ? उनका

बिछुड़ना ! धन, बल, राज पर गर्व करने वाले भोगीजन यदि अपने मुख को दर्पण द्वारा तनिक देखें तो उनको मालूम हो जायगा कि उनके भाग्य में वास्तविक सुख और शान्ति ख्याल ही ख्याल है। सच्चा सुख तथा प्रसन्नता तो उन्हें नाममात्र छू भी नहीं गई। वह सुख जिसे सांसारिक लोग सुख कहते हैं वह रोग एवं मृत्यु प्राप्त करने के अतिरिक्त और कुछ भी नहीं।

"फिरते हैं सुख की खोज में दिन रैन,
फिर भी मिलता है नहीं किसी को चैन।"
"मच रहा है जगत में हाहाकार,
रणस्थल बना हुआ है सारा संसार।"

यह संसार मदारी का थैला है, तमाशा है, झूठा है और सब सामान जादू का है। संसार के सभी भोग्य पदार्थ अनित्य एवं बिजली की तरह चंचल हैं। शरीर भी कच्चे घड़े के समान जरा सी ठेस लगते ही नष्ट हो जाने वाला है। "कुछ भरोसा नहीं है प्राणी का, मानो एक बुलबुला है पानी का"। फिर इस झूठे संसार में सच्चा सुख कहाँ ?

"सुख चाहो तो नित्य ही करिये प्रेम पुकार,
भक्ति ज्ञान बिनु हैं वृथा भोगों के भंडार"
"सुख चाहें तो हृदय से भजें श्री सीताराम,
जगत बिछौना काल का मिथ्या स्वप्न समान।"

यह संसारी भोग्य पदार्थ क्षणिक, दुखदाई, नश्वर एवं बन्धन के हेतु हैं। जब तक इनसे विमुख होकर भगवान के सम्मुख हो, उनसे कोई नाता जोड़कर प्रेम न करोगे तब तक इस जीव का कल्याण और सच्चा सुख कहाँ, और सच्चे सुख बिना फिर शांति कहाँ ? इसलिये महावीर बजरंग बली की शरण लो जो कि—

"महावीर रणधीर जगत में अंजनिपुत्र कहाते हैं,
बाँह पकड़ कर रसिकजनों को प्रभु समीप पहुँचाते हैं।"

देखिये! भोग की समस्त सामग्रियाँ सदा से मनुष्यों को खाती आई हैं और आगे भी खाती ही रहेंगी। संसार में जितने भी झगड़े-फ़साद नजर आते हैं इन सब की जड़ भोग ही है। भोग के लिये एक जीव दूसरे को मार रहा है फिर भी मनुष्य भोग को नहीं भोग सकता, उल्टा भोग ही मनुष्य को भोग लेता है। इसलिये मनुष्यमात्र को भोगराग से बच कर भगवान की शरण लेनी चाहिये। उन्हीं के मधुर नामों का कीर्तन, श्रवण, स्मरण करते रहना, बस यही सच्चा सुख है। इस सुख की थाह नहीं। भोग तो आसक्ति एवं बन्धन का कारण है, और भगवत प्रेम मुक्ति का। यह कैसी विचित्र लीला है। भारी आश्चर्य और खेद तो इस बात का है कि मनुष्य दूसरों को लूटमार कर भी सुख और शान्ति से जीना चाहता है। किसी जमाने में परमात्मा की प्राप्ति के निमित्त भजन और तप होते थे, मगर आज भोगों की प्राप्ति हेतु हो रहे हैं। भोगों की प्राप्ति करने-कराने के लिये जीवन और धर्म की बाजी तक लगाये बैठे हैं, और इसी को धर्म समझा जाता है। शोक!

हम आज सैकड़ों आशाओं की फाँसी में बँधे हुये काम-क्रोधादि साधनों से कामभोगार्थ, अन्यायपूर्वक अर्थ (धन) की प्राप्ति के उपाय में लग रहे हैं, मोह ने हमें घेर लिया है, अभिमान ने अन्धा कर दिया है, लोभ ने हमारी वृत्ति को बिगाड़ा, तो इधर काम ने हमें उन्मत्त बना दिया है। यदि भोग पदार्थों को एक बार ठुकरा कर हम भगवान में प्रेम करें, भगवान के निमित्त जगत के सारे कार्य करें तो अनन्त ऐश्वर्य, सच्चा सुख और शान्ति हमारे पीछे दौड़ी-दौड़ी खुशामद करती फिरे। परन्तु दुःख है कि संसारी लोगों को वास्तविक जीवन की कुछ भी परवाह या चिन्ता

नहीं है। स्वयं ही मृत्यु को ढूँढ़ कर अपने पावों कुल्हाड़ी मार रहे हैं।

प्रभु को अपनी सत्य प्रतिज्ञा (सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मिति चयाचिते) के पालन की जितनी परवाह है उतना पक्का भरोसा हमें है ही कहाँ ? यदि एक बार विश्वास हो जाय तो बेड़ा ही पार हो जाय। इसलिये जो प्रभु सतत स्मरण करने योग्य हैं उन्हीं का अहर्निश स्मरण, भजन पूजन करें। जब तक हम प्रभु का भजन स्मरण न करेंगे तब तक जीवन-मरण का धन्धा कदापि छूट नहीं सकता, माया का जाल टूट नहीं सकता। तब सच्चा सुख और शान्ति कहाँ ?

यह संसार नाशवान हैं और सब मायारूप है :—

"लाई हयात आये क़ज़ा ले चली चले,
न अपनी खुशी आये, न अपनी खुशी चले"।

यहाँ जीव अपने कर्मफल भोगने के लिये नाना योनियों में जन्म लेते हैं, और उस जन्म का भोग समाप्त होने पर खाली हाथ वापस लौट जाते हैं।

"यह दुनिया एक मुसाफ़िर खाना है,
यहाँ सब झूंठी है वस्तु, यह झूठा कारखाना है"।
"मृत्यु की बैठी है बिल्ली लगाये घात हरदम,
करोड़ों खा गई मूसे तेरा फिर क्या टिकाना है"।
"रहोगे कब तलक भूले यहाँ दुनियाँ के धंधों में,
दो रोज़ा ज़िन्दगी है 'भइया' सब आखिर छोड़ जाना है"।

मनुष्य के जीवन का एकमात्र कर्त्तव्य परम मधुर भगवान के शुभ नामों का गुणगान करना, उनकी दिव्य ललित लीलाओं का चिन्तवन करना, साथ ही साथ उनके परममाधुर्य्यमय आनन्द-मय गुणों का स्मरण करना ही है। इससे मोहरूपी रात्रि का पौह

फट जाता है। और भजन करते-करते समस्त पाप ताप नष्ट होकर उसके हृदय में दिव्य प्रकाश भी होने लगता है। यदि इसी जन्म में भगवत्प्राप्ति हो गई तो क्षण भर का जीवन भी बहुत है, और यदि न हुई तब तो एक कल्प की आयु भी निरर्थक है। सज्जनो !

"लिया दिया तेरे संग चलेगा, दाता रहेगा नाम"

मुख से लिया हुआ भगवान का मधुर नाम और हाथों से दिया हुआ दान, केवल यही (लिया दिया) साथ में जाता है और संसार में दाता (दानी) नाम रह जाता है। बाकी तो सब का सब यहीं धरा रह जाता है, संग में कुछ भी नहीं जाता।

"तुलसी इस संसार में भये हैं नृपति अनेक,
मैं मेरा कहते गये ले न गये तृण एक"।

"We will leave all behind except Bhajan and charity"

जिसे देखो संसार में सच्चा सुख और शान्ति को ही प्राप्त करने की धुन में लगे हैं। परन्तु इसके विपरीत सम्पूर्ण संसार में हरएक मनुष्य को दुख और भय ही दिखाई दे रहा है। ब्रह्मा से लेकर चींटी तक सब मृत्यु के भय से दुखी हैं। इन्द्र दुखी है कि कहीं स्वर्गलोक जाता न रहे, ग़रीब दुखी हैं कहीं रोटी न छिन जाय, जिनके पुत्र नहीं वह पुत्र के लिए दुखी हैं, जिनके विशेष परिवार है वह भी रोग, धन चिन्तन एवं राग द्वेष से दुखी है, जिधर भी आँख उठाकर देखो उधर दुख ही दुख नज़र आता है, सुख है ही कहाँ ? आज जिस मनुष्य के द्वारा कुछ सुख मिल भी गया, कल वही दुख का कारण बन जाता है।

"हम जानी हम ही पर बीती, एक एक दिन सब पर बीती"।
"सूखत ताल कमल मुरझाने, जल सूखत मछली पर बीती"।

"सूरज चन्द्र आकाश तपत हैं, ग्रहण लगे उनहूँ पर बीती।"
"कहत कबीर सुनो भाई साधो जन्मत ही ते हम पर बीती।"

पाठको ! जिस सिकन्दर बादशाह को सर्वसामर्थ्य-सम्पन्न सम्राट होने की भारी अहंकार था, वही एक दफ़ा जब ईरान के राजकुमार से मिलने एक क़ब्रिस्तान में उसके समीप पहुँचा तो उसे वहाँ कुछ जप करते देखा। जब उसने सिकन्दर का कोई अदब (आदर) नहीं किया और अपनी धुन में लगा रहा तब सिकन्दर बोला "राजकुमार मैं संसार का सम्राट हूँ जो कुछ तू चाहे माँग ले मैं तुझे दे सकता हूँ।" यह सुनकर बालक मुस्करा दिया। फिर सिकन्दर ने दूसरी बार उससे माँगने के लिये कहा तब वह बालक (राजकुमार) बोला, "अच्छा अगर तुम सब कुछ दे सकते हो तो मुझे तीन चीजें दो"—

(१) वह जवानी दो जिसमें बुढ़ापा न आवे (२) वह आयु दो जिसमें मृत्यु का भय न हो (३) वह सुख दो जिसमें दुःख का डर न हो।" इतना सुनकर सिकन्दर बादशाह गम्भीर दृष्टि से विचार करने लगा। फिर कुछ मौन रहने के बाद कहने लगा कि यह तीनों चीजें मेरे हाथ में नहीं हैं इसलिये मैं नहीं दे सकता। उस बालक ने फिर मुसकराते हुये कहा "तब तो तुम भी भिखारी हो। मैं तो उस शाहन्शाह से मिलना चाहता हूँ जहाँ से यह तीनों चीजें प्राप्त होती हैं। इसलिये उन्हीं का जप कर रहा हूँ।" यह सुनकर बादशाह सिकन्दर आश्चर्य में डूब गया और लज्जित होकर फिर कहने लगा कि राजकुमार यह श्मशान है, चारों तरफ़ खोपड़ियाँ पड़ी हैं, तुम चलो मेरे महल में रह कर भजन करो, ईश्वर तो सर्वव्यापी है, वहाँ भी आ जायगा। बालक बोला, "मैं यहाँ इन खोपड़ियों को देख-देख कर संसार की अनित्यता का ज्ञान प्राप्त कर रहा हूँ कि इसमें बड़े-बड़े अहंकारी

सम्राटों की खोपड़ियाँ भी हैं। यही दशा मेरी भी होने वाली है, अब महल तक जाने आने का समय कहाँ ?

"ऊँचे ऊँचे मकान थे जिनके, आज वह तंग गोर में हैं पड़े,
कल जहाँ पे गुलो शगूफा थे, आज देखा तो खार बिल्कुल है"।

इतना सुनते ही सिकन्दर का सारा घमण्ड चूर-चूर हो गया और शरमिन्दा होकर अपने महल को वापस लौट गया। इस बालक की भाँति जिसके हृदय में वैराग्य उदय हो जाय वही मानों मुक्ति की पहली सीढ़ी पर पहुँचा। ऐसा ज्ञानी भला किस चीज के लिये सुखी होगा, और फिर उसे दुःख कहाँ ? सज्जनो ! जिसने भगवत् प्रेम सुधा का ज़रा सा भी पान कर लिया हो तो उसकी दशा बड़ी ही विचित्र हो जाती है। प्रेम है तो बड़ा ही मीठा और स्वादिष्ट, परन्तु अपना तन, मन, धन सर्वस्व सौंप देने पर हो तो सर्वस्वतन्त्र प्रभु ऐसे भक्तों के प्रेमपाश अर्थात् प्रेम की दृढ़ जंजीर में बँध जाते हैं। प्रभु और कुछ न देख कर भक्त का केवल प्रेम भाव ही देखा करते हैं।

"भोग है सोने की थाली में या जामे गिल में है,
प्रभु देखते हैं ये कि कितना प्रेम इसके दिल में है"।

और भगवान कहते हैं !

"भाव बिन थूकूँ नहीं गाड़ी भरे सामान पर,
रीझ जाता है मगर दिल मान के इक पान पर"।

सज्जनो ! जैसे कि सर्प के विष से व्याकुल हुये पुरुष को मिश्री कड़वी लगती है, और जैसे नेत्र रोग वाले को दूध भी पीला दिखाई देता है, वैसे ही जब मनुष्य इन्द्रियों का गुलाम बन जाता है, तब वह भी अपने ज्ञान को खोकर भगवान तक

को भूल जाता है। इसलिये उसको भगवत वार्ता, भगवत् भजन एवं कथा इत्यादि कुछ भी प्रिय नहीं लगते। इसके फलस्वरूप न जाने कई बार नर्क, गर्भ एवं मृत्यु की विषम वेदनायें उसको भोगनी पड़ती हैं। संसार में कौन किसका है। यह तो मुसाफिर खाना है। मुसाफिर आते हैं, एक जगह रहते हैं, तरह-तरह के सम्बन्ध जोड़ते हैं। फिर अपने-अपने समय पर सब अपनी-अपनी राह चल देते हैं। संसार का यह नाता स्थाई थोड़े ही है? आज जो पुत्र बना है सम्भव है वही कभी पिता बना हो, एवं कभी हमारा शत्रु या मित्र भी बना हो।

जितने भी महलों के ऐश्वर्य हैं, यह सब भगवत्प्राप्ति के पथ के ठग हैं। चित्त की शान्ति के लिए समस्त कामनाओं का त्याग जरूरी है। त्याग से शान्ति मिलती है। जब चित्त शान्त हुआ, तब तो समझो सुख ही सुख है, नहीं तो दुख। एवं शान्ति बिना वैराग्य कहाँ? और विषयादिकों में वैराग्य हुये बिना ईश्वर में अनुराग कहाँ? संसारी कर्मों एवं विषयों में मन को फँसाना ही बंधन है, जबकि विषयों से मन को हटा कर उसे भगवत-भजन में लगाते हुये, लीलाओं का विस्तार करना बन्धन को छुड़ाने वाला होता है। मनुष्य वासनाओं के वशीभूत होकर रेशम के कीड़े की भाँति स्वयं ही जाल बनाता है, और स्वयं ही उसमें फँस भी जाता है। कोई किसी को नहीं फँसाता। सब अपनी वासना से फँसते हैं। भीतर जन्म जन्मान्तरों के संस्कार भरे रहते हैं। इसलिये परिस्थिति काल और वस्तु को पाकर वे संस्कार जाग्रत होकर अपना फल भी दिखाने लगते हैं।

जिस वक्त तक शरीर में बल और शक्ति है, बुद्धिमानों को चाहिए कि अपनी भलाई के निमित्त उपाय सोच रखें, वरना

घर जलने के वक्त कूप खोदने की जानकारी से लाभ ही क्या ?

"कल पे न डालिये, कल, यह कल आये आये न आये।"

"क्या भरोसा है इस दम का,यह दम आये-आये न आये।"

कल किसने देखो है ? कौन जानता है कि पल के बाद क्या होगा ? एक दिन मृत्यु अवश्य होगी, और कब होगी इसका हमें तुम्हें कुछ भी पता नहीं है। जन्म लेने के दिन ही मौत का टिकट भी मनुष्य को मिल जाता है। इसका भी पता नहीं कि "कब नकारा कूँच का बाजे"। अब तो होश हवास दुरुस्त बैठे हो। शायद अगले ही पल में तुम्हारी मृत्यु हो। तब तो तुम्हारे सभी काम ज्यों के त्यों धरे ही रह जायेंगे। अभी तो काम से हमें तुम्हें पल भर की फुरसत नहीं मिलती। उस समय तो सदा के लिये छुट्टी मिल जायगी। अभी शरीर के आराम के लिये बड़े-बड़े सुन्दर महलों में मुलायम-मुलायम गद्दों पर हम आप सोते बैठते हैं। उस समय निर्जन वन के अन्दर डरावने मरघट में खुली जमीन पर यह स्वर्ण सा सुन्दर शरीर दो मुट्ठी राख हो कर उड़ेगा,तब सारे अरमान दिल ही दिल में रह जायेंगे, सारी शेखी चूर-चूर और सारी हेकड़ी काफूर हो जायेगी। तुम्हारी मद भरी, गर्व भरी एवं रिस भरी आँखें हमेशा के लिए मुँद जायेंगी। यहाँ से परलोक जाने पर यहाँ के कमाये हुये कर्मों का भयानक फल (दुष्परिणाम) जब सामने आयेगा तब तो तुम काँप उठोगे, और दण्ड भोगने का समाचार सुनते ही मूर्छित हो जाओगे। ये संसार दुःख रूप है। यहाँ कोई किसी का नहीं। भगवत चरणों में मन लगाना परम सुख, तथा भगवान से विमुख होना ही परम दुख है। मनुष्य का शरीर तो केवल भगवत भजन के लिये ही है, नहीं तो पशु-पक्षी एवं तृण कूड़ा करकट से भी तिरस्कृत है।

"भगवत भजन तजि जे सुख चहत, ते सब राक्षस प्रेत,
व्यासदास के उर में बैठो-मोहन यह कह देत।"
ते नर राक्षस, कूकर, गदहा, ऊँट, वृषभ, गज, वोक,
व्यास जो नाम तजि भटकत, ता सिर पनहीं ठोंक।"
"व्यास सुरसिकन की रहन, बहुत कठिन है बीर,
मन आनन्द न घटै छिन, सहे जगत की पीर!"

यह शरीर भी स्वभाव से ही रोग, शोक और चिन्ताओं का घर है, इस में भी सुख कहाँ ? इसे भी कोई पूर्णतया सखी नहीं बना सकता, कारण कि यह मलीन है। कैसे भी सुन्दर सुगन्धित स्वच्छ स्वादिष्ट पदार्थ क्यों न हों, जहाँ वह पेट में गये कि देखने में बुरे दुर्गन्धयुक्त मल बन गये। संसार में सभी वस्तुयें सुन्दर एवं निर्मल हैं। एक यह देह ही इतनी मलीन और अपवित्र है कि इसके संसर्गमात्र से सभी दूषित एवं बदबूदार बन जाते हैं। इस शरीर से सदा मल ही निकलता रहता है। रोम-रोम से मल बहता रहता है। कानों से, आँखों से, नाक के दोनों छेदों से, जिह्वा से, दाँतों से और होठों से, भद्दा बदबूदार मल बाहर आता ही रहता है। पेट तो मल का थैला ही समझो। मलमूत्र द्वारों से मल निकल कर आस-पास की पवित्र भूमि को भी अपवित्र (अशुद्ध) बना देता है ! कितना भी सुगन्धित, शीतल गंगा जल क्यों न हो, पीते ही थोड़ी देर में वह बदबूदार मूत्र बन जायगा। रोम-रोम से पसीना भी दुर्गन्ध-पूर्ण निकलता है। वायु कितनी निर्मल है, किन्तु उसका जब शरीर में संसर्ग हो जाता है, तो अपान द्वार से कितनी बदबूदार वायु होकर निकलती है।

इस अपवित्र एवं मलीन देह को सुखी बनाने के निमित्त मनुष्य अपने भाइयों, सगे सम्बन्धियों एवं स्वजन व प्रिय मित्रों

तक के रक्त से अपने हाथ रँगते हुये हिचकता भी नहीं और न ही भगवान से डरता है। तब भी कुछ उचित कहा जा सकता था, जब कि यह शरीर सदा बना रहता। परन्तु यह शरीर तो क्षणभंगुर है। अनेकों पाप कर्म करके इसे पाला-पोसा मगर प्राणों के पृथक होते ही यह बेकार हो जाता है। अपने किसी भी काम में नहीं आता और अन्त में इसकी तीन ही गति है।

(१) पड़ा-पड़ा अगर सड़ गया तो कीड़े पड़ जाते हैं। (२) सियार, कुत्ते आदि मांस भोगी जीवों ने खा लिया तो उनके पेट में जाते ही विष्ठा हो जाता है। (३) अगर किसी ने इसको जला दिया तो दो मुट्ठी भस्म हो जाती है।

ऐसे इस प्रकार के अनित्य शरीर के पोषण के निमित्त किया हुआ पाप कदापि क्षमा नहीं हो सकता, बल्कि उसका फल दण्ड अवश्य भोगना ही पड़ता है। यह संसार कर्मभूमि है जैसा कर्म करोगे वैसा ही फल भी पाओगे।

"As you sow, so shall you reap".

इसलिये निरन्तर शुभ कर्मों का करना ही उचित है। परन्तु शोक है कि संसारी लोग रात्रि-दिवस दुनिया के धन्धों एवं पेट पालने की फ़िक्र और चिन्ता हां में डूबे रहते हैं। यदि एक-दो घण्टे भी प्रतिदिन नियमपूर्वक भगवान के ध्यान में नहीं लगा सकते, तो ऐसे मनुष्य-जीवन को धिक्कार है। इससे तो फिर पशु ही अच्छे हैं। क्या मनुष्य-जीवन का यही फल है ?

ज़िन्दगी बा बंदगी है ज़िन्दगी, ज़िन्दगी बे बंदगी शर्मिन्दगी।"

सज्जनो! अब तो बहुत सो चुके। अपना जन्म अकारण खो चुके, ज़रा जागो निद्रा को त्यागो। जब जागे तभी सवेरा समझ कर लग जाओ उस प्यारे प्रीतम के स्मरण-भजन में। यदि

ऐसा न हुआ तब तो अन्त में यमराज की कचेहरी में जवाब देते नहीं बनेना। अभी तो भजन करने की फुरसत ही नहीं मिलती, परन्तु जब यमराज के दूतों के लट्ठ चलेंगे, तो मार खाते समय क्या बहाना करोगे हमको फुरसत नहीं है। इसलिये भाइयो! जगतजाल से कुछ समय निकाल कर नित्य प्रति कुछ न कुछ सत्संग भजन कर लिया करो, जिससे फिर इस जन्म मरणरूपी काल कोठरी में न आना जाना पड़े। अगर न माने तो हाथ मल-मल पछताओगे, और जन्म मरण चौरासी लाख के चक्कर में पड़कर भारी दुःख उठाओगे। देखिये! संसार के सब भोगी सदा रोगी रहा करते हैं, और उनको रात दिन दुःख सुख की भट्ठी में जलना पड़ता है। मगर भगवत् भक्त सदैव एक रस और आनन्द मग्न रहा करते हैं। यह संसार दुखरूप है, नश्वर है। यहाँ कोई सुखी नहीं। इसलिये हृदय को भक्ति भावना से भरना और भगवत्भजन करना ही सार है। यह कब होता है, जब कि भगवत्कृपा होती है या पूर्व संस्कार जाग्रत हो उठते हैं। जिस प्रकार हजारों वर्ष के अन्धेरे घर में भी दीपक जलाने से तुरन्त प्रकाश हो जाता है, ठीक उसी प्रकार हज़ारों जन्म जन्मान्तरों के पाप ताप भी भगवान की एक बार की कृपादृष्टि से ही दूर हो सकते हैं। भगवान ही इस जगत में एक सत्य सनातन वस्तु हैं, और सब तो केवल उनकी चलती फिरती छाया ही समझो। कारण कि इस अनित्य जगत् में क्षणभंगुर जीवन पाकर कोई भी प्राणी सुखी नहीं रहता। तभी तो सारा जीवन दुःखमय ही कहा गया है। जन्मकाल में अनेकों तरह की पीड़ायें होती हैं। इस जीवन की मध्यम अवस्था भी बहुत ही कराल है। कभी मिलन है तो कभी वियोग है, कभी माता, पिता, भाई, बन्धु, स्त्री, पुत्रादि सम्बन्धियों की मृत्यु चिन्ता रुला रही है, तो कभी ज्वर खाँसी आदि रोगों के लिये औषधि

पर औषधि भी मँगाई जा रही हैं। कभी सिर में दर्द है, तो कभी मानसिक व्यथा ही दिल को सता रही है, जला रही है। जब देखो चिन्ता है, आलस्य है, शोक है, सन्ताप है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, तृष्णा, अहंकारादि, अविद्या, माया के वश में पड़ कर दूसरों का अनिष्ट करते हुये अपना भी अनिष्ट कर लेना महान पाप है, जिसका जीवन पर्य्यन्त पछताने के सिवाय न कोई चारा है न कोई उपाय है।

❀ पाश्चात्य विद्या एवं शिक्षा ❀

जब से पाश्चात्य विद्या का इस भारतवर्ष में सिक्का जमा (प्रवेश हुआ) तब से हमारे नई रोशनी के कुमारों की आखें ऐसी चौंधिया गई हैं कि वह अपने सनातन धर्म के समस्त सिद्धांतों एवं धार्मिक कार्यों को भूल कर भगवान से भी विमुख हो गये और भजन; पूजा-पाठ, दान-पुण्य, तीर्थ-व्रत, भगवत-भागवत को भी घृणा की दृष्टि से अवलोकन करने लगे। केवल इतना ही नहीं इस अंग्रेजी शिक्षा दीक्षा के प्रभाव से उनके विचारों ने भी ऐसा पलटा खाया कि उन्हें अब अपने देश की वेश-भूशा, खान-पान, आचार-विचार, रहन-सहन यहाँ तक कि कुछ भी अच्छा नहीं लगता।

गौर करने से आपको मालूम हो जायगा कि वास्तव में यह पाश्चात्य विद्या हमारे देश, हमारे धर्म, धन, सुख और जीवन को भी बरबाद करने वाली निकली। इस शिक्षा ने तो हमारा सर्वस्व नष्ट कर दिया। हमारा सामाजिक एवं राजनैतिक पतन तो इसके

द्वारा हुआ ही है परन्तु सबसे अधिक कुठाराघात हमारे "धर्म" के ऊपर किया है जिससे हम अपनी पुरानी संस्कृति और सभ्यता को एकदम भूल गये हैं। विधर्मी लोगों के संसर्ग से हमारी धारणा भी नष्ट होकर पेट पालना ही बाकी रह गया है और श्रद्धाहीन होकर नास्तिक बन रहे हैं। लोगोंकी प्रवृत्ति प्रति-दिन अधर्म की ओर बड़े वेग से बढ़ रही है, समस्त दिव्य शक्तियों का ह्रास हो रहा है। परलोक का विश्वास भी ढीला पड़ रहा है, मनुष्य पुरुषार्थहीन हो गये हैं। बल, पराक्रम नहीं रहा, बुद्धि भी मलीन हो गई है। भाग्यहीन और सदाचारहीन बनकर दुष्कर्म करने लगे हैं। यही कारण है कि बहुत से अकाल में ही काल के कवल बन रहे हैं।

यह भी कितनी भूल और शर्म की बात है कि अब वह लोग अपनी बुद्धि के सामने अपने बड़े बूढ़ों एवं पूर्वाचार्यों तक को बुरा भला एवं मूर्ख तक कहने में नहीं हिचकिचाते। प्राचीन बहु-मूल्य रत्नों को तो उन्होंने निकम्मा और मौलहीन समझकर ठुकरा दिया है तथा समुद्र पार के चमकीले भड़कीले काँचों को अपनाने में ही अपना गौरव समझते हैं। यह अंग्रेजी नाविलों और वेअर्थ के किस्से कहानियों को पढ़ सुन कर तो चकित रह जाते हैं, परन्तु अपने प्राचीन शास्त्र, पुराण, धार्मिक ग्रन्थ एवं इतिहासों को झूठे गपोड़े कहने में भी नहीं लजाते।

सज्जनो ! सनातन धर्म ऐसी कोई वस्तु वस्तु तो है नहीं कि इसको ताक में रक्खा रहने दें, और किसी विशेष अवसर पर इनको पहिन लिया करें। अगर यह लोग जरा भी अपने धर्म ग्रन्थों को पढ़ने सुनने की ओर झुकते, तब इन्हें पता चलता कि इनमें कैसे-कैसे सुन्दर अनमोल रत्न, हीरे, जवाहरात भरे पड़े हैं जिनकी न तो कोई गणना है न ही कोई सीमा। कितने

शोक एवं दुख का विषय है कि अन्य देशों के अन्य मतावलम्बी लोग तो हमारे देश भारतभूमि से शिक्षा-दीक्षा ग्रहण करके भक्ति और मुक्ति तक को प्राप्त कर लें, और हम लोग अपने ही खजाने से बेपरवाह रह कर वंचित बने रहें, यह हमारा दुर्भाग्य नहीं है तो और है ही क्या ? काल धन्य तेरी माया। भ्रमर तो दूर से कमल का रस ले जाय, और मेंढक पास में रहने पर भी टर्राता हुआ खाली रह जाय।

महान पुरुषों का कथन है कि उस समाज से बढ़कर अभागा और कोई समाज नहीं है, जिसके पास अपना इतिहास न हो। यदि इतिहास होते हुये भी उससे लोग लाभ न उठावें तब तो यथार्थ में वह समाज जीवित रहने पर भी मृतप्राय है।

"History is the record of progress alone"

हमारा तो कर्तव्य था कि हम लोग उन महान पुरुषों के चलाये हुये सनातन धार्मिक सिद्धान्तों पर स्वयं आचरण करते तथा अपने बाल बच्चों को भी उन पर अमल करने के लिये बाध्य करते एवं उनका उपकार मानते हुये आजन्म उनके ऋणी व आभारी बनते कि जिन्होंने देश और धर्म के निमित्त कितनी कठिनाइयों का सामना करते हुये अपने बहुमूल्य जीवन तक को भी निछावर कर डाला। परन्तु कितने दुख का विषय है कि किसी उपकार के बदले अपने पूर्वाचार्य्यों का अपकार करना, उनको मूर्ख बनाना यही कर्तव्य बाकी रह गया है। ऐसा क्यों हुआ ? अपने पूर्वाचार्य्यों व भगवान के उपकारों को भूलने और धर्मकर्म को तिलांजलि देनेका ही यह दुष्परिणाम है। हिन्दू जाति जब तक अपने धर्म-कर्म का पालन करती रही संसार शिरोमणि बनी रही। जब से आलस्य, उन्मादवश अथवा म्लेच्छों के संसर्ग से अपने इस पवित्र धर्म को खो बैठी तभी से

इस जाति का तेज नष्ट हो कर पतन भी होने लगा। कहावत है कि :—

"धन देकर तन राखिये, तन तजि रखिये लाज,
धन तज, तन तज, लाज तज, रखिये धर्म सों काज"।

"When wealth is lost nothing is lost, when health is lost something is lost, and when character is lost all is lost,"

इस भारतवर्ष को ऐसे कुपूतों की वृद्धि एवं सुपूतों के अभाव से ही विदेशियों की गुलामी की जंजीरों में भी जकड़ना पड़ा। इसकी पवित्र भूमि पद दलित हुई और अनेकों सुपूत भी इनके हथियारों के निशाने बने। हाय! ठोकरें खा खाकर भी हम अभी तक नहीं चेत पाये कि हमारा लक्ष्य क्या है? हा! वह देवभूमि भारत जिसके लिये देवता भी तरसा करते हैं वही आज अधर्म एवं परस्पर फूट के कारण लड़ाई का घर तथा म्लेच्छ भूमि बन रही है।

अभिमान तथा विद्या के मद में चूर आज-कल के युवक इस बात को भी भूल गये हैं कि इस संसार में कोई अमर नहीं रहा। जो आया है वह एक दिन जायगा भी जरूर। और इस परिवर्तनशील संसार में सदा किसी भी पदार्थ की एक सी ही दशा कभी नहीं रह सकती।

"ऐ ग़ाफ़िल घड़ियाल तुझे देता है मुनादी,
गरदों ने घड़ी उम्र की तेरे इक और घटा दी"।

सज्जनो! दुनियाँ में किसी चीज को क़याम नहीं। यह सराय फ़ानी चन्दरोजा ज़िन्दगानी है। इस लिये इसमें फँसे रहना सरासर जहालत की निशानी है। इन्सान कर ही क्या सकता है? इन्सान ज़रा सी देर में बच्चा से जवान, ऐय्यांश, मुफ़लिस, ज़रदार, पीर, फ़क़ीर, ज़ईफ़, सुफ़ेद-पोश वग़ैरह-वग़ैरह

बहुरूपिये नट और गिरगिट की मानिन्द कई सूरतें दिखाता मल्कुलमौत की नगर रूपी ओट में छिप जाता है।

"जहाँ पर एक दिन बे मिसाल जाहोजलाली होती है वहाँ एक दिन जरूर पायमाली भी होती है"। "जहाँ खुशी होती है वहाँ मातम भी होता है"। "सुख के बाद दुख, दुख के बाद सुख भी होता है। ऐसे ही जहाँ पर एक दिन जंगल होता है, वहाँ पर कभी न कभी दबदबे के साथ मंगल भी होता है"। "महल तो होते हैं खंडहर, फिर वही खंडहर कभी महल भी होता है"।"हमेशा किसी की हालत एकसाँ नहीं रहती। दिनों की गर्दिश अपने खेल दिखाती है, कभी शाह को गदा तो गदा को शाह बनाती है"। "किस को बताऊँ किसके दिखाऊँ निशान को, गज़ भर ज़मीन चाट रही है जहान को"। "जहाँ बजती है शहनाई वहाँ मातम भी होते हैं, और जहाँ होती है हँसाई वहाँ रुलाई भी होती है"। "प्रभु को जो मंज़ूर होता है वही कर दिखाता है, जहान में कुदरत उसकी का न कोई पार पाता है"।

पृथ्वी गोल है। संसार चक्र बार-बार घूमता रहता है। आज जिसे हम छोड़कर चल दिये, कालान्तर में हम फिर वहीं पहुँच जाते हैं। कल जिससे हम डरते थे आज वही हमसे डरता है। कल जिसके डर से बड़े-बड़े चक्रवर्ती काँपते थे आज वही साधारण मनुष्यों से अपमानित होता दिखाई पड़ता है। "जब आते हैं दिनों के फेर, मकड़ी के जाले में फँसते हैं शेर"। यह सब समय की महिमा है। काल भगवान की क्रीड़ा है। समय बड़ा बलवान होता है, वही सब कुछ करा लेता है। जमाने की गर्दिश ने लाखों चालें बदलीं, हजारों के सिरों से ताजेशाही उतार कर कासाये-गदाई (भीख माँगने का पात्र) उनके हाथों में दिया। लाखों को अगर यतीम बनाया तो करोड़ों को बेवा बनाने में भी कसर बाक़ी नहीं छोड़ी। परन्तु संसार की कोई भी शक्ति भारत को मिटा नहीं सकी। काल की भी क्या विचित्र

गति है। कल जो मालामाल था, सर्व शिरोमणि था आज वही सबका तिरस्कार-भाजन बन दर-दर भटकता फिरता है। कल जो दूसरों का मुख ताकते थे, बदन पर जिन के वस्त्र का नामो-निशान न था, आज वही सर्व शिरोमणि समझे जाते हैं, करोड़पति-अरबपति धन्नासेठ कहलाते हैं। काल धन्य तेरी माया!

❀ अवतार ❀

ऐ भारत माता तू धन्य है। तेरी महिमा का कोई पार पा सके, यह शक्ति भला किसमें है? तेरे उदर में से ऐसे २ बल-वान एवं पराक्रमी योद्धा, सत्यवादी, चक्रवर्ती, राजेमहाराजे, जगद्गुरु, आचार्य्य, योगिराज, यति सार्वभौम, भगवद्भक्त, अवतारी महानपुरुष, प्रभावशाली दानवीर एवं धर्मवीर इत्यादि २ पैदा हुये, जिन्होंने समय-समय पर अपने अपूर्व चमत्कार दिखलाये और दुष्टों का दलन करते हुये तेरे बोझ को भी हलका किया। जिनकी दृढ़ता और शक्ति के सामने अन्य धर्मावलम्बी भी दाँतों तले उँगली दबाकर इस भारत की मुक्तकण्ठ से भूरि-भूरि प्रशंसा करते हैं।

भारत का यह सौभाग्य रहा है कि संकटकाल में इसके हारे हुये मन को प्रोत्साहन देने एवं प्रेरणा करने के निमित्त अनेक संतजनों एवं महापुरुषों ने जन्म लेकर हमारा भारी उपकार किया है। हमारा देश सैकड़ों वर्ष गुलाम रह कर भी अपनी भाषा संस्कृति तथा भेषादि की जो रक्षा कर सका, इसका कारण केवल इन महान पुरुषों की तपश्चर्य्या ही तो है। इसलिये हमारा कर्तव्य है कि हम इन दिव्य विभूतियों एवं महान पुरुषों

का अभिवादन करें, जिन्होंने जगत उद्धारार्थ अनेक चेष्टाओं द्वारा इस भूतल पर हमारी रक्षा करते हुये सुख, शान्ति एवं प्रेम भक्ति का साम्राज्य स्थापित किया।

हिन्दू धर्म पर अनेक आक्रमण हो चुकने पर भी अपनी दृढ़ता के कारण हमारा भारत अभी तक अचल रूप से संसार में वर्तमान है, और अनन्त काल पर्यन्त ऐसे ही वर्तमान रहेगा। कारण कि हिन्दुओं के समस्त कार्य भगवताराधना एवं उपासना से भली भाँति ओत-प्रोत रहते हैं। भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज के अवतार को लाखों वर्ष गुजर चुके हैं। इस भारत भूमि में कई प्रकार की मतमतान्तर रूपी वायु के चलने पर भी अभी तक हमारा सनातनधर्म रूपी दीपक जगमगा रहा है और ऐसे ही जगमगाता रहेगा। क्योंकि जिनके एकमात्र भगवान रक्षक हों तब उनका अनिष्ट कब सम्भव हो सकता है।

"जब जानकी नाथ सहाय करैं, तब कौन बिगाड़ करै नर तेरो।"

सामयिक कारणों द्वारा उत्पन्न अधर्म वेग जब जोरों से टक्कर लेने लगता है और अनेक सुदृढ़ धर्मस्तम्भों की नींव समूल हिलने लगती है, उस समय अपनी प्रिय रक्षित वस्तु की रक्षा के निमित्त स्वयं श्री सर्वेश्वर को चिन्ता होती है। इस कर्मभूमि पर या तो उन्हें स्वयं अवतार लेना पड़ता है अथवा चिर सेवक नित्य पार्षदों में से किसी को धर्मकार्य पूर्ति-अर्थ, इस मृत्युलोक में प्रकट होने के लिये आज्ञा देनी ही पड़ती है। तब भगवत् प्रेरणा से भगवान के परिकर आचार्य का अवतार धारण कर उस दिव्य धाम का दिग्दर्शन मात्र कराने अवश्य आते हैं, और उस दिव्यधाम का उनके स्वामी सहित पूरा-पूरा पता भी बता जाते हैं। फिर भी अभागे मनुष्य जब सचेत नहीं होते तब विवश हो कर स्वयं आचार्य रूप में, स्वस्वरूप में, उपदेशक रूप में, श्री लीला

स्वरूप में, अथवा कोई पूर्णावतार धारण कर किसी भी उपयोगी रूप में भगवान को अवतरित होना पड़ता है। अवतार लेने के पश्चात् इस लीलाभूमि में अपने अनन्त ऐश्वर्य की झाँकी द्वारा अपने भक्तों के भाव दृढ़ करते हुए अपने स्वभाववश दुष्टों का संहार तथा भक्तों की रक्षा भी करनी पड़ती है। इस प्रकार आर्तहरण, अशरण-शरण, दीनबन्धु अपनी भक्तवत्सलता का पूर्ण परिचय देते हुये समयोचित नाना प्रकार के रूप धारण कर भूमि-भार-निवारणार्थ इस पृथ्वीतल पर अवतीर्ण होते हुये अपनी दिव्यशक्ति का आधार लेकर लीला का प्रारम्भ किया करते हैं। प्रभु की यह यात्रा केवल जन उद्धार के ही निमित्त हुआ करती है। श्री भगवान् का वचन है।

"घटने लगता है धर्म और बढ़ने लगते हैं यहाँ पाप जभी,
अवतार रूप में हे अर्जुन आ जाते हैं हम यहीं तभी"।
"करके उद्धार साधुओं का हम दुष्टों का बध करते हैं,
युग-युग में धर्म बचाने को अवतार लिया हम करते हैं।।"

संसारी लोगों का दुःख मिटाकर भूले भटके जीवों को मार्ग दिखाना जो अवतार का मुख्य ध्येय है, उसी के अनुसार अपने भक्तों का उद्धार करते हुये धर्म की स्थापना करके भगवान दुष्टों का दलन भी करते हैं। भगवान की शक्ति की महिमा अनन्त है जिसकी कोई सीमा नहीं। इसलिये प्रभु सगुणस्वरूप धारण करके जो लीला करते हैं उससे समस्त पाप ताप छूट जाते हैं!

"लीला सगुण जो कहहिं बखानी, सोई स्वच्छता करइ मल हानी"।

अपने भक्तों के भाव (प्रेम) से प्रभावित होकर साक्षात् अनादि, अनन्त, सच्चिदानन्द आनन्दकन्द भगवान को उनकी अभिलाषा पूर्ण करने के निमित्त ही अनेक रूप से कलावतार,

अंशावतार, आवेशावतार आदि विविध भेदों से अवतीर्ण होना पड़ता है। भक्तजन अपने अतुलनीय प्रेम द्वारा निगु ण प्रभु को सगुण, अलौकिक को लौकिक, एवं अगोचर को दृष्टिगोचर बना ही लेते हैं। नटवर की कलाबाजी और लीलाधारी की लीला ही तो ठहरी, जो भगत के आधीन होकर स्वयं अजन्मा होने पर भी जन्म लेते व पुरुषोत्तम होकर भी साधारण लोगों की तरह कार्य करते हुये दिखाई देते हैं।

भगवान के भिन्न-भिन्न अवतार, कोई तो धर्म की रक्षा के लिये, कोई दैत्यों के विनाशार्थ, कोई वरदान को सत्य करने के निमित्त, कोई भक्तों को सुख देने को, और कोई श्राप को सत्य करने के लिए बतलाते हैं। किन्तु कुछ लोगों का कथन है कि यह सब कार्य तो प्रभु अपने संकल्प मात्र से ही बिना अवतार लिये भी कर सकते हैं। देखिये सज्जनो! धर्मरक्षण एवं अधर्मियों का नाश करना यह तो गौण कार्य हैं। वास्तव में प्रभु के अवतार का मुख्य प्रयोजन है लीला इत्यादि। अर्थात् प्रेमवश इस धरा धाम पर प्रगट हो, भाँति-भाँति की क्रीड़ा एवं कानों को सुख देने वाली और हृदय में अमृतरस का संचार करने वाली सुखमय लीलायें कर करके भक्तों को सुख देना। भगवान के लीला चरित्रों में रस ही रस भरा है, बार-बार सुनने पर भी तृप्ति नहीं होती, जितनी बार सुनो उतनी तृष्णा बढ़ती ही जाती है (जैसे कि तृषा रोग में जितना भी पानी पियो उतनी ही प्यास बढ़ती जाती है)। इसलिये जो उन चरित्रों को पढ़ते सुनते और अनुमोदन समर्थन करते हैं, वह सदा के लिये इस संसार सागर से पार होकर प्रभु के परमधाम को प्राप्त होते हैं। भगवान के अतिरिक्त यह कार्य (लीला) कोई दूसरा नहीं कर सकता, इसलिये भगवान को स्वयं मानवीय तन में इस अवनीतल पर प्रकट होना पड़ता है।

बड़े-बड़े ऋषि महर्षि भी घोर तप करके जिन सच्चिदानन्द, आनन्दकन्द प्रभु से मुक्ति की याचना करते हैं वही प्रभु ऐसे दयालु और कृपालु हैं कि अपने ऐश्वर्य को छिपाकर भक्त-वत्सलता के पीछे अपने महत्व को भी एकदम भुला देते हैं। भक्ति से प्रसन्न हो प्रेम के वशीभूत होने के कारण स्नेहवश भगवान पाण्डवों के सेवक, पहरेदार, मन्त्री, दूत, सारथी इत्यादि सब कुछ बने। किंतु यह सब करने पर भी उनके महत्व में कोई अन्तर नहीं आया। वह तो आकाश की भाँति उसी प्रकार निर्लेप, निर्मल बने रहे। यही तो भगवान की अद्भुत क्रीड़ा है। भगवान के अवतार का मूल कारण एक मात्र अपने भक्तों एवं अपने सेवकों को सुखी करने, उन्हें संसारी अविद्या, कामना और कर्मबन्धन से बचाने के निमित्त ही आपकी यह लीला है। आपके चारुचरित्र कर्म नहीं हैं, बल्कि कर्मों को काटने की छेनी हैं, और आपकी मधुर ललित लीलायें लोगों के अशुभों को दूर करके संसार के आवागमन को भी छुड़ाने वाली हैं।

मूर्ति पूजा

देखिये ! रावण जो चारों वेद और छहों शास्त्रों का प्रकाण्ड पंडित था, वह भी निरन्तर शिवलिङ्ग की पूजा किया करता था, उसका उनमें इतना प्रेम था कि वह एक क्षण भर के लिये भी अपने से पृथक न करता था। तभी तो वह इतना बलवान, धन-वान एवं कीर्तिवान हो गया था। भगवान श्री रामचन्द्र महाराज को भी रावण पर विजय प्राप्त करनी थी, इसलिये श्री शिवजी को प्रसन्न करने के निमित्त युद्ध के समय भगवान को भी श्री रामेश्वर जी में श्री शिव जी की स्थापना करनी पड़ी। भगवान श्री रामचन्द्रजी महाराज का जीवन एक आदर्श जीवन है। भगवान ने मूर्ति पूजा करने के बहाने से मानो प्रजा को शिक्षा दी कि जिससे हर एक मनुष्य श्रद्धापूर्वक भगवान की पूजा करके संसार में सुख एवं परलोक में सद्गति प्राप्त कर सके।

❋ निन्दक महाशय के दो प्रश्न ❋

"ओह समय तेरा प्रभाव बलवान है, ऐ काल चक्र तू भी प्रधान है।"

आज हमारा देश जोरों से नास्तिकवाद की ओर जा रहा है। हम मनमुखी बन कर अपने कर्तव्य को भूल रहे हैं। परमाचार्य्यों के आदर्श अपने सामने न रखने के कारण ही हमारा पतन हो रहा है, तभी तो प्रतिदिन अनेकों भारतवासी अपनी सनातन प्रथा को ठुकरा कर धर्मशास्त्रों की आज्ञा का भी उल्लंघन करने पर उतारू हो रहे हैं। यहाँ तक कि जिन श्रीरामकृष्ण लीला स्वरूपों के द्वारा भगवत्भक्तों को श्री नाम, रूप, लीला, धाम की साधना का पूरा-पूरा अवलम्ब प्राप्त होता था, ये लोग तो उन लीलास्वरूपों के भी कट्टर विरोधी बनने लगे। ठीक है—कलिराज अब इतना भी न करेंगे तो और करेंगे ही क्या? हा! इसी का नाम है कलियुग, कि जिसके समय में अमृत तो विषवत् एवं विष अमृत तुल्य प्रतीत होने लगे। आज के जगत में सन्त महात्माओं की ओर लोगों की कुछ क्रूर दृष्टि हो गई है, मगर वे नहीं जानते कि केवल एक भगवान को छोड़ कर संसार के प्राणीमात्र गुण-अवगुण के दोषी हैं, तब अपने अँधेरे को न देख कर दूसरे के अँधेरे का प्रदर्शन रचना यह कहाँ की सत्यवादिता एवं बुद्धिमत्ता है? दुनिया के चक्कर में पड़ा हुआ कोई भी व्यक्ति क्यों न हो, निर्दोष नहीं रह सकता। इसलिये अपने दोषों को छिपा कर दूसरे के दोषों को प्रकट करने की चर्चा करना यह किसी भले मनुष्य को उचित नहीं है। धन व जवानी की मस्ती (हुकूमत) का घमण्ड अपने आपको मानव संसार का अन्नदाता समझने वाले, ब्राह्मण और साधु-सन्तों के लिये यह

"ते जड़ जीव निजातम घाती, जिन्हहिं न रघुपति कथा सुहाती।"
बड़े आश्चर्य का विषय है कि जब मारीच एक राक्षस होते हुये भी श्री भगवान रामचन्द्र जी महाराज को महावन के वृक्ष-वृक्ष में देखता है तो हमारी समझ में नहीं आता कि मनुष्य शरीर पाकर भी लोग इस दिव्य तत्व से क्यों वंचित हैं ? मेरा तो यह अनुमान है कि इस लीला के रहस्य, आनन्द एवं सुख को तो कोई विरले ही भाग्य-भाजन, श्रद्धालु, भगवान के प्रेमी दास ही प्राप्त कर सकते हैं, भोगों के दास लीलास्वरूपों की क़दर को क्या जानें ? विषयी एवं प्रेमी में कौड़ी मोहर का अन्तर होता है। मेंढक रूपी प्रेमाधिकारी तो इस संसार में बहुत मिलेंगे परन्तु मछली के सदृश प्रेमी कोई-कोई मिलेगा। कामान्ध लोग लीला स्वरूपों के अनुपम रहस्य एवं साकार उपासना के भेदों को नहीं जान सकते। इस प्रेम रहस्य का अधिकारी तो वही हो सकता है, जिसके नेत्रों में पीड़ा होगी। प्रेम की कसक एवं उसकी टीस बड़ी मीठी होती है। प्रेमी के दर्द का मर्म भी तो कोई कसकीले हृदय वाला ही जान सकता है, हर एक नहीं। जिसके हृदय में प्रेमदेव की कृपा नहीं, वह प्रेम की महिमा को भला क्या समझे :—

"चाहनहारे सुख सम्पति के जग में मिलत घनेरे,
कोउ-कोउ मिलत कहीं प्रेमीजन नगर-नगर सब हेरे।"

विषयासक्ति एवं भगवत्प्राप्ति यह दोनों एक साथ नहीं रह सकते। इनका इकट्ठा रहना असम्भव है।

"जहाँ काम तहाँ राम नहिं, जहाँ राम नहिं काम।"
"तुलसी कबहूँ कि रह सकें, रवि-रजनी इक ठाम।"

जिसके हृदय में उस रसराज के रससुधामय एक बिन्दु का भी प्रवेश नहीं हुआ, वह भला प्रेमरस के मर्म को क्या समझ सकता है ?

"भगवत रसिक-रसिक की बातें-रसिक बिना कोउ समझ सके ना ।"

"विरोधी एवं निन्दकजनों का यह दुराग्रह करना कि केवल निराकार भगवान की साधना ही सत्य एवं श्रेयस्कर है, शेष सब मार्ग एवं साकार साधनायें असत्य हैं, केवल ढोंग मात्र है, इससे कुछ लाभ नहीं"। यह उनकी भारी भूल और सरासर जबरदस्ती है, सत्य का गला घोंटना है,किसी की सच्ची श्रद्धा एवं दृढ़ भावना को ठुकराना, कुचलना और सीधे मार्ग में रोड़े अटकाना है। किसी के धर्म पर जबरन आघात करना उचित नहीं है। सभी धर्ममार्ग अपने अपने स्थान पर सत्य हैं। ईश्वर प्राप्ति के जुदे-जुदे मार्ग हैं। परमात्मा से मिलने के लिए अनेक साधन, अनेक उपाय तथा अनेक मार्ग हैं। इसलिए जो भी जिस किसी को प्रिय व सुलभ प्रतीत हों उसके लिए तो वही हितकर एवं श्रेयस्कर हो सकता है। देखिये ! निर्गुण उपासक की साधना अत्यन्त कष्टदायिनी होती है, जबकि उसकी अपेक्षा साकार उपासना अत्यन्त सुलभ,सरल एवं रसमयी है। श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में भगवान का मुख्य वाक्य है, कि समस्त देहधारी (मुझ में चित्त लगाने वाले) प्रेमीजनों का मैं इस मृत्युलोक संसार से शीघ्र ही उद्धार करता हूँ।

"जब तक है मन में अभिमान, तब तक होता मुश्किल ज्ञान ।"
"जिनका है निर्गुण में प्रेम, उनका दुर्घट साधन नेम ।"
"मन टिकने को नहीं आधार, इससे साधन कठिन अपार।
सगुण ब्रह्म का सुगम उपाय, भवसागर पार तुरत हो जाय ।"
'यह है सबसे उत्तम ज्ञान, इससे अर्जुन कर मेरा ध्यान ।"
फिर होवेगा मोहि समान, यह कहना मेरा सच्चा जान"।

लगन की आग का धुआँ कौन देख सकता है ? इसे या तो वह देखता है जिसके अन्दर वह जल रही हो या फिर वह

देखता है जिसने आग सुलगाई हो। अनुराग का बन्धन बहुत कठिन होता है। ज्ञानमद की धूल जब प्रेम के आँसुओं से धुल जाती है तब मालूम पड़ता है कि निर्गुण सगुण क्या हैं। एवं ज्ञान व प्रेम में क्या अन्तर है।

❀ लीला मंडलियाँ ❀

सज्जनो! कलियुग के प्रभाव से अयोग्य एवं अपात्र लोगों के हाथों में पड़ने के कारण कुछ लीला मंडलियों की शोचनीय दशा हो रही है। बड़े दुख का विषय है कि उन लीला कर्ताओं में प्रेमभाव का अभाव होकर धर्मभाव का भी लोप होता जा रहा है। व्यवसाय ही प्रधान रह गया है। उन्हें लोक परलोक का भय भी नहीं रहा। यद्यपि वह इसको भी भलीभाँति समझते हैं कि हम मर्यादा से गिर रहे हैं, परन्तु अर्थलाभ के लोभ में पड़ कर इस प्रकार अज्ञानी एवं अन्धे हो गये हैं कि सब कुछ समझते हुए भी समझना और देखते हुए देखना भी नहीं चाहते। इसका मूल कारण यह है कि वह अपने आदर्श से पतित हो गये हैं।

भगवत्भक्तों का कर्तव्य तो भगवान श्री रामचन्द्र जी महाराज एवं श्री कृष्ण भगवान को येन केन प्रकारेण रिझाना, लाड़ लड़ाना एवं खुश करना ही है। परन्तु लीला कर्ता धन के लालच में पड़ने से इस राह को भूल कर दुनियाँदारी के रिझाने एवं प्रसन्न करने में ही लिप्त हो गये है। इसलिए हमें तो ऐसी नाटकी, नौटंकी एवं स्वाँग खेलने वाली मंडलियों से प्रयोजन ही क्या है, जहाँ न तो कोई धर्म कर्म या भावभक्ति ही है, और न ही लीला स्वरूपों के खानपान, जात-पाँत एवं उसके सदाचार का ठिकाना? ठीक भी है। जो लोग केवल स्वार्थी एवं टके के गुलाम

बनकर बिना बुलाये द्वार-द्वार घूमने-फिरने वाले हैं उन्हें इन बातों से मतलब ही क्या ? और ऐसे उन स्वरूपों में भाव, भक्ति, प्रेम, आवेश, चमत्कार भी कहाँ ? इधर हमारा भी ऐसी मंडली वालों से सम्बन्ध ही क्या ? उन मंडलियों की लीला में एवं प्रेमी जनों के हृदय के अन्दर छिपी हुई लीला में तो जमीन आसमान का अन्तर है।

मैं तो यहाँ केवल उन भगवद्भक्तों के करने योग्य ही लीलाओं का वर्णन करूँगा जो कि परोपकार दृष्टि से दूसरों को तो परमानन्द एवं सुख प्रदान करते ही हैं, परन्तु स्वयं भी भगवत् प्रेम में निरन्तर मग्न होकर छके रहते हैं। इस प्रकार की कुछ भावुक मंडलियाँ श्री अयोध्या जी, श्री मिथिला जी, श्री वृन्दावन या श्री काशी जी (रामनगर) में ही देखने को मिल सकती हैं। और इन्हीं में से कोई-कोई चमत्कारी लीलास्वरूपों के शुभ दर्शन भी भावुक भक्तों को मिल सकते हैं।

(४) ❀ भावना का अटल सिद्धान्त ❀

भावना का खेल नितान्त मधुर है। भावना भक्ति है तो भाव प्रेम है। इसलिये जो प्रेमी नहीं, वह भक्त नहीं हो सकता, और जो भक्त नहीं वह प्रेमी नहीं हो सकता। आवश्यकता है निरन्तर भावना का शृंगार करके भाव में प्रवेश करने की। इसमें प्रवेश करते ही जीव चिन्मयता का अनुभव करने लगता है। प्रेम और भक्ति में कोई अन्तर नहीं, (प्रेम बिना भक्ति नहीं और भक्ति बिना नहिं प्रेम)। सच्चे प्रेम एवं भाव भक्ति के बिना मानव हृदय हृदय ही नहीं है बल्कि बज्रवत् कठोर पाषाण है। जिसके

हृदय में प्रेम है, वही जीता-जागता इन्सान है। जिसके हृदय में प्रेम नहीं वही मृतक समान है।"

भावना के विषय में ऋषि-मुनियों का अटल सिद्धांत यह भी है, कि सुन्दर काम करने वाले के विचार यदि अपवित्र हैं तब तो एक दिन वह जरूर पापों की ओर झुकेगा, और यदि पाप करने वाले के विचार पवित्र हुये तो वह भी शीघ्र सज्जनों जैसे आचरण करने लगेगा। इसलिये हमारे धर्मशास्त्रों ने किसी भी कर्म को भला या बुरा न मान कर भावना के ही दर्जे को सबसे श्रेष्ठ मानते हुये भावना की ही प्रधानता रक्खी है। भगवान को जो कोई जिस भावना से भजते हैं उन्हें उसी भावना के अनुसार ही दर्शन भी होते हैं!

यह जीव किसी प्रकार से जब किसी भावना की ओर चलता है तो भगवान भी उसकी ओर चलते हैं। यदि जीव एक पग बढ़े तो भगवान निन्नानवे पग आगे बढ़ कर उसके समीप आ जाते हैं। देखिये! कथा तो सभी सुनते हैं किन्तु उसमें भावना और विश्वास होते ही सिद्धि मिलती है। मन्त्र में, अनुष्ठान, औषधि में, शुभ कर्मों में भावना को ही प्रधान माना गया है। इसलिये अपने साधन पर जिसे पूर्ण विश्वास होगा वही तो दूसरों का भी कल्याण कर सकता है! जो स्वयं उसका आचरण नहीं करता, उसमें भावना और विश्वास नहीं रखता, दूसरों से उसे करने के लिये बाध्य करता है, तो उसके कहने का कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। परन्तु यह नियम है कि अनुभवी पुरुषों के वचनों का ही भारी प्रभाव पड़ा करता है।

कर्म ऊँचा भी हो, और भावना नीची हो तो वह कर्म नीच बन कर नर्कों में ले जाता है। जैसे कि यज्ञ, दान इत्यादि कर्म तो सब ऊँचे हैं, परन्तु उसके फलस्वरूप अगर किसी शत्रु के

Scanned by CamScanner

नाश करने-कराने की कामना पैदा हो गई तब तो उस उत्तम कर्म का फल भी तमोगुणी हो जाता है। इसलिये हमारी शुभ कामना ही हमें दुष्कर्म से छुड़ा कर ऊँचे चढ़ा सकती है। और अशुभ भावना नीचे की ओर घसीट लाने में देरी भी नहीं लगाती। तभी तो निष्काम कर्मयोग की इतनी भारी महिमा मानी गई है। परन्तु आजकल हमलोग किसी के मानसिक भावों की ओर न देख कर केवल उसके बाहरी रंग-ढंग को देखते ही भला-बुरा राग अलापना आरम्भ कर देते हैं, जो कि अनुचित है।

आज भी ऐसे महान पुरुष एवं लीलास्वरूप पड़े हैं, कि जिनके जीवन को देखकर उनके हृदय के भावों का पता लगाना कठिन ही नहीं बल्कि टेढ़ी खीर है। उनकी देख-रेख एवं जाँच-पड़ताल में जब कि बड़े-बड़े तत्ववेत्ता भी चक्कर में पड़ जाते हैं, तब साधारण लोगों की कौन कहे ?

इस भारतवर्ष में इसी घोर कलियुग के दौर में इस समय भी सच्चे साधु एवं ईश्वर प्राप्त महान पुरुषों का अभाव नहीं है। अनेकों सिद्ध महान पुरुष गुप्त प्रकट रूप से संसार में विचरते हुये भगवान के साकार स्वरूप का आनन्द ले रहे हैं ! अर्थात् ऐसे सिद्धों की भी कमी नहीं है, जो कि भगवान का साक्षात्कार कर चुके हों। जब कि अनेकों पाखण्डी और धूर्तलोग भी इसी साधु वेष में छिपे-छिपे अपनी आयु के दिन व्यतीत कर रहे हैं। इसी प्रकार यद्यपि भावुक लीला मंडलियों में चमत्कारी लीलास्वरूपों का मिलना असम्भव नहीं तो कठिन जरूर है। परन्तु श्रद्धापूर्वक खोज से मिलना कठिन भी नहीं है। यदि आपकी अभिलाषा तीव्र है, लगन सच्ची है तो सच्चे सन्त एवं चमत्कारी लीलास्वरूप आपको घर बैठे ही मिलेंगे। अधिक क्या कहूँ स्वयं भगवान को सन्त और लीलास्वरूप बन कर आप को दर्शन देने के निमित्त संसार में आना पड़ेगा। कारण कि

भगवान तो पुरुष के विश्वास में ही विराजमान हैं। आत्मविश्वास सफलता की कुञ्जी, विजय का मूलमन्त्र एवं परमात्मा को खींचने वाला चुम्बक है।

"सिद्क लौर यक़ीन के बिन दिलवर मिले कहाँ,
गो जंगलों में क्यों सिर को पटक रहा।"

बिना विश्वास और श्रद्धा के कोई भी काम पूरा हो नहीं सकता। महान पुरुषों ने जो कुछ भी प्राप्त किया है, जो कुछ भी कर दिखाया है वह केवल उनके अपूर्व विश्वास का ही तो फल है। विश्वासी पुरुष तो बड़े भारी पर्वत को भी अपनी जगह से हिला सकता है। प्रार्थना एवं आर्तनाद द्वारा साकेत-पुरी में विराजमान भगवान उसके प्रेमपाश में बँध कर तुरन्त खिंचे-खिंचे आ सकते हैं। भगवान भक्त के वश में होने के कारण कभी इसकी अवहेलना नहीं करते। कारण कि दीन-हीन भक्त की सच्ची पुकार सप्तलोकों का भेदन करती हुई भगवान के कर्ण कन्दरों में तुरन्त पहुँच जाती है। इसलिये साधक के गद्गद् होकर पुकारने पर प्रभु कभी विलम्ब नहीं करते, और नंगे ही पाँवों दौड़े-दौड़े चले आते हैं। सज्जनो। इसमें आवश्यकता है सच्ची लगन की, सच्ची व्याकुलता एवं सच्ची तड़प की। मन को कचाई दूर किये बिना भगवत्प्राप्ति असम्भव है।

"बिनु विश्वास भक्ति नहिं, तेहि बिनु द्रवहिं न राम,
रामकृपा बिनु सपनेहु, जीव न लह विश्राम।"

कई विचारों के वशीभूत आज मेरी अभिलाषा जाग्रत हुई है। सज्जनो ! सुनिये, यों तो सैकड़ों भावुक लीलास्वरूपों के अनुपम चमत्कारी सिद्धियों तथा भविष्यवाणियों को अनेकों प्रेमी जन देख-सुन चुके होंगे। परन्तु मैं इस समय विहौतीभवन श्री अयोध्या जी के एक अनुपम चमत्कारी ब्राह्मण बालक श्री

मणीराम जी तिवारी (लीलास्वरूप) की जीवनी को लिखकर विरोधी जनता को यह दिखाना चाहता हूँ कि जिस प्रकार पृथ्वी शूरवीरों, दानवीरों, एवं धर्मवीरों से कभी खाली नहीं रही, इसी प्रकार चमत्कारी एवं प्रभावशाली लीलास्वरूपों, एवं महापुरुषों से भी यह भारतभूमि न तो कभी खाली रही है और न ही कभी खाली रहेगी। समय-समय पर प्रत्येक भावुक लीलास्वरूपों में आवेश आया ही करता है। किसी में कुछ कम किसी में अधिक। इसका अनुभव भी किसी बड़भागी और भगवत कृपापात्र को ही हुआ करता है, सबको नहीं। कर्महीन लोग तो इस आनन्द और सुख से सदैव वंचित ही रहा करते हैं, और रहेंगे भी। कारण कि

"सकल पदारथ हैं जगमाहीं, कर्महीन नर पावत नाहीं।"

और कलिमल ग्रसित कर्महीन अभागे जीवों का इतना सुन्दर भाग्य ही कहाँ कि उस प्यारे का दर्शन कर पायें। पास में रहने वाले भी जब कि माया के परदे में छिपे उस लीलाधर प्रभु की ओर देखना तक भूल जाते हैं, तब दूसरों का तो कहना ही क्या ?

भगवतभक्तों के जीवन चरित्रों को पढ़ने-सुनने से भारी आनन्द सुख और शान्ति की प्राप्ति होती है इनकी कथायें तो संसार ताप से सन्तप्त जीवों को जीवनदान देने वाली होती हैं। यह तो मार्ग ही अलौकिक है। इसे वही पा सकते हैं, जिनको भक्तिसागर में गोते लगाने का पूरा-पूरा शौक हो, उत्कट अभिलाषा एवं प्रबल इच्छा हो ! जो दृढ़विश्वासी श्रद्धालु एवं लगन के सच्चे भावुक जिज्ञासु होते हैं, वह अनुभवी महान पुरुषों की वाणी का परम उज्ज्वल प्रकाश पाकर इस भवसागर को अनायास ही पार करते हुये भगवान के समीप पहुँच जाते

हैं। श्रद्धा और विश्वास मनुष्य के भीतरी नेत्रों को खोल देते हैं, जब कि श्रद्धा विश्वास रहित मनुष्य परमार्थ के मार्ग पर सदा अन्धों की तरह राह ही टटोला करते हैं।

सज्जनो ! मेरे जैसे साधारण व्यक्ति का ऐसे अनुपम लीला-स्वरूप बालक (श्री सिद्धकिशोरी जी) की जीवनी लिखने का साहस करना यह उपहास नहीं तो और क्या है ? परन्तु लेखनी लिखने के लिए हठ पर तुली है, मानती नहीं है। "इसलिए छमहहिं सज्जन मोरि ढिठाई।" दुरजन तो हँसेंगे ही, किन्तु इससे क्या ? मुझे प्रसङ्गवश लिखने का अवसर प्राप्त होने के कारण स्वयं कृतकृत्य होने एवं अपनी वाणी को भी पवित्र करने के निमित्त उनके चरित्रों का कुछ संक्षेप में ही दिग्-दर्शन मात्र कराना आवश्यक प्रतीत हुआ है। "भला सागर को गागर में कैसे भरा जा सकता है" यदि मैं उनके सात वर्ष की स्वरूपाई के समस्त चरित्रों को लिखने बैठूँ तो उसे लिखता ही रह जाऊँ ! सुनिये मुझे बचपन से लेकर आज तक (इस समय मेरी आयु लगभग ७४ वर्ष की है) श्री लीलाविहारी स्वरूपों के सम्पर्क एवं सेवा में अधिकतर रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। उनमें से कई स्वरूपों के अलौकिक चमत्कारी चरित्रों का अनुभव मुझे कई बार हुआ है, किसी में कुछ कम तो किसी में कुछ अधिक। किन्तु सब से अधिक अनुभव तो श्री सिद्धकिशोरी जी के ही चरित्रों में हुआ है। इस विषय में मेरा पूरा अनुभव है, इसलिए लीलास्वरूपों के विरोधीजनों के सम्मुख इसी कलियुग में तथा इसी भारतभूमि में ही अनेकों ऐसे प्रेमी भक्तों के शुभ नाम गिनाने को तैयार हूँ कि जिनको प्रायः लीलाविहारी स्वरूपों में ही लीलाधारी भगवान के शुभदर्शनों का कई बार अलभ्य लाभ प्राप्त हुआ है तथा उन्हीं के दर्शनों एवं चरित्रों द्वारा ही कृतार्थ हो-कर पूर्ण मनोरथ हुये हैं। आज दिन भी ऐसे-ऐसे

लीलाविहारी स्वरूपों के चमत्कार कई जगह नजर आते सुने गये हैं, क्यों न हो। भावग्राही भगवान तो भक्त की दृढ़ भावना अनुकूल ही उसको फल देते हैं। इस लीलाविहारी सरकार को वश करने के लिए केवल सच्चे प्रेम और दृढ़ भक्ति की ही आवश्यकता है, धन की नहीं। वैभव या धन के वशमें वे कदापि नहीं हो सकते, और अन्तर्यामी होने के कारण उनके सामने किसी का छल, कपट, दम्भ भी नहीं चल सकता।

यदि ऐसा न होता तो लाखों करोड़ों मनुष्य इन लीलाविहारी श्री राम या श्री कृष्ण भगवान की साधना में अहर्निश लगे न रहते, थक थका कर बैठ ही जाते तथा उनके लिए लालायित रहने वालों का नामोनिशान तक मिट जाता। परन्तु ऐसा तो है नहीं। श्री राम, कृष्ण लीलामंडलियों, रहस्य मंडलियों, भक्त मंडलियों, झाँकी एवं कीर्तन मंडलियों की तथा इसके साथ-साथ इनके प्रेमी भक्तजनों, सेवकों एवं दर्शकों की भी भारत में इस समय कोई कमी नहीं है,किन्तु पहले से तो प्रतिदिन अधिकता ही देखी जाती हैं।

जिनको विश्वास न हो वह श्री अयोध्या धाम, श्री मिथिला धाम, श्री सीतामढ़ी, श्री रामनगर (काशी), श्री चित्रकूट कर्वी स्थान, श्री मथुरा, वृन्दाबन, बर्साना आदि धामों में जाकर श्रीराम व कृष्ण लीला मंडलिओं की अनेकों अद्भुत लीलाओं के सुखों का अनुभव कर सकते हैं।

❀ जन्मभूमि, बाल्यकाल एवं नामकरण ❀

प्रेमी सज्जनो ! आप लोगों को उकताने और घबड़ाने की आवश्यकता नहीं ! आप अपने मन-मन्दिर को पवित्र बना लें, और जरा सावधान होकर सुनें। मैं आप सबको एक बिल्कुल सच्चा वृतान्त जिसे २० वर्ष हुये सुनाता हूँ। यह न कोई किस्सा है न गप्प, और न ही उपन्यास। यह तो एक ऐसे सुपात्र कुलीन ब्राह्मण बालक (श्री लीलास्वरूप) की चमत्कारी जीवन झाँकी है, जिनके अनेकों अनुपम चमत्कारी सिद्धियाँ और भविष्य-वाणी तक कई लोगों को दृष्टिगोचर हुई हैं, इन चरित्रों की सत्यता सिद्ध करने-कराने वाले अभी सैकड़ों मनुष्य वर्तमान हैं, जिनको उन लीलास्वरूप की सेवा, दर्शन तथा कृपा का लाभ भी प्राप्त हुआ है।

जिला छपरा के अन्तर्गत माणीपुर ग्राम है। उस ग्राम में एक बड़भागी भगवत्भक्त पं० सिंघेश्वर तिवारी जी निवास करते थे जो कि धन-धाम से सम्पन्न थे। आप की धर्मनिष्ठा अत्यन्त प्रशंसनीय थी। जिस प्रकार धर्म को आप अपना सर्वस्व समझते थे, उसी प्रकार उनकी धर्मपरायणता पत्नी श्रीमती श्री युगल-सहचरी जी भी समझती हैं। आप दोनों के दीक्षागुरु साधुभूषण पूज्य पुजारी श्री रामशंकरशरण जी महाराज हैं। सब से श्रेष्ठ बात तो यह है कि आप दोनों भगवान के प्रिय अनन्य भक्त, साथ ही साथ कट्टर गुरुभक्त भी रहे। यही कारण है कि इन्होंने ऐसे अनुपम रूपराशि पुत्ररत्न को प्राप्त कर भारत के इतिहास में अमरता प्राप्त करते हुये समस्त लीला मंडलियों को भी गौरव प्रदान किया। आप दोनों की निरन्तर

यही हार्दिक अभिलाषा रही कि हमारा पुत्र प्रभु का प्यारा दुलारा भक्त बने। इसलिये प्रभु कृपा आगे चलकर इनकी मनोकामना पूर्णरूप से सफल हुई। जिस किसी का परम सौभाग्य होता है, वही ऐसे सुपुत्र की प्राप्ति भी कर सकता है।

भगवान कभी भी किसी चीज का बीज नाश नहीं होने देते। बीज नाश हो जाय तब तो समस्त क्रीड़ा ही समाप्त हो जाय। परन्तु क्रीड़ाप्रिय भगवान ऐसा चाहते नहीं। वह तो नित्य नवीन क्रीड़ा एवं लीला करने के आदी हैं। देखिये! किसान यद्यपि अपने खेत को काट लेता है, खेत में दाना भी नहीं छोड़ता, परन्तु घर में छिपा कर कुछ बीज आगे के लिये अवश्य रख छोड़ता है, ताकि समय पर यही बीज फिर वृक्ष होकर फलने-फूलने लगे। इसी प्रकार भगवान ने भी लीला मंडलियों के गौरव अर्थ "श्री सिद्धकिशोरी रूपी" बीज को सुरक्षित रख छोड़ा था, जो कि भगवान की असीम अनुकम्पा द्वारा ही वैशाख शुक्लपक्ष नवमी सम्वत् १६८० को पंडित सिधेश्वर तिवारी जी के घर में फल फूल कर पुत्र रत्न रूप में प्रकट हुआ था। इनके शुभ जन्म की चर्चा थोड़ी ही देर में आसपास के ग्रामों तक फैल गई। सगे सम्बन्धी सब एकत्रित होने लगे। घर में अनेक प्रकार की मंगल बधाइयाँ होने लगीं। खूब गाजे बाजे बजने लगे। इनके माता-पिता ने अपनी शक्ति से अधिक उत्साह दिखलाया! आगन्तुक ब्राह्मणों, अभ्यागतों एवं अनाथों को भी सुन्दर भोज और दान दक्षिणा से भलीभाँति सम्मानित किया। जिस किसी ने जो कुछ भी याचना की उन्होंने सब को दिया। उनकी ऐसी उदारता को देखकर सभी ब्राह्मण तथा याचक बहुत ही सन्तुष्ट हुये, और अन्तःकरण से नवजात शिशु की मंगलकामना करते हुये भाँति-भाँति के आशीर्वाद भी देने लगे।

तेजस्वी, अलौकिक, आभासम्पन्न दिव्य पुत्र के चिरंजीवी रहने के निमित्त इनके माता-पिता भी अहर्निश भगवान से प्रार्थना करने लगे। इनके मातापिता एवं परिवार के लोग शिशु के मुखमंडल को निहार-निहार कर आनन्द विभोर हो जाया करते थे। इन्हें अपने प्राणों से भी अधिक प्यार करते और बिछोह एक पल का भी नहीं सहन कर सकते थे। बाल अवस्था प्रभुदत्त एक अनूठा रत्न है। इस अवस्था के समान दूसरी कोई भी अवस्था नहीं होती, पुत्रों के ऊपर माता की तो स्वाभाविक ममता होती ही है, इसलिए माता के आनन्द का पता लगाना इस जड़ लेखनी का काम नहीं, यह तो कोई पुत्रवत्सला ही अनुभव कर सकती है। बालक अति सुन्दर होने के कारण सबको प्रिय लगते थे। इनको बाल्यकाल से ही खेल-कूद, लड़ाई-झगड़ा, रोना-धोना तनिक भी प्रिय न था। घर में ही रहकर अपने माता-पिता की गोदी में खेलते और उनको सुख देते थे। आपके बाल्यकाल के चरित्रों को विस्तार के भय से अधिक न लिख कर केवल इतना ही लिखा जाता है कि आप के बाल चरित्र भी अद्भुत एवं अपार थे। क्यों न हो? संस्कारी बालकों के बचपन भी तो निराले और अनोखे ही हुआ करते हैं। इसी प्रकार आपका लड़कपन मातापिता की देखरेख में बहुत ही आनन्द से व्यतीत होता रहा! बालक का जन्म पुष्य नक्षत्र में हुआ था। जिस किसी का जन्म जैसे नक्षत्र में होता है, जीवन भर उसे वैसी ही घटनाओं का सामना भी करना पड़ता है। जीव के शुभाशुभलक्षण जन्मते ही प्रतीत होने लगते हैं। छठी के दूध का प्रभाव प्रारम्भ से ही प्रकट होने लगता है। भला! नक्षत्र का फल कैसे अन्यथा हो सकता है?

जब बालक की अवस्था चार महीने की हुई तब शुभ मुहूर्त में इनका नाम संस्कार किया गया। विद्वानों ने भी ज्योतिष शास्त्र

के अनुसार इनका शुभनाम "श्री मणिराम जी" रक्खा ! जो कि अनुपम मणि ही निकले। अब माता-पिता के लाड़ प्यार में यह धीरे-धीरे बढ़ने लगे। इनका सलोना मुखमंडल मानो लोगों को अपनी ओर आकर्षित करने का एक जादू भी जानता था। जो कोई एक बार इन्हें देख लेता, बरबस मोहित हो जाता। आपके विशाल एवं रतनारे नेत्रों के साथ-साथ भोलापन तथा मन्द-मन्द मुस्कान भी ग़जब की थी। विचित्र गम्भीरता एवं तेज भी बचपन से ही मुखड़े पर चमकने लगा था। सुन्दर मुखारविन्द और रसीले-रँगीले नेत्रों के दर्शनमात्र से लोगों के दुःख-दर्द भाग जाते थे। इनकी मधुर एवं मन्द-मन्द मुस्कराहट सब के जी को चुराने का हुनर भी जानती थी। आपकी बुद्धि बड़ी ही तीक्ष्ण थी और आप बड़े साहसी एवं निडर भी थे। तेज व प्रभाव में भी कुछ कम न थे, तभी तो आपके सामने बोलने का किसी को साहस तक नहीं होता था।

•

बालकों की बाल्यलीला भी बड़ी ही विचित्र हुआ करती है तथा इनका प्रत्येक कार्य मनमोहक एवं आकर्षक होता है। जब कि साधारण बालकों का व्यवहार इतना मनोरम, सरस, सरल और भोला भाला होता है, तब तो ऐसे अलौकिक चमत्कारी बालकों का व्यवहार और भी विचित्र होना ही चाहिये ! आपके मधुर कोमल वचनों के साथ-साथ मधुर मनोहर हँसन तो पत्थर हृदय को भी पानी-पानी कर देती थी। वाणी क्या थी मानो सुधा से सनी हुई संजीवनी थी, हृदय को प्रेम से प्लावित करने वाली थी, जिसको सुनते ही प्रेमीजन मुग्ध हो जाते थे। न जाने इनमें कौन सी मोहनी शक्ति थी जिसके कारण साधारण लोग भी इनकी तरफ खिंच कर इनके अलौकिक आनन्द का अनुभव करते हुये कृतकृत्य होकर इन्हीं के प्रेमी बन जाते थे। इनकी

तिरछी चितवन तो ग़ज़ब की थी, जो सब को घायल कर देती थी। आप अपने माता-पिता के परम प्रिय लाड़ले पुत्र थे। आपका रूप लावण्य भी अद्वितीय था। तभी तो जो कोई देखता चकित रह जाता। इस प्रकार ललित बाल्य-जीवन का सुख अनुभव दिव्य दम्पत्ति कर ही रहे थे कि अचानक इनके दीक्षागुरु महाराज पुजारी श्रीरामशंकरशरण जी श्री अयोध्याजी से इनके शुभ सदन में पधारे। विधिपूर्वक आपका आगत स्वागत हुआ, उस समय बालक की आयु केवल ४ वर्ष की थी। बालक ने अपनी मोहनी झाँकी दिखाकर श्री पुजारी जी के मन को तो चुरा ही लिया। जब बालक की अवस्था छः वर्ष की हुई उस समय भी श्री पुजारी जी इनके ग्राम में पधारे। तब इनके माता-पिता एवं परिवार के कुछ लोगों की श्री अयोध्या जी के दर्शनार्थ प्रबल इच्छा जाग्रत हो आई। तो श्री पुजारी जी महाराज के साथ २ प्रस्थान भी कर डाला। श्री अयोध्या जी पहुँच श्री विहौती-भवन में ही निवास कर दर्शनों का आनन्द लेने लगे। बालक श्री मणिराम जी की छटा ऐसी अनोखी एवं मोहनी थी कि उनकी उपमा किसी दूसरे बालक से क्या हो सकती थी? तभी तो एक स्त्री ने इनका दर्शन करते ही प्रेमावेश में आकर कह डाला था कि न जाने इनकी माता ने बेटा क्या जना है एक जादू की पिटारी ही जनी है, और साथ ही साथ इनके मुख पर भी ऐसा कौन सा मसाला पोत दिया है कि जो भी इन्हें देख लेता है उसकी पागलों की सी दशा हो जाती है। इनके सौंदर्य माधुर्य की अनुपम सुन्दर छटा को निहार कर सजीव तो निर्जीव एवं निर्जीव सजीव बन जाते हैं। इनके गम्भीर, सुशील एवं सर्व-प्रिय संकोची स्वभाव से संत, महन्त एवं सभी प्रेमी लोग सन्तुष्ट रहते थे।

एक दिन श्री हनुमानबाग़ा में श्री विहौतीभवन समाज के

श्री युगल सरकार की झाँकी होनी थी और भोजन का निमन्त्रण भी था। प्रस्थान करते समय श्री मणिराम जी भी हठ पकड़कर मचलने लगे कि हम भी दर्शनार्थ श्री हनुमानबाग़ में चलेंगे। इनके कुछ चञ्चल स्वभाव के कारण श्री पुजारी जी को साथ ले जाने में संकोच था। अपने माता-पिता के समझाने पर भी जब यह बालक नहीं माने और अधिक मचल कर रोने भी लगे तब श्री पुजारी जी में यह शक्ति कहाँ थी कि इनकी इस प्रकार की तीव्र एवं उत्कट अभिलाषा को टाल सकें। इनको भी पीली धोती, पीला कुरता पहना, पीला साफ़ा भी बाँध कर संग में ले गये। यद्यपि बालक का स्वभाव चंचल था, परन्तु श्री हनुमानबाग़ में पहुँच कर बराबर तीन घण्टे तक शान्तिपूर्वक सरकारी झाँकी का अवलोकन करते रहे। आज के इस प्रकार के शान्त स्वभाव को देखकर इनके माता-पिता को भारी आश्चर्य हुआ। इधर श्री पुजारी जी भी इसका कारण सोचने लगे। तब इनको अनुभव हुआ कि श्री हनुमानबाग़ के सिद्ध हनुमान जी के प्रभाव से ही इस बालक का चंचल स्वभाव भी जाता रहा है। आप इतने मधुर भाषी थे कि जो सन्त एक बार भी आपकी मधुर वाणी को सुन लेता मुग्ध हो जाता। आपकी मन्द-मन्द मुस्कान में अनुपम मोहनी थी, ऐसा जादू और टोना भरा था जिसके कारण आपको उस दिन चारों तरफ से श्री हनुमानबाग़ के सन्तों ने भी घेर लिया। आपके सुन्दर भोलेभाले स्वरूप को निहारते हुये मन ही मन श्री सिद्ध हनुमान जी से प्रार्थना भी करने लगे कि यदि कहीं इस बालक को श्री जानकी जी का स्वरूप बनने की प्रेरणा कर दें तब तो मानो एक विलक्षण सुख और आनन्द की वर्षा होने लगे, कारण कि श्यामवर्ण श्री राम जी के साथ अगर यह गौरवर्ण बालक श्री जानकी जी का स्वरूप धारण

करने लगें तब तो इस श्याम गौर युगल जोड़ी की झाँकी अधिक सुन्दर एवं मोहनी प्रतीत होगी। श्री हनुमान जी महाराज ने सन्तों की इस प्रेम भरी प्रार्थना को सुना और खूब सुना। सज्जनो! आगे चल कर हुआ भी ऐसे ही। "होनहार बिरवान के होत चीकने पात।"

एक दिन श्री बिहौतीभवन में दर्शनार्थ आये हुये श्री काशी जी के एक उत्तम ज्योतिषी जी की दृष्टि इस बालक पर पड़ी। उन्होंने इनकी हस्तरेखा के साथ-साथ इनकी जन्मकुण्डली को भी देखा और कहने लगे कि इस बालक को कोई साधारण बालक न समझना। यह तो कोई अलौकिक चमत्कारी सिद्ध पुरुष होगा तथा भगवतभक्त होकर अपने कुल को भी उज्ज्वल करेगा।

❀ यज्ञोपवीत एवं भगवत शरणागति संस्कार ❀

अब बालक की अवस्था ७ वर्ष से कुछ अधिक हुई। इसमें गर्भाधान का समय मिला कर ८ वर्ष की आयु में इनका उपनयन संस्कार विधिपूर्वक अच्छे सन्त-महात्माओं के समक्ष श्री अयोध्या जी में ही सम्पन्न हुआ। उस समय बालक श्री मणिराम जी की हठ थी कि हमको यज्ञोपवीत के साथ-साथ तिलक, कंठी, गुरुमन्त्र भी दिया जावे। तब इनके माता-पिता परस्पर विचार करने लगे कि भगवत शरणागति भी आवश्यक है। कारण कि प्रभु शरणागति ग्रहण किये बिना संसार सागर से पार जाने की इच्छा करना केवल अज्ञानता ही है। प्रभु शरणागति भवसिन्धु से पार करने वाली एक दृढ़ नौका है, इसका आश्रय लेने से मनुष्य निर्भय हो जाते हैं। यद्यपि वैष्णवी श्री गुरुदीक्षा ग्रहण

करने के निमित्त किसी देश, काल, पात्र एवं नियम की आवश्य-कता नहीं है, जैसे कि कोई भी कहीं पर किसी भी समय अमृत-पान करे तो वह निस्सन्देह अमर हो ही जायगा। इसी प्रकार कोई भी मनुष्य कहीं पर किसी भी समय प्रभु शरणागत होगा तो निस्सन्देह वह प्रभु प्रिय है एवं प्रभु को प्राप्त कर ही लेगा। तथापि भाग्यवश अगर किसी अच्छे देश एवं अच्छे समय में कोई अच्छा सत्पुरुष भगवत शरणागत होता है तो उसमें कुछ अधिक ही गौरव प्रतीत होता है। इसलिये बालक की अधिक रुचि एवं हठ देख कर इनके पूज्य पिता जी की अनुमति अनुसार तीर्थभूमि श्री अयोध्या जी में ही शुभ मुहूर्त पर अपने गुरुदेव द्वारा इनको भी श्री वैष्णवी गुरुदीक्षा दिलाई गई।

❀ माणीपुर ग्राम में श्री लीलास्वरूपों की प्राण-प्रतिष्ठा एवं विवाह-कलेवा उत्सव ❀

माणीपुर ग्राम में पं० श्री सिधेश्वर तिवारी जी ने अपने मकान के समीप ही एक विशाल पक्का सुन्दर विवाह-मंडप तैयार करवाया, और उसमें श्री पुजारी जी महाराज के स्वरूपों द्वारा ही श्री रामविवाह व कलेवा उत्सव कराने का निश्चय भी किया था, सूचना पाते ही श्री पुजारी जी अपने परिकर सहित पधारे। उस समय इनके श्री युगल सरकार नवीन थे। अभी इनकी प्रतिष्ठा भी नहीं हुई थी। केवल यज्ञोपवीत और गुरुदीक्षा ही उनको दी गई थी। जिस समय श्री अवधबिहारीशरण जी को श्री राम जी के निमित्त एवं श्री कमलाशरण जी बालक को श्री किशोरी जी के निमित्त प्रतिष्ठा करने का विचार हुआ। श्री पुजारी जी

ज्यों ही उनको स्नान के बाद पीतंबर धारण कराकर चौकी पर विराजमान करके उनकी प्रतिष्ठा आरम्भ करना ही चाहते थे कि इधर बालक मणिराम जी मचल कर रुदन करने लगे तथा श्री पुजारी जी का हाथ पकड़ कर कहने लगे कि श्री किशोरी जी की प्रतिष्ठा हमारी की जाय, और यह विवाह उत्सव भी हमारे ही द्वारा किया जावे। यदि ऐसा न हुआ तो हम अन्नजल का परित्याग कर देंगे और कूप में गिरकर अपनी इस देह को भी नष्ट कर देंगे। बहुत कुछ समझाने बुझाने पर भी किसी की एक न मानी और ठीक है मानते भी कैसे ? श्री हनुमानबाग़ के श्री सिद्ध हनुमान जी महाराज के सम्मुख की गई महात्माओं की प्रेमपुकार क्या निष्फल जा सकती थी ? बालक की इस प्रकार की उत्कट एवं तीव्र अभिलाषा को अब ठुकराने की शक्ति किसमें थी। बालक के विशुद्ध भाव एवं स्वच्छ प्रेम की सबने भूरि-भूरि प्रशंसा की। इनके हार्दिक भावों को देख श्री पुजारी जी भी मुग्ध हो गये। इनको तो भारी सुख मिला। अन्तिम निर्णय में इन्हीं को श्री किशोरी जी का शृंगार किया गया और इन्हीं के द्वारा यह विवाह उत्सव भी आरम्भ हुआ। जिस समय श्री अवधविहारी शरण जी को श्री राम जी का एवं श्री मणिराम जी को श्री किशोरी जी का शृंगार किया गया, उस समय की छटा को भला यह जड़ लेखनी क्या लिख सकती है ? श्री श्याम गौर युगल सरकार की इस अनूपम झाँकी को निरख-निरख कर सब प्रेमीजन मुग्ध हो गये। दर्शकों की अपार भीड़ थी। साधु सन्तों की भी उस समय एक भारी जमात पहुँच गई थी जिसका तिवारी जी ने कई दिनों तक भली भाँति स्वागत सत्कार भी किया। उस दिन की झाँकी के पश्चात् रात भर झूलन उत्सव भी हुआ, जिससे सबको परमानन्द की प्राप्ति हुई। दूसरे दिन सन्ध्या समय कुछ प्रेमी भक्तों की अभिलाषा हुई कि

आज श्री किशोरी जी को श्री राम जी का वस्त्र श्री राम जी के स्वरूप को श्री किशोरी जी का शृंगार करके झूला की झाँकी की जाय। पुजारी जी जब श्री किशोरी जी को श्री राम जी का शृंगार करने लगे, त्योंही श्री किशोरी जी ने श्री पुजारी जी का हाथ जोरों से पकड़ लिया, और निडर होकर धड़ाके के साथ कहने लगीं। महाराज जी! कल तो हमारी श्री किशोरी जी की प्रतिष्ठा होकर हमारा श्री किशोरी जी का ही शृंगार भी हुआ था फिर आज ऐसा अनुचित एवं विधि निषिद्ध कर्म क्यों किया जाता है? क्या यह कोई खेल तमाशा है या नाटक मण्डली है? हम तो केवल श्री किशोरी जी का शृंगार छोड़ कर जीवन पर्यन्त कोई दूसरा शृंगार एवं कोई दूसरी भावना को भी स्वीकार न करेंगी चाहे कुछ भी क्यों न हो। बस! फिर क्या था! समस्त प्रेमी समाज एवं सन्त-महन्त इनकी इस प्रकार की बातें सुनकर कृतकृत्य हो गये और इनके सच्चे दृढ़ भाव एवं प्रेम की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे। श्री पुजारी जी भी इनकी इस अद्भुत भावना की सराहना करते हुये बोले, सरकार! जैसी आपकी आज्ञा है वैसा ही होगा। इस प्रकार इनका श्री किशोरी जी का शृंगार होकर रात भर युगल सरकार की झूला की झाँकी हुई। कई दिन तक झूला और झाँकियाँ होती रहीं। तत्पश्चात् पंचमी के दिन श्री विवाह उत्सव, छठी को कलेवा, सप्तमी को युगल झाँकी एवं अष्टमी को चौथारी उत्सव होकर उत्सव समाप्त हुआ। उसके एक-दो दिन बाद ही श्री पुजारी जी ने श्री अयोध्या जी के लिये प्रस्थान किया। वहाँ से चलते समय श्री किशोरी जी ने भी आसन बाँध लिया और साथ में चलने को तैयार हो गईं। जब माता-पिता ने इनको श्री अवध जाने से रोका तब तो हठ पकड़ मचल कर रोने लगीं कि अब हम घर पर कदापि न रहेंगी, श्री अवध ही में जाकर वहाँ ही जन्मभर

श्री किशोरी जी का ही श्रृङ्गार धारण करेंगी। उस समय किसी को इस गूढ़ शब्द (जन्मभर) का अर्थ ही न मालूम हुआ, और चूंकि श्री लीलाधर प्रभु ने उन्हें तो इस जगत के रंगमंच पर एक आदर्श-स्थापन करने तथा श्री लीलास्वरूपों को गौरव देने के निमित्त ही इस संसार में भेजा था तब यह अपने घर में कैसे रुक सकती थीं ? इनका हठ देख कर इनकी माता की विरहाग्नि की ज्वाला भड़क उठी, परन्तु अपने प्रिय पुत्र की अभिलाषा एवं हठ को भी टाल न सकीं। इसलिये इनके माता-पिता दोनों ने प्रसन्नतापूर्वक इनका हाथ श्री पुजारी जी को सौंपते हुये प्रार्थना की कि हे गुरुदेव ! यह बालक आपका है, इनको ले जावें, पढ़ावें, लिखावें अथवा स्वरूप बनावें, हमको इसमें कोई आपत्ति न होगी। उस समय आपकी आयु केवल ८ वर्ष की थी। श्री अयोध्या जी में पहुँच कर सर्वप्रथम श्री मणिराम जी का श्री किशोरी जी का श्रृंगार श्रावण शुक्ला हरियाली तीज को होकर प्रथम मुहूर्त झूले का श्री मणिपर्वत में ही हुआ। आप प्रेमपूर्वक वहाँ झूला झूलीं। फिर स्थान में झूलन भर झूला होता रहा। उस समय केवल युगल सरकार समाज में रहते थे। प्रतिदिन निरन्तर अष्ठयाम विधि हुआ करती थी। हर मास की पंचमी, छठ को निरन्तर विवाह-कलेवा उत्सव हुआ करता था। आपका बराबर ७ वर्ष तक श्री किशोरी जी का श्रृंगार हुआ। तब तक निरन्तर अष्टयाम विधि ही होती रही। इस समय उसी समाज में चार युगल अर्थात् आठ स्वरूप (चार सरकार व चार श्री महारानी जी) निरन्तर रहते हैं।

नोट—सज्जनो ! श्री बिहौतीभवन के वर्तमान संचालक महन्त एवं मालिक जो कुछ भी हैं श्री रामशंकरशरण जी महाराज ही हैं। इनको मालिक या महन्त कहने से दुख होता है। इसलिये इनको श्री पुजारी जी कह कर लिखा जायगा और अब

यहाँ से आगे बालक श्री मणिराम जी को भी श्री सिद्धकिशोरी जी के नाम से ही सूचित किया करेंगे।

श्री सिद्धकिशोरी जी को घर में इनके परिवार के लोग कभी-कभी भोलीभाली बातों पर बुड़बक भी कह दिया करते थे। ठीक है, यही दशा प्रायः पहले समस्त सिद्ध महान पुरुषों की हुआ करती है। पीछे जब उनका प्रभाव चमकता है, तब तो बड़े-बड़े विद्वान एवं महात्मा भी उनको प्रणाम करते और उन्हीं बुड़बकों से शान्ति तथा मुक्ति का मार्ग पूछा करते हैं। आगे चल कर इनकी भी यही दशा हुई। वास्तव में आप कभी तो इतनी सुन्दर एवं बुद्धिमत्ता की बातें कह देती थीं कि अच्छे विद्वान और पंडित लोग भी उनको सुनकर चकित हो आपकी प्रशंसा करने लगते। और कभी तो इतनी भोलीभाली बातें किया करती थीं कि इनको लोग नादान ही समझते थे! परन्तु किसी को यह क्या मालूम था कि भविष्य में इनका भाग्य-भानु किस अलौकिक आकाश में चमक कर क्या-क्या रंग लाने वाला है।

यह जगत ऐसा विकट और अगाध सागर है कि इसकी थाह का पता लगाना साधारण जीवों के लिये कठिन ही नहीं, किन्तु असम्भव है। संसारी अनुभवशून्य उपदेशक लोग उपदेश दे दे कर हार जायें, लाखों पुस्तकें लिख डालें, परन्तु वर्तमान समय में सर्वसाधारण मनुष्यों के हृदय पर इनका प्रभाव इतना नहीं पड़ सकता जितना कि प्रभु के सन्देशवाहक (प्रतिनिधियों) के वचनों का पड़ता है। भगवान की असीम कृपा जब जीवों के ऊपर होती है तभी तो ऐसे-ऐसे महान पुरुषों का प्राकट्य होता है। ऐसे ही महान पुरुषों का जीवन नींव के पत्थर के समान होता है जिनके आधार पर दुनियाँ टिकती है। जो

कोई ऐसे महान पुरुषों के आचरणों का आश्रय ग्रहण कर लेते हैं। वह स्वयं तो तर ही जाते हैं, परन्तु दूसरों को भी इस भवसागर से तारने में समर्थ बन जाते हैं। बस! ऐसे-ऐसे महान पुरुष ही जगत के आधार एवं आदर्श हुआ करते हैं। जिनमें से साक्षात् एक हमारी सिद्ध श्री किशोरी जी भी थीं। महान उदार, दयालु एवं अति कोमल आपका हृदय था। जिस पर आप की दया दृष्टि हो गई उस का तो बेड़ा ही पार हो गया। आप के गुणों का कथन करते ही हृदय गद्‌गद् होकर वाणी भी पवित्र हो जाती है, और मारे प्रेम के शरीर में रोमांच तक हो जाता है। हृदय निर्मल होकर सच्चे भावुक प्रेमी को साक्षात् श्री किशोरी जी की ही दिव्य झाँकी नेत्रों के सामने झलक दिखा जाती है। वह बालक क्या थे, आनन्द एवं स्नेह की एक सजीव मूर्ति थे। स्त्री, पुरुष, बच्चे, बूढ़े जो कोई भी उनके सम्पर्क में आते मुग्ध हो जाते, एवं एक अलौकिक आकर्षण का भान करने लगते। आपकी कृपादृष्टि एवं आशीर्वाद द्वारा ही कई दुःखी जनों के जीवन आनन्दमय हो गये थे।

धन्य है वह स्थल जहाँ उस बालक का शुभ जन्म हुआ और धन्य है वह भूमि जहाँ प्रभु के प्यारे उस बालक ने लीलास्वरूप के भेष में भ्रमण करके प्रेमीजनों को घर बैठे ही प्रेमामृत का पान कराया। "अहो भाग्य! कुआँ प्यासे के पास आया।" धन्य हैं वे प्राणी जिन्होंने उनका शुभ दर्शन किया, और धन्य हैं वे पुरुष जिन्होंने उनकी तन, मन, धन से सेवा करते हुये कृपा प्राप्ति का पूरा-पूरा लाभ उठा कर अपना जन्म सफल किया। और महान् धन्य हैं उनके भाग्यशाली माता-पिता जिन्होंने ऐसे अलौकिक अवतारी बालक को जन्म दिया, तथा लालन-पालन कर उनकी बालकालीन लीलाओं को प्रतिदिन देखने का सौभाग्य प्राप्त किया। अहा! संसार में वह कुल धन्य है, श्रेष्ठ है, पवित्र

है, जिसमें ऐसे ऐसे चमत्कारी और संस्कारी भगवद्भक्त उत्पन्न हों। सज्जनो एक उदर से उत्पन्न होने पर भी सबके भाग्य अलग २ हुआ करते हैं—

"दो फूल साथ फूले, किस्मत जुदा-जुदा है।
एक सेहरे में लगा और, एक कब्र पर चढ़ा है।"
"दो भाई थे इकट्ठे, किस्मत की देखो यह खूबी।
एक शाहे तख्त वाला, एक बे नवा गदा है।"

यदि कोई प्रभावशाली हुआ तो कोई प्रभावहीन, कोई शक्तिशाली निकला तो कोई निर्बल, इसी प्रकार कोई यदि प्रकाशवान निकला तो कोई प्रकाशहीन।

हाय शोक! जैसे समुद्र से उत्पन्न होने वाले चन्द्रमा को उसमें रहने वाले जल जन्तुओं ने अमृतमय न समझ कर अपने ही सदृश जलजन्तु माना था, ठीक वैसे ही संसारी लोगों में से भी सिद्धकिशोरी जी को किसी ने अपना भाई तो किसी ने अपना पुत्र, किसी ने अपना सगा सम्बन्धी तो किसी ने अपना मित्र ही मान कर पुकारा एवं पुचकारा। इनके यथार्थ स्वरूप को किसी ने नहीं पहिचाना। ऐसा क्यों हुआ? केवल यही कह कर संतोष करना पड़ता है कि वह अपना यथार्थ रूप (कुछ इने गिने बड़भागियों को छोड़ कर) दूसरे किसी को दिखाना ही नहीं चाहती थीं। सब लोगों के दिलों में अपनी माया का परदा ऐसा डाला कि इतना प्रभाव, इतना ऐश्वर्य, इतना चमत्कार प्रकट करने पर भी लोगों ने केवल यही समझा कि यह भी दूसरे बालकों के भाँति एक सुन्दर बालक हैं।

सज्जनो! मेरे पास इस समय श्री सिद्धकिशोरी जी के दो सौ से अधिक चरित्र हैं, अगर इन सबको लिखने लगूँ तो एक भारी ग्रन्थ बन जायगा। इसलिये इस समय केवल १०६ चरित्र ही लिखकर विश्राम लूँगा।

हँस कर कहने लगे। आप तो बहुत ही भोली-भाली हैं। फिनसा तो गऊ भैंस के दूध का होता है। क्या कहीं स्त्रियों के थन के दूध का फिनसा हुआ करता है? इस पर श्री किशोरी जी मुसकरा दीं, कि हमें इस बात का ज्ञान नहीं था।

(३) हमारे श्री वैष्णव विरक्त समाज में एक परम प्रसिद्ध महात्मा श्री धर्म भगवान जी भी हैं जो बाल अवस्था में एक अद्वितीय चमत्कारी श्री राम जी के स्वरूप का शृंगार धारण कर चुके हैं। आप ने भी अनेकों विचित्र चमत्कार दिखाये थे, तभी तो आज भी अच्छे-अच्छे महान पुरुष आप को उसी प्रकार गौरव की दृष्टि से निहारते तथा आपका उचित व्यवहार सत्कार भी करते हैं। आप श्री सद्गुरु सदन(गोलाघाट) पर एक एकान्त कुटिया में भजन करते हुये श्री अवधवास कर रहे हैं। आपका आचार-विचार, साधुता, पवित्रता एवं दयालुता भी अकथनीय है। लीला स्वरूपों की परख करने के आप पक्के जौहरी हैं। यों तो आप मर्यादा पूर्वक रहने वाले समस्त लीला स्वरूपों के बड़े भावुक एवं श्रद्धालु प्रेमी हैं ही, समय अनुकूल इन सब का लालन-पालन लाड़-प्यार आप के द्वारा हुआ ही करता है, परन्तु जो कुछ भी सेवा, लालन-पालन, लाड़-प्यार प्रेम एवं दुलार आपने श्री सिद्धकिशोरी जी का किया, उतना किसी दूसरे स्वरूप का नहीं हुआ। आपको एक समय श्री सिद्ध किशोरीजी में साक्षात श्रीजनकनन्दिनीजू का भान हुआ था तभी से आपने इनको श्री सिद्धकिशोरी जी के नाम से पुकारना आरम्भ कर दिया था। और आपने अपनी अनुमति (दो शब्द) में भी श्री सिद्धकिशोरी जी को मुक्त कंठ से साक्षात श्री जनक-नन्दिनी जू लिखा है। आपका कथन है कि जैसे सूर्य के उदय होने पर सरोवर में स्थित कमल खिल जाते हैं, उसी प्रकार श्री सिद्ध किशोरी जी के बाहर से आगमन की सूचना पाते ही उनके भक्त

प्रेमीजनों का संकुचित कमल रूपी मन खिल जाया करता था। तथा इतने छोटे बालक के ऐसे अद्‌भुत पराक्रम एवं सिद्ध चमत्कारों को देख सुनकर लोग चकित हो असमञ्जस में पड़ जाया करते थे। यदि उनसे कोई शंका समाधान करता तो तुरन्त उनके प्रश्नों का उत्तर बड़ी सुन्दरता एवं सरलता के साथ, किसी को संक्षेप में तो किसी को विस्तारपूर्वक देकर सन्तुष्ट कर देती थीं। उनकी मन्द-मन्द मुस्कराहट तो मन में मानो मिश्री ही घोल दिया करती थी, और उनका अनुपम रूप भी आँखों में चुभ जाने से सर्वत्र सुख ही सुख प्रतीत होने लगता था। आप इतनी संस्कारी एवं होनहार थीं कि किसी के मन की बात को जान लेना तो आप के लिये बच्चों के खेल की भाँति एक साधारण सी बात थी, और उनके सत्संग की जब कभी गुलाल उड़ती तो उसमें कई प्रेमी ऐसे रंग जाते कि जीवन भर अनुराग की लाली न छूट सके बल्कि गहरी ही होती जाय।

(४) श्री धर्मभगवान जी का कथन है कि एक दिन श्री सद्‌गुरु सदन में श्री पुजारी जी ने विनोदार्थ हास विलास करते हुये भरे दरबार में श्री राम जी (दूल्हा सरकार) से पूछा कि आप के बाबू जी (पिता)भी हैं या आप की माता ने केवल खीर खाकर ही आप को जन्मा है। और यदि हैं तो उनको शीघ्र बुलवाइये, भाँवरी में उनका रहना अति आवश्यक है। श्री राम जी ने उत्तर दिया कि हाँ हमारे बाबूजी हैं। वह इस समय सन्ध्या-वंदन कर रहे हैं। उस समय श्री लक्ष्मणकिला के पूज्य पंडित राज श्री जानकीवरशरण जी महाराज के कृपापात्र श्री स्वामी सत्याशरण जी महाराज जो कि भगवान के जगमोहन में बैठे भजन करते हुये विवाह लीला का भी आनन्द ले रहे थे, श्री राम जी ने उनकी तरफ अँगुली से संकेत करते हुये पुजारी

जी को दिखलाया कि वह हमारे श्रीबाबू जी बैठे भजन कर रहे हैं। इधर श्री स्वामी जी महाराज की तरफ भी इशारा करते हुये उनसे भी कहा कि देखिये बाबूजी। यह मिथिलावासी लोग हमारी हँसी उड़ा रहे हैं कि तुम्हारे बाबूजी नहीं हैं इसलिए आप कृपया यहाँ शीघ्र पधारें। बस! फिर क्या था! श्री स्वामी जी महाराज भगवत्-भागवत के परमानुरागी तो थे ही एवं आप की श्री लीलास्वरूपों में भी पूर्ण श्रद्धा, भावना थी ही, संकेत पाते ही आप तुरन्त श्री राम जी के समीप पहुँचे। वात्सल्य भावना का आवेश होने के कारण आपने उनको अपनी गोदी में उठा लिया, और बेटा-बेटा कह कर प्रेमपूर्वक उनको पुचकारने लगे। आप बड़े भजनानन्दी, प्रभावशाली एवं परोपकारी दयालु सन्त हैं। तब से आप प्रतिवर्ष प्रधान श्री राम विवाह पंचमी उत्सव पर श्री अयोध्या जी बिहौतीभवन में चक्रवर्ती श्री दशरथ जी की भावना का बहुमूल्य राजसी श्रृंगार धारण कर विवाह उत्सव में सम्मिलित हुआ करते हैं। इस समय आपकी आयु लगभग ६५ वर्ष की है। श्री युगल सरकार के अनुग्रह एवं आशीर्वाद से आपका मंगल विग्रह इस समय भी ऐसा सुन्दर और सुडौल है कि आप चक्रवर्ती ही प्रतीत होते हैं। धन्य हैं आप और अति धन्य है आप की इस सुन्दर भावना एवं इस सच्चे प्रेम का। आपकी गुरुभक्ति भी अद्वितीय है। आप के द्वारा श्री गुरुपूर्णिमा के दिन अपने गुरुद्वारा में की गई गुरु गादी पूजन का दृश्य तो देखते ही बनता है, लिखा नहीं जा सकता। उस समय की आपकी भावना एवं निष्कपट सेवा और भेंट पूजा को देखकर कहना पड़ता है कि आप परम उदार एवं दयालु सन्त होने के अतिरिक्त बड़े साहसी, सदाचारी एवं परम त्यागी भी हैं। केवल इतना ही नहीं, बल्कि आपके निटकवर्ती सेवकों के द्वारा यह भी मालूम हुआ है कि आपका

मानसिक पूजन अहर्निश चला ही करता है। ठीक भी है क्योंकि यदि आप की भावना और साधना ऐसी न होती तो श्री राम जी के लीला स्वरूप श्री चक्रवर्ती जी का पद आप को देकर अपने पूज्य पिता जी कैसे बनाते ?

(५) श्री धर्मभगवान जी का कथन है एक दिन प्रातःकाल श्री राम जी महाराज को बड़े जोरों से ज्वर चढ़ आया। वैद्य जी के बुलाने का विचार हुआ, तो श्री किशोरी जी ने कहा कि न तो वैद्य जी को बुलाया जाय, और न कोई औषधि ही मँग-वाई जाय। मैं स्वयं श्री राम जी को श्री भक्तमाल की कुछ कथा सुना कर तुरन्त आरोग्य करती हूँ। सज्जनो! श्री किशोरी जी ने श्री राम जी को ज्यों ही थोड़ी देर तक भक्तों की कथा सुनाई, कथा सुनते-सुनते ही वह तुरन्त अच्छे हो गये। न तो वैद्य जी को बुलाना पड़ा और न किसी औषधि का ही सेवन कराना पड़ा। श्री सिद्धकिशोरी जी ने स्वयं वैद्य बनकर श्री भक्त चरित्ररूपी औषधि खिलाकर श्री रामजी को अच्छा कर भगवत् चरित्रों की महिमा को प्रकट कर दिखाया। यह है इनकी बाल्य लीला का विनोद।

(६) श्री धर्मभगवान जी का कथन है कि श्री काशी जी में बाँस फाटक के समीप एक भक्त बलदेव खोंचा वाला रहता था। एक दिन वह श्री अयोध्या जी के दर्शनार्थ आया। सर्वप्रथम श्री बिहौतीभवन में चला गया। ज्योंही श्री सिद्धकिशोरी जी ने कृपापूर्वक उसको देखा और बुलाकर एक बीड़ा पान अपने कर कमलों द्वारा उसे दिय।,न जाने उस पान में क्या जादू था या श्री किशोरी जी के स्पर्श में कोई टोना ही था कि वह भक्त तो लट्टू हो गया और जितना भी घी में सेंका हुआ चना और चूड़ा संग में भगवान के भोग के लिए लाया था और किसी मन्दिर में न देकर सब सामग्री उसने वहाँ श्री युगल सरकार की भेंट कर दी।

श्री युगल सरकार ने भी अपने उस भक्त के उपहार को बड़े प्रेम से स्वीकार करते हुये भोग लगाया और प्रसादी समस्त उपस्थित प्रेमी जनों को बँटवा दी। वह भक्त बावला सा बन गया। उसका श्री सिद्धकिशोरी जी के दर्शनार्थ श्री अवध में तीन चार बार प्रतिमास में आना जाना बराबर जारी रहा। श्री सिद्ध किशोरी जी को उस भक्त का यह उपहार अन्य बहुमूल्य मिठाइयों से भी अधिक प्रिय लगा तभी तो उसको प्रेरणा कर बुला लिया करती थीं और भक्त भी दौड़ा-दौड़ा चला आता था। यह है इनकी विलक्षण बाल लीला।

(७) श्री धर्मभगवान जी का कथन है कि पंडित लवकुश शरण जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर उन दिनों श्री अवध निवास के निमित्त गोलाघाट स्थान के समीप अपना ही मकान बनवाकर रहते थे। आप श्री सिद्धकिशोरी जी का दर्शन करते ही उनके प्रभाव से ऐसे प्रभावित हुये एवं उनके आकर्षण से ऐसे जकड़ गये कि दिन भर में जब तक दो तीन बार उनका शुभदर्शन न कर लेते तब तक आपको कल ही न पड़ती थी तथा उनको कुछ खिलाये पिलाये बिना स्वयं भी कुछ ग्रहण न करते थे। इस प्रकार का अधिक स्नेह होने के कारण श्री पुजारी जी की अनुमति अनुसार आप ने प्रतिदिन श्री युगल सरकार को कुछ पढ़ाना लिखाना भी आरम्भ कर दिया था। इसी बहाने से आपको प्रतिदिन इनका शुभ दर्शन भी हो जाता था। आपने श्री किशोरी जी से पुत्री का नाता दृढ़ कर लिया था, तभी तो वे भी आपको बाबू जी (पिता जी) कहा करती थीं। और आप उन्हें बिटिया बिटिया कहते थे। श्री सिद्धकिशोरी जी के प्रति डिप्टी साहब की इस प्रकार की सच्ची भावना एवं अटूट श्रद्धा विश्वास को देख सुन कर श्री धर्मभगवान जी का भी आप से परम स्नेह हो गया था। एक समय श्री लवकुशशरण जी बीमार पड़ गये,

उस समय हमने सवारी भेज कर श्री सिद्धकिशोरी जी को बुलवा कर उनसे प्रार्थना की कि आपके प्रेमी लवकुशशरण जी इस समय बहुत अस्वस्थ हैं, कृपया आप उनके समीप जाकर उनके सिर पर अपना हस्तकमल फेर कर उनको शीघ्र नीरोग होने का आशीर्वाद दें। उनकी पत्नी श्री विमलादेवी को भी (जो बहुत घबरा रही हैं) सान्त्वना दे आवें, जिससे उनका हार्दिक दुख, चिन्ता और घबड़ाहट दूर हो जावे।

देखिये सज्जनो! श्री धर्मभगवान जी एवं पंडित जी का परस्पर श्री किशोरी जी से इतना घनिष्ठ सम्बन्ध और प्रेम होते हुये भी श्री सिद्धकिशोरी जी ने उनकी बात को एक कान से सुना और दूसरे कान से निकाल दिया। न तो किसी को आशीर्वाद दिया और न ही किसी को दिलासा! अपने भवन को वापस लौट गईं। थोड़ी देर के बाद जब श्री धर्मभगवान जी को इस बात की सूचना मिली तो आप भी बड़े असमञ्जस में पड़कर सोचने लगे कि आज ऐसा क्यों हुआ, इसमें कारण क्या है? इसी उधेड़ बुन में सोचते विचारते रात्रि के नौ बज गये। जब न रहा गया तो विवश होकर आप ने श्री पुजारी जी को बुलवाकर उनसे सब बृतान्त कह कर उनको एक प्रकार का उलाहना दे डाला। इतना सुनते ही श्री पुजारी जी से भी बर्दाश्त न हुई। वह भी तुरन्त वहाँ से चल दिये। श्री लवकुशशरण जी की रोगपीड़ित दशा को देखते हुये दुखी होकर स्थान पर पहुँचे! एवं श्री किशोरी जी से यों कहने लगे कि देखिये सरकार! श्री लवकुशशरण जी तथा श्री धर्मभगवान जी आपसे कितना प्रेम करते हैं, आपमें कितनी भारी श्रद्धा रखते हुये आपको कितनी ऊँची दृष्टि से देखकर आपका कितना मान सम्मान भी किया करते हैं। किन्तु आपने जो आज उनकी बात को काट दिया

है वह उचित नहीं किया। उनको भारी खेद हुआ है, तभी तो रात्रि के समय बुलाकर हमको उलाहना दिया है। यदि आप पंडित जी को आशीर्वाद और उनकी स्त्री को कुछ दिलासा देकर चली आतीं तो आपका इसमें क्या बिगड़ जाता ?

श्री पुजारी जी की इन सब बातों को ध्यानपूर्वक सुनकर श्री सिद्धकिशोरी जी ने उत्तर दिया कि महाराज जी श्री धर्म-भगवान जी तो ठहरे दयालु महात्मा। जब उनसे श्री पंडित जी का कष्ट सहन न हुआ तो झट हमको बुलवाकर उनको आशीर्वाद देने के लिये अनुरोध किया। परन्तु उन्होंने इस रहस्य को नहीं विचारा कि इसमें होनहार क्या है ? आज रात्रि के ३ बजे ब्राह्ममुहूर्त में पंडित जी साकेत लोक पहुँच जायँगे। अब हम आशीर्वाद कौन को दें ? उन्होंने कई बार हमारे चरण पकड़ २ कर हम से प्रार्थना की है कि बिटिया अब शीघ्र हमको साकेत लोक में भिजवा दे, हम यहाँ रहना नहीं चाहते। सज्जनो ! इतना सुनते ही श्री पुजारी जी चुप लगा के अपने आसन पर जा सोये। सवेरे गोलाघाट की ओर स्नानार्थ जाते समय श्री पुजारी जी को मालूम हुआ कि रात्रि के ठीक ३ बजे श्री लवकुशशरण जी का शरीर शान्त हो गया है।

आहा ! सच है कि भगवान अपने विशेष प्रिय भक्तों को इसी जन्म में अधिक कष्ट भुगवा कर उनको कर्ममुक्त कर देने के पश्चात अपने ही दिव्यधाम में ले जाते हैं। यदि श्री सिद्ध-किशोरी जी उनसे पिता पुत्री के नाते को निभाती हुई भी उनको अपने दिव्यलोक साकेत में अपने सामने न भिजवा देतीं तो यह नाता झूठा पड़ जाता। इसी भावना की पूर्ति के कारण ही तो आपको यह लीला रचनी पड़ी।

(८) श्री धर्मभगवान जी का कथन है कि एक समय

नवहाई स्थान के श्री महन्त जी महाराज के अधिक अस्वस्थ होने पर हम ने श्री सिद्धकिशोरी जी से उनके आरोग्यार्थ प्रार्थना करते हुए निवेदन किया था, कि यदि श्री महाराज जी शीघ्र स्वस्थ हो गये तो उसके उपलक्ष में हम आप के ही समाज द्वारा श्री चित्रकूट श्री जानकीकुंड पर उत्साह पूर्वक श्री विवाह-कलेवा उत्सव करावेंगे।

दया की भंडार श्री सिद्धकिशोरी जी की असीम अनुकम्पा द्वारा श्री महाराज जी नवहाई में शीघ्र अच्छे हो गये। इसलिये हम सब अपनी प्रतिज्ञानुसार श्री बिहौतीभवन समाज के संग चित्रकूट श्री जानकीकुंड में पहुँचे। उत्सव दूसरे दिन से प्रारम्भ होने लगा। उस समय स्वामी श्री सत्याशरण जी महाराज भी हमारे संग थे। श्री जानकीकुंड से थोड़ी दूरी पर महात्मा महावीरदास जी से महात्मा वैदेहीवल्लभदास जी तर्क द्वारा अपनी यह शंका प्रकट कर रहे थे कि सब लोग तो श्री किशोरी जी को सिद्धकिशोरी जी कहते हैं, यदि हमको भी कोई चमत्कार दिखावेंगी तभी हम भी उनको सिद्ध समझेंगे। इधर श्री जानकीकुंड पर श्री युगल सरकार के साथ-साथ और भी १०-१५ प्रेमीजन कुल्ला प्रभाती कर रहे थे और नहाने की तैयारी थी, कि अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी कुल्लाप्रभाती कर चुकने के बाद अकेली दौड़ती-दौड़ती तुरन्त उस जगह जा पहुँचीं जहाँ पर यह दोनों महात्मा परस्पर तर्क वितर्क कर रहे थे। वहाँ जाकर पीछे से महात्मा वैदेहीवल्लभदास जी की चुटिया पकड़ कर एक साधारण झटका भी दिया। जब महात्मा जी ने पीछे की तरफ़ श्री सिद्धकिशोरी जी को देखा तो कुछ लज्जित हुये। इधर श्री किशोरी जी ने उनसे कहा कि आप ने घर द्वार छोड़ा, माता पिता से मुख मोड़ा, अब बाबा जी हो गये तब भी शंका बनी है। बस! जाओ भगवान का भजन करो, अब

इस प्रकार का तर्क और शंका कभी मत करना। इतना सुनते ही महात्माजी के होश उड़ गये। चरण पकड़ कर क्षमा माँगी। तब श्री सिद्धकिशोरी जी ने भी उनके शीश पर अपना कर कमल फेरा और वहाँ से दौड़ी-दौड़ी फिर जानकीकुंड पर आईं और स्नान करने लगीं। साधुओं की डाक बड़ी जबरदस्त होती है। यह घटना संध्या समय तक समस्त कुटियों और गुफाओं में फैल गई। सज्जनो ! श्री सिद्धकिशोरी जी के स्पर्श में भी स्पर्शमणि एवं बिजली जैसा प्रभाव था, जिससे लोग कुछ से कुछ होजाया करते थे। जिन जिन बड़भागियों को आपके स्पर्श का कभी सौभाग्य होता तो वह भी भावाविष्ट होकर अपूर्व रस आनन्द में छक जाते !

(६) श्री धर्मभगवान जी का कथन है कि पंडित दुर्गादत्त जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर उन दिनों श्री अवधवास करते थे। आप लीलाबिहारी स्वरूपों के अनन्य भक्त और कट्टर प्रेमी तो थे ही। एक समय आप श्री बिहौती मगन समाज के साथ साथ श्री युगल सरकार की सेवा व दर्शनार्थ श्री चित्रकूट में भी चले आये। वहाँ से उत्सव की समाप्ति पर जब समाज इलाहाबाद पहुँचा तो डिप्टी सा० श्री युगल सरकार को नवीन जोड़ा पहनाने के निमित्त ताँगे पर बैठा कर बाजार ले गये। बाजार में ताँगे पर बैठे हुये जाते जब एक मुसलमान सौदागर ने निहारा तो देखते ही उसको श्री सिद्धकिशोरी जी की आभा ने ऐसा आकर्षित किया कि वह चुम्बक की भाँति अपनी दूकान से उठकर सरकारी ताँगे के समीप जा पहुँचा। श्री युगल सरकार को सलाम करने के बाद डिप्टी सा० से पूछा "हुजूर कहिये, यह दोनों साहबजादे किनके हैं ? कहाँ से तशरीफ़ लाये हैं, और कहाँ तशरीफ़ ले जाने का इरादा है ?" डिप्टी सा० ने उत्तर दिया कि यह दोनों साहबजादे श्री अवधेश जी महाराज

हैं, चित्रकूट से तशरीफ लाये हैं और श्री अयोध्या जी वापस तशरीफ़ ले जाने का इरादा है। इस वक्त मैं इन दोनों राजकुमारों को मखमली कामदार जूते पहनाने की ग़रज से बाजार में लाया हूँ। सौदागर ने डिप्टी साहब से कहा कि मैं हुजूर की भी तारीफ़ सुनना चाहता हूँ। डिप्टी साहब ने कहा कि मैं रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर हूँ, मगर इस वक्त इन दोनों राजकुमारों की गुलामी (ख़िदमत) में रहता हूँ। इतना सुनते ही उस सौदागर ने अपनी दूकान की तरफ इशारा करते हुये कहा, "हुजूर ! मेरी यही दूकान है, मेरे पास आला से आला क़ीमती जूते मौजूद हैं। आप बराय मेहरबानी मेरी दूकान पर तशरीफ़ ले चलें।" इतना कहकर वह श्री युगल सरकार को अपनी दूकान पर ले गया। उनको सुन्दर कुर्सियों पर बैठा कर नीम-पागल की तरह क़िस्म २ के जूते अपने ही हाथों से सरकारी चरणों में पहनाने लगा। उसको अपने तन बदन का होश न था। थोड़ी देर के बाद दो जोड़ा जूते पसन्द हुये। उनका दाम बताने और लेने से सौदागर ने इन्कार किया, और कहने लगा कि हुजूर! इन दोनों राजकुमारों को मेरी तरफ से यह दोनों जोड़ी जूते बतौर सौग़ात पेशे ख़िदमत हैं। इनको कबूल फरमाया जावे तो ऐनख़ावन्दी होगी और आप का शुक्रिया अदा करूँगा। परन्तु श्री सिद्ध-किशोरी जी ने इनको मुफ्त लेना पसन्द नहीं किया। इसलिये कुछ इलायचीप्रसाद देते समय २०) रुपये के नोट भी सौदागर के हाथ में डाले, वह रुपये लेने से बहुत इनकार करता रहा, डिप्टी साहब ने उनको वापस न लेकर उस सौदागर को समझाया कि इन रुपयों को प्रसाद समझकर अपने खजाने में रख लो इससे तुमको भारी बरकत होगी। बरकत के लालच की वजह से उस सौदागर ने उन रुपयों को लेकर अपने खजाने में रख लिया। श्री युगल सरकार के जाते समय सौदागर ने एक ठंडी

इस प्रसंग के बाद की पंक्ति चार पन्ना बाद में है →

पृ० १२० के बाद का शेषांश —

किशोरी जी ! यदि कोई कहे कि हमने सफेद भैंस देखी है तो उसको मान लेना जिस प्रकार असत्य है, उसी प्रकार आप का यह कहना भी कि 'हम सब कुछ पढ़ी हैं' असत्य है। तब किशोरी जी ने कहा कि भैंस सफ़ेद भी तो होती है। मैंने कहा कि नहीं आज तक मैंने काली छोड़ कर सफेद भैंस कभी नहीं देखी। उस समय सामने से तीन भैंसें आ रही थीं, मैंने कहा यदि इन तीनों भैंसों में से आप हमको एक भी सफ़ेद भैंस दिखला दें तब तो हम मान लेंगे, कि आप सिद्ध हैं और सब कुछ पढ़ीं हैं। श्री किशोरी जी ने कहा, अच्छा ! तुम अपनी दोनों आँखें बन्द कर लो। थोड़ी देर के बाद हुक्म हुआ कि आखें खोलो, तो क्या देखता हूँ कि वह तीनों काली भैंसें बिल्कुल सफ़ेद रंग की हो गई हैं तब तो मैंने लज्जित होकर उनके चरणों को पकड़ते हुये अपने अपराध को भी क्षमा कराया। बस ! उस दिन से मुझे पूर्ण विश्वास हो गया कि यह तो साक्षात श्री किशोरी जी हैं, और बालक के रूप में लीला कर रही हैं। सज्जनो ! उसी दिन से मैं उनको बालक न समझकर देवभावना की दृष्टि से ही अवलोकन करने लगा, उनकी सीथ प्रसादी को भी उनके हाथों से छीन-छीन कर खाने लगा, जिसको पहले मैं लड़कों का झूठन समझ कर छूत मानता और निरादर कर दिया करता था। इस प्रकार की उनकी प्रतिदिन आश्चर्यजनक घटनायें हुआ ही करती थीं। कहाँ तक लिखा जाय ! अगर सब लिखने बैठें तो लेखक जी लिखते-लिखते थक जायँगे और पाठकगण भी पढ़ते-पढ़ते हार जायँगे।

(१७) श्री जानकी घाट निवासी जयपुर मन्दिर के महन्त श्री राजकिशोरीवरशरण जी महाराज का कथन है। हमारे मन्दिर की फुलवारी में एक आँवले का पेड़ है जो कुछ बड़ा होकर सूख गया था। वह कई बार सींचने पर भी जब हरा

नहीं हुआ, तो उसका हमारे दिल में भारी खेद हुआ, परन्तु अपने भक्तों की मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाली श्री सिद्ध-किशोरी जी हमारे मन के भाव को भी ताड़ गईं। तभी तो एक दिन जब कि हमारे मन्दिर में युगल सरकार की झाँकी होनी थी, श्री सिद्धकिशोरी जी शृंगार स्वरूप से अकस्मात फुलवारी में चली गईं, और हमसे पूछा कि क्या इस आँवले के पेड़ को आप ने जल नहीं दिया जो यह सूख गया है? मैंने उत्तर दिया कि सैकड़ों घड़े जल इसमें सींचा गया है, मैंने स्वयं भी कई बार अपने हाथों से सींचा परन्तु यह हरा नहीं होता! इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने एक अपूर्व कौतुक रचा। मेरे ही द्वारा लोटा डोरी मँगवा कर अपने कर कमलों द्वारा केवल पाँच लोटे जल से उस पेड़ को सींचा और हमसे कहा कि महंतजी! अब खेद करने की आवश्यकता नहीं यह पेड़ शीघ्र हरा भरा होकर फलने फूलने लगेगा। न जाने श्री किशोरी जी के कर कमलों में क्या जादू था अथवा कोई टोना ही था कि उन्होंने हथेली पर सरसों जमा दिया, अर्थात् पाँच छः दिन के ही पश्चात् वह पेड़ हरा भरा होकर कुछ दिन बाद फूल फल भी देने लगा। मैंने (लेखक) कई प्रेमी भावुक जनों को उस पेड़ की प्रदच्छिणा एवं आलिङ्गन भी करते देखा है। क्यों न हो! प्रथम तो यह पेड़ श्री महंत जी को अति प्रिय था, दूसरे श्री सिद्धकिशोरी जी के हस्तकमलों का भी उसमें स्पर्श हो गया था। इसलिये प्रतिदिन प्रातःकाल ब्रह्म मुहूर्त में श्री महन्त जी उठकर सर्व प्रथम उस पेड़ की प्रदच्छिणा कर उसका आलिङ्गन करते हुये बहुत देर तक श्री युगल नाम की रटन लगाने के पश्चात् ही कोई दूसरा कार्य करते हैं।

जैसे लोभी आदमी को धन के अतिरिक्त दूसरा कोई पदार्थ अच्छा नहीं लगता, वैसे ही श्री महंतजी महाराज को भी

श्री किशोरी जी का दर्शन, चर्चा एवं उनका भाषण छोड़कर और कुछ भी प्रिय नहीं लगता था, तभी तो जब देखो आप के स्थान में श्री युगल सरकार की बाँकी झाँकी ही हो रही है। श्री सिद्ध किशोरी जी के प्रति आप का इतना सच्चा हार्दिक प्रेम था, कि अब भी उनकी चर्चा चलते समय आप के नेत्र आँसुओं की झड़ी लगाना आरम्भ कर देते हैं। स्वयं कई बार इसका अनुभव मुझे भी हुआ है। (लेखक)

(१८) उपरोक्त श्री महन्त जी का कथन है कि मेरा एक सुपात्र शिष्य अवधबिहारीशरण भी है। उसके हृदय में एक समय प्रबल इच्छा जाग्रत हो उठी कि मैं अनशन द्वारा श्री किशोरी जी का दर्शन प्राप्त करूँ। मैंने उसके इस प्रस्ताव का विरोध किया, और उसको आज्ञा दी कि तुम प्रेमपूर्वक कुछ मन्त्र अनुष्ठान प्रारम्भ कर दो, यदि तुम्हारा प्रेम सच्चा होगा, तो श्री किशोरी जी स्वयं आकर तुमको दर्शन देंगी। कारण कि भगवत्नाम को सार्थक करने के लिये नामी को स्वयं जापक के समीप पहुँचना ही पड़ता है। और याद रक्खो, जैसे २ मनुष्य दीन बनता जाता है, वैसे ही भगवान भी उसके समीप आते जाते हैं। इसमें पूर्ण साहस, उत्साह, श्रद्धा एवं दृढ़ विश्वास की आवश्यकता है। सज्जनो ! इस प्रकार की गुरु आज्ञा पाते ही उनके प्रिय शिष्य श्रद्धापूर्वक उत्साह से कुछ मन्त्र अनुष्ठान करने पर डट ही तो गये। ज्यों २ महात्मा जी का अनुष्ठान बढ़ा त्यों २ उनके दिल से न मिटने वाली लगन और न बुझने वाली प्रेमाग्नि बढ़ती ही गई। यहाँ तक कि विवश होकर श्री सिद्धकिशोरी जी को श्रृंगाररूप से दोपहर के समय उन महात्मा जी के आसन पर स्वयं पधार कर दर्शन देना ही पड़ा। ऐसा अद्भुत चरित्र देख कर महात्मा जी तथा इनके गुरू महराज चकित एवं मुग्ध हो गये और विधि पूर्वक धूप, दीप, आरती, पूजन इत्यादि करके उनको भोग लगाते

हुये प्रेमपूर्वक स्थान पर भिजवाना भी पड़ा। क्यों न हो! जब कि बिना बुलाये ही भगवान अपने भक्तों की प्रबल जिज्ञासा के आकर्षण में खिंचकर उनके पास चले जाते हैं, तब इनके मन्त्र अनुष्ठान द्वारा बुलाने पर श्री सिद्धकिशोरी जी भला कब रुक सकती थीं!—(लेखक)।

(१६) श्री जानकीशरण मधुकरिया जी श्री चारुशीला बाग निवासी का कथन है कि श्री रामप्रिया निवास में एक सन्त श्री मैथलीशरण जी रहते थे। एक दिन उनकी बछिया खो गई। उसके विछोह में आपने प्रतिज्ञा की कि जब तक बछिया न मिलेगी तब तक भोजन न करूँगा। उनकी इस प्रकार की दृढ़ प्रतिज्ञा ने श्री सिद्धकिशोरी जी के हृदय में जाकर मानो सूचना पहुँचाई, तभी तो श्री किशोरी जी ने तीसरे ही दिन महात्मा जी को सन्देश भेजा कि आज आपको भोजन अवश्य करना होगा, घबरायें नहीं, आपकी खोई हुई बछिया मातगयंद के जंगल में घास चरती हुई आज सन्ध्या समय मिल जायगी। सज्जनो! ठीक हुआ भी ऐसे ही। श्री सिद्धकिशोरी जी के कथनानुसार मातगयंद के समीप उनकी बछिया घास चरती हुई मिल गई। यह है उनके अन्तर्यामीपने का चमत्कार!

(२०) राय साहब पं० रुद्रदत्त सिंह जी शर्मा रिटायर्ड दीवान लुग़ासी स्टेट का कथन है, कि जब मैं वहाँ दीवान के पद पर नियुक्त था, मैंने उस समय श्री बिहौतीभवन समाज को श्री अवध से यहाँ कृपाकर पधारने के निमित्त प्रार्थना पत्र भेजा तो अपने दयालु स्वभाववश श्री युगलसरकार अपने परिकर सहित लुगासी में पधारे। दस बारह दिन तक विवाह-कलेवा उत्सव, झूला, झाँकी इत्यादि भी हुईं जिससे अपूर्व आनन्द प्राप्त हुआ। एक दिन वहाँ के जेल को देखने के निमित्त श्री किशोरी जी ने अपनी इच्छा प्रकट की तो श्री युगल सरकार को जेल दिखलाया गया। उस समय ज्यों ही एक वृद्ध पुराने क़ैदी ने श्री

Scanned by CamScanner

युगल सरकार के दर्शन किये, हाथ जोड़ कर उठ खड़ा हुआ, और श्री युगल सरकार की छटा निहारने लगा। इधर श्री किशोरीजी को भी उस पर दया आ गई। जब उसका कष्ट इन्हें असह्य हो गया तो दीवान साहब से पूछने लगीं क्या आप इस क़ैदी को छोड़ नहीं सकते ? दीवान साहब ने उत्तर दिया कि इस समय आप मालिक हैं, हम तो सेवक हैं। जैसी आज्ञा होगी पालन किया जायगा। श्री सिद्धकिशोरी जी का संकेत पाते ही वह क़ैदी तुरन्त राज दया (Royal mercy) में छोड़ दिया गया। दूसरे दिन श्री किशोरी जी ने दीवान साहब को अपने पास बुलाकर उनसे पूछा कि आप वैष्णव होकर भी लोगों को सजा देते और उनको जेल में बन्द करते हैं ? दीवान साहब ने उत्तर दिया कि सरकार आप की ही तो आज्ञा है न, कि दुष्टों को दण्ड देना चाहिये। अगर ऐसा न किया जावे तब तो दुष्ट लोग आपके प्रिय भक्तों को कष्ट देने लगेंगे। इसलिये जो दुष्ट लोग हैं केवल उन्हीं को दण्ड दिया जाता है।

(२१) राय साहब का कहना है कि नवम्बर सन् १६३६ में सर्वप्रथम श्री बिहौतीभवन समाज का श्री विवाह-कलेवा-उत्सव चित्रकूट श्री जानकीकुंड में हुआ, तब मैं भी सरकारी सेवा में था। उत्सव के पश्चात् कुछ दिनों तक सरकारी झाँकियाँ चौबे श्री दरयावसिंह जी जागीरदार रियासत पालदेव के मकान पर भी हुईं। वहाँ से श्री पुजारीजी महाराज को केवल एक दिन के लिये किसी आवश्यक कार्यवश श्री अयोध्या जी जाना था। करवी स्टेशन से रात्रि के ढाई बजे की गाड़ी से सवार होना भी निश्चय हो गया था। उस रात्रि को डेढ़ बजे उत्सव समाप्त हुआ। दो बजे पुजारी जी ने श्री किशोरीजी से श्री अयोध्या जी जाने के निमित्त आज्ञा माँगी। रायसाहब का कथन है कि उस समय घड़ी में ढाई बजने वाले थे। मैंने कहा कि गाड़ी का

मिलना असम्भव है, परन्तु श्री किशोरी जी ने श्री महाराज जी से कहा कि पहिले कुछ ब्यारू कर लो फिर चले जाना, गाड़ी आपको मिल जायगी। श्री पुजारी जी भोजन करके श्री जागीरदार साहब की मोटर गाड़ी द्वारा कर्वी स्टेशन पर पहुँचे तो मालूम हुआ कि गाड़ी लेट है। डेढ़ घण्टा तक स्टेशन पर रेलगाड़ी को परखना पड़ा। देखिये! श्री सिद्धकिशोरी जी का अन्तर्यामीपना कितना सच्चा निकला कि "आप ब्यारू करके चले जायँ, गाड़ी आपको मिल जायगी।"

(२२) श्री रुद्रदत्तसिंह जी का कथन है कि श्री जानकी घाट जयपुर मन्दिर में श्री युगल सरकार की झाँकी होनी थी। मेरे बड़े भाई स्वर्गीय पं० दुर्गादत्त जी रिटायर्ड डिप्टी कलेक्टर की एक पुरानी मोटर थी जिसका नाम श्री किशोरी जी ने बुढ़िया मोटर रखा था। झब्बा ड्राइवर उसी मोटर पर श्री युगल सरकार को जयपुर मन्दिर में लाया। झाँकी होते समय श्रीमान महाराजा बहादुर रियासत पन्ना के मंझले भाई पन्ना से अपनी नवीन मोटर द्वारा जयपुर मन्दिर में पधारे, ये वहाँ श्री युगल सरकार की झाँकी का दर्शन कर अति आनन्दित एवं प्रभावित भी हुये। झाँकी समाप्त होने पर श्री युगल सरकार को उसी बुढ़िया मोटर पर सवार होते देख पन्ना नरेश के भाई साहब ने श्री युगल सरकार से प्रार्थना की कि डिप्टी साहब की मोटर पुरानी है और हमारी नवीन है, आप कृपया इस पर विराजमान हो जायँ तो पहले आपको हम स्वयं बिहौती भवन तक पहुँचा दें, फिर हम पन्ना चले जायँगे। परन्तु बहुत कुछ कहने-सुनने पर भी श्री किशोरी जी ने इसको स्वीकार नहीं किया और उत्तर दिया कि हमको पुरानी एवं गरीबों की ही मोटर प्रिय है जिससे प्रतिदिन काम पड़ता है। केवल थोड़े ही समय के लिये राजा महाराजाओं की नवीन मोटर पर बैठकर पुरानी

मोटर का तिरस्कार कर देना उचित प्रतीत नहीं होता। श्री सिद्ध किशोरी जी का इस प्रकार का भावपूर्ण हृदयउद्‌गार देख सुन कर पन्नानरेश के भाईसाहब तो मुग्ध हो गये, एवं अमीरों से अधिक गरीबों पर ही प्रेम भाव और दया को देख सुनकर श्री सिद्धकिशोरी जी की आप भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे ?

(२३) राय साहब का कथन इस प्रकार से है कि एक समय जयपुर मन्दिर में झाँकी हो रही थी। मैं बुखार के कारण वहाँ दर्शनार्थ नहीं जा सका। थोड़ी देर के बाद मन में विचार हुआ कि चलो किसी सवारी द्वारा सरकारी झाँकी का दर्शन करके बैठूँगा नहीं वापस लौट आऊँगा। जब मैं वहाँ पहुँचा तो दर्शकों एवं साधु सन्तों की अपार भीड़ थी, सम्पूर्ण आँगन एवं मन्दिर की छतें भी खचाखच भर चुकी थीं। श्री युगल सरकार के समीप पहुँचने तक का जब रास्ता न मिला तो मैं सब के पीछे बैठ गया, श्री किशोरी जी ने मुझे देखा तो, श्री पुजारी जी से कहा कि वह देखो मंझले बबुआ आइलेन उनको हमारे पास बुलाई। इतना सुनते ही श्री पुजारी जी आये और मेरा हाथ पकड़ कर श्री युगल सरकार के निकट ले गये। श्री सिद्धकिशोरी जी ने पहिले मेरी हालत पूछी फिर पान, इलायची देकर मेरे सिर पर हाथ भी फेर दिया और कहा कि यहाँ बैठ जायें। न जाने उस पान में कोई वशीकरण था अथवा इलायची में कोई टोना या उनके हस्तकमल में ही कोई जादू था, कि मेरा १०३ डिगरी का बुखार उस समय कहाँ भाग गया ! मेरा चित्त बिल्कुल शुद्ध हो गया, मानो मुझे बुखार बिल्कुल था ही नहीं, और मैंने अन्त समय तक बैठ कर वहाँ सरकारी दर्शन किया। मुझे कोई भी कष्ट प्रतीत नहीं हुआ किन्तु भारी आनन्द एवं सुख ही मिला ! क्या कहूँ उनकी मधुर प्रिय वाणी इतनी सरस और चित्त को स्वतः अपनी ओर

आकर्षण करने वाली थी। मनुष्य उसको सुनते मात्र मुग्ध हो जाया करते थे। इनके विषय में जो कुछ भी कहा जाय वह कम है। देखिये! चन्द्र चकोरों को बुलाने कभी नहीं जाता, और न कमल ही भौरों को निमंत्रण भेजता है! इनकी शीतलता एवं सौरभ ही उन्हें स्वयं आकर्षित कर लेते हैं। इसी प्रकार इनके अलौकिक चमत्कारों को देख सुनकर जहाँ-तहाँ भी आप जातीं वहाँ प्रतिदिन सैकड़ों ताप ग्रसित जीव इनके समीप दर्शनार्थ आते। बहुत तो इनके दर्शनमात्र से ही सुखी हो जाते। और कुछ लोग आशीर्वाद द्वारा ही अपने मनोरथ को पाते थे।

(२४) दीवान साहब लुगासी का कथन है कि एक समय श्री विहौतीभवन समाज की इच्छा श्री जनकपुर की चौरासी कोसी परिक्रमा करने की हुई। उस समय श्री किशोरी जी की अवस्था लगभग १२ वर्ष की थी। ऐसा शुभ अवसर पाकर हम सब का विचार भी परिक्रमा करने का हो आया, तो हम सब लोग भी बाल-बच्चों समेत इस समाज के साथ-साथ जनकपुर चल दिये। फाल्गुन शुक्ला २ को प्रातःकाल से तो परिक्रमा आरम्भ होनी थी। इधर एक दिन पहले परीवा की शाम को ही हमारे नाती अवधू आयु ११ वर्ष (अवधशरण जो कि आज-कल तहसीलदार हैं) को १०४ डिग्री ज्वर हो आया। वह बेहोश हो गया। उसकी यह दशा देखते ही हम सब का चित्त भी उदास होने लगा। मैंने तुरन्त श्री सिद्धकिशोरी जी के समीप पहुँच कर उनको इस घटना की सूचना देते हुये प्रार्थना की, कि हमारे बड़े भाई डिप्टी दुर्गादत्त जी तो कल आपके संग परिक्रमा में चले जायँगे, और मैं यहाँ ही रह कर बालक की देख-रेख करके इलाज भी कराऊँगा। कारण कि ऐसी बीमारी की दशा में यह बालक पैदल परिक्रमा कैसे कर सकेगा? श्री सिद्धकिशोरी जी उस बालक से

यहाँ से बाद का प्रसंग चार पन्ना बाद में है —>

पृष्ठ ११२ के बाद का प्रसंग

साँस भर कर वाह "सुभान तेरी कुदरत" कह कर चुप लगा गया, और बहुत देर तक सड़क पर खड़ा-खड़ा श्री युगल सरकार की बाँकी झाँकी को देखता ही रह गया। कहाँ तो श्री युगल सरकार और कहाँ एक मुसलमान सौदागर, भगवान की लीला भगवान ही जानें! बिना श्रृंगार के दर्शन करने पर जब कि सौदागर की यह दशा हो गई, अगर कहीं वह श्री युगल सरकार के श्रृंगाररूप में दर्शन कर लेता तब तो न जाने उसकी क्या हालत हो जाती ?

(१०) श्री धर्मभगवान जी का कथन है कि हमने आज तक श्री रामलीला अथवा श्री कृष्णलीला मंडली के किसी भी स्वरूप को श्रृंगार भेष में किसी दूसरे व्यक्ति का जूठा खाते न तो स्वयं देखा है और न ही किसी से सुना है, परन्तु कानपुर में सेठ हुलासीलाल रामदयाल बादशाहीनाका के मन्दिर में श्री विवाह-कलेवा उत्सव होते समय श्री सिद्धकिशोरी जी ने श्रृंगारस्वरूप में मेरे ही सामने स्वामी श्री सत्याशरण जी महाराज से भोजन करते समय कहा था कि आपने श्री युगल सरकार की सीथ प्रसादी बहुत दिन तक सेवन की है, आज हम दोनों स्वरूपों की आपकी प्रसादी पाने (खाने) के लिये उत्कट अभिलाषा हो रही है। परन्तु श्री स्वामी जी महाराज ने उनके इस प्रस्ताव को स्वीकार करने में भारी संकोच प्रकट किया और प्रार्थना की कि सरकार! ऐसा उचित नहीं है। भला श्री सिद्धकिशोरी जी की अभिलाषा कैसे रुक सकती थी ? तुरन्त युगल सरकार ने अपने थाल छोड़ दिये और स्वामी जी के थाल में दोनों सरकार भोजन करने लगे। धन्य है! आपकी अनुपम कृपा को। आप जिस किसी को अपना लेते हैं फिर त्यागते ही कब हैं? इस प्रेमभरी भावना से दर्शकगण एवं प्रेमीजन अति मुग्ध, निहाल एवं कृतकृत्य हो

गये, और कई प्रेमी लोग सरकारों की निछावरें कर करके गाने बजाने वालों को भेंट करने लगे।

(११) गाडरवाला (सी० पी०) के महन्त श्री शत्रुहनदास जी, जो इस समय पं० श्री अखिलेश्वरदास जी, "व्यास" श्री अयोध्या जी के शुभ स्थान में निवास कर रहे हैं। आप का कथन है कि एक समय श्रावण के झूलन उत्सव का दर्शन करने के निमित्त हम श्री अयोध्या जी में रुक गये। और नित्यप्रति प्रत्येक स्थानों में जा जाकर झूलन का दर्शन करने लगे। एक दिन श्री बिहौतीभवन में भी जाने का विचार हुआ, चलते समय अपने मन में यह संकल्प किया कि आज तो आदि से अन्त तक केवल वहाँ के ही झूला का दर्शन करेंगे। हमने पहिले कभी यहाँ के दर्शन नहीं किये थे, इसलिये लीलाबिहारी के यहाँ खाली हाथों जाना उचित न समझ कर उनके लिये आधा सेर मलाई बाजार से एक कुल्हड़ में खरीद कर उसे अपनी साफी में लपेट लिया। इधर वर्षा भी होने लगी, जिससे बिहौतीभवन तक पहुँचते पहुँचते हमारा अचला बिल्कुल भीग गया। मन्दिर में पहुँच कर ज्योंही मैंने श्री युगल सरकार को दण्डवत् प्रणाम किया त्यों ही श्री सिद्धकिशोरी जी ने मेरे ही सामने श्री रामजी से कहा कि यह महन्त जी हम दोनों के लिये मलाई लाये हैं। और एक नया पीला रँगा हुआ अचला अन्दर से मँगवा कर हमको देकर कहा कि आप इस गीले अचले को उतार कर इसको पहिन लें। मैंने वह अचला (धोती) लेने से इन्कार किया, तब अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी कहने लगीं, महन्तजी! आपका तो संकल्प है आदि से अन्त तक झूला दर्शन का। तब गीले अचले को पहन कर आप तीन-चार घण्टे तक यहाँ कैसे बैठ सकेंगे। इतना सुन-कर सज्जनो! मने अचला लेकर पहन लिया, और मलाई भेंट करके प्रार्थना की कि कल बाजार से एक नया अचला खरीद

कर सेवा में अर्पण करूँगा। परन्तु श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि इसकी कोई आवश्यकता नहीं है, यहाँ तो हजारों अचले प्रेमी लोगों को प्रसाद रूप में बाँटने के निमित्त रक्खे रहते हैं। श्री महन्त जी का कहना है कि इस प्रकार के श्री सिद्ध-किशोरी जी के मुखवाक्य सुन कर एवं उनके अन्तर्यामीपने के चमत्कार को प्रत्यक्ष देख सुन कर मैं तो उन पर मुग्ध हो गया, मैंने उनके चरण पकड़ लिये, और उस समय मुझे अपने शरीर की भी सुधबुध नहीं रही। मुझे भारी अचम्भा यह हुआ कि श्री किशोरी जी मेरे हृदय के संकल्प को कैसे जान गईं, और केवल एक अचला पहिने देख कर मुझे महन्त कैसे कह डाला? और उनको इसका भी कैसे भान हो गया कि कुल्हड़ में मलाई लाये हैं और हमारे ही निमित्त लाये हैं। हो सकता था कि मलाई हम अपने लिये ले आये हों, और कुल्हड़ में भी अनेक प्रकार की मिठाई नमकीन इत्यादि वस्तुयें रक्खी जा सकती हैं। इन्हीं सब बातों को विचारने पर हमको मानना पड़ा कि वास्तव में इनको जो श्री सिद्धकिशोरी जू कहा जाता है, सो अक्षरशः सत्य है।

(१२) महात्मा रामदास जी (विह्वल प्रेमी) श्री जानकीघाट निवासी श्री अवधवासी का कथन है कि एक समय श्री जनकपुर के प्रेमी समाज को फाल्गुन मास में श्री बिहारकुण्ड पर बड़े समारोह के साथ श्री रूपसखी जी की होली का उत्सव मनाने का विचार हुआ। अकस्मात श्री बिहौती समाज भी उसी समय श्री जनकपुर धाम में पहुँच गया। यद्यपि श्री युगल सरकार के चारों जोड़ों के अतिरिक्त होली की समस्त सामिग्री भी एकत्रित हो चुकी थी, वहाँ के प्रेमी समाज ने श्री बिहौती-भवन युगल सरकार के समीप पहुँच कर श्री पुजारी जी से अपनी उत्कट अभिलाषा प्रकट की कि यदि आप भी इस महोत्सव में सम्मिलित होने की कृपा करदें तो अहोभाग्य! और

इस उत्सव में भी पूर्णानन्द एवं सुख की वर्षा होगी। इतना सुनते ही श्री सिद्धकिशोरी जी ने अपनी सिद्धि द्वारा वर्णन किया, कि आप लोग कितना भी उपाय क्यों न करें, इस वर्ष तो यह उत्सव कदापि हो न सकेगा, किन्तु अगले वर्ष यही उत्सव बड़े उत्साह एवं समारोह के साथ होगा। महात्मा रामदास जी का कथन है कि समस्त सरकार एवं होली की सामग्री उपस्थित होने पर भी श्री सिद्धकिशोरी जी के कथनानुसार अनेक प्रकार के उपाय एवं प्रयत्न करने पर भी कोई सफलता प्राप्त न हुई। किसी विशेष कारणवश उत्सव को स्थगित ही रखना पड़ा, और वही उत्सव दूसरे वर्ष फाल्गुन मास की पूर्णमाशी को बड़े समारोह के साथ सम्पन्न हुआ। देखा सज्जनो ! इसको कहते हैं भविष्य-वाणी एवं अन्तर्यामीपने का चमत्कार।

(१३) श्री माधुरीकुञ्ज के वर्तमान महन्त रसिकराज श्री मैथिलीशरण जी (भक्तमाली) का कथन है—श्रावण का मास था, श्री बिहौतीभवन में उस दिन आठ झूले पड़े थे। मेरी एक दिन प्रबल इच्छा हुई कि वहाँ जाकर दर्शन कर आऊँ। परन्तु किसी कार्यवश जा न सका और मेरे मन का अरमान मन ही मन में रह गया, जिससे हमको भारी पछतावा भी हुआ। परन्तु सबके हृदय की जाननहारी श्री सिद्धकिशोरी जी हमारे दिल के अरमान को भी जान गईं। इसीलिये दूसरे दिन सन्ध्या समय पटना के एक बाबू द्वारा हमें सन्देशा भिजवाया कि आज झूला की अन्तिम झाँकी है, महन्त जी के दर्शन योग्य है उनको अपने ही साथ लिवा लाओ आज वह अवश्य आवेंगे। और बाबूजी से यह भी कहा कि कल श्री माधुरीकुञ्ज के महाराज जी हमारे पास दर्शनार्थ आ रहे थे, परन्तु किसी ने उनको कार्यविशेष से रोक लिया इसीसे वह नहीं आ सके थे, उनके हृदय में भारी खेद हुआ और रात भर पछताते भी

रहे ! श्री महन्त जी का कथन है कि श्री किशोरी जी का इतना सन्देश पाते ही मैं उन बाबू जी के साथ मन्दिर में गया वहाँ जाकर अन्तिम झूले का आदि से अन्त तक दर्शन किया। श्री सिद्धकिशोरी जी ने बड़े उत्साह एवं प्रेमपूर्वक अपने गले से उतार कर माला प्रसादी हमको दी। फिर पान इलायची देकर इत्र से भी स्वागत किया। अपने ऊपर श्री सिद्धकिशोरी जी का इतना भारी अनुग्रह देखकर हमको भारी सुख मिला। उनकी इस प्रकार की अन्तर्यामी घटना को देखकर मैं तो उन पर मुग्ध हो गया। इसी प्रकार दूसरे सन्त महात्मा भी कई चमत्कारी चरित्र देख सुन कर उनके प्रेमी बनने लगे और तभी से बहुत लोग श्री किशोरी जू को श्री सिद्धकिशोरी जी कह कर पुकारने लगे।

(१४) उपरोक्त श्री महन्त जी महाराज की दूसरी घटना का वर्णन इस प्रकार है। श्री मिथिलानिवासी एक सन्त (जो कि बिहौतीभवन में ठहरे हुये थे) मेरे पास आये, और एकान्त में गुप्त रूप से मुझ से सम्बन्ध लेने एवं उपासना का विषय जानने के निमित्त प्रार्थना की। परन्तु समय के संकोच वश हम उनकी इच्छा की पूर्ति न कर सके ! वह निराश हो कर चले गये। ऐसे सच्चे सन्त की सच्ची हार्दिक अभिलाषा भला श्री किशोरी जी से कैसे छिप सकती थी। अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी ने उन महात्मा जी को तीसरे दिन अपने निकट बुलवा कर कहा कि आप किशोरी जी की उपासना के विषय में कुछ जानना चाहते हैं, और सम्बन्ध-पत्र लेने की भी आप के मन में उत्कट अभिलाषा है, इसलिये आप देरी न करें, तुरन्त श्री माधुरीकुंज के महन्त महाराज के पास जाकर उनसे सम्बन्ध-पत्र लेकर उपासना के विषय में भी सब कुछ पूछ लें, ऐसे सुयोग्य महान

पुरुषों का मिलना कठिन है। बस! इतना सुनते ही वह सन्त मेरे समीप पहुँचे, और एकान्त में बुलाकर सब गुप्त रहस्य कह सुनाया, और कहा कि यह समस्त भेद मैंने श्री किशोरी जी से गुप्त ही रखा था, परन्तु न जाने हमारे हृदय का भाव उनको किस प्रकार से मालूम हो गया कि हमें आज आप के पास सम्बन्ध-पत्र लेने के लिए भेजा है। श्री महाराज जी का कथन है कि उस सन्त के द्वारा समाचार सुनते ही हम बड़े असमंजस में पड़ गये कि यह बात क्या है? उसी समय हमको हृदय में तुरन्त कुछ भान हुआ, मानो श्री सिद्धकिशोरी जी हमसे कुछ बातचीत कर रही हैं। तभी हम ताड़ गये कि यह कोई साधारण बालक नहीं, किन्तु साक्षात् श्री किशोरी जी बालक स्वरूप में अपनी लीला कर रही हैं। हम तुरन्त सब कार्य छोड़कर उन सन्त जी के साथ-साथ श्री सिद्धकिशोरी जी के समीप पहुँचे और जाकर उनसे पूँछा कि क्या इन संत जी को सम्बन्ध-पत्र देने के लिए आप ही की आज्ञा है? इतना सुनते ही श्री किशोरी जी ने मुस्करा कर हमसे कहा कि सन्त जी ने तो सब कुछ कहा ही होगा, अब मैं अधिक क्या कहूँ? आहा! क्यों न हो। जिनकी इच्छा प्रबल एवं भावना विशुद्ध हो तो उनके लिए संसार में कौन सा कार्य असम्भव है? सन्त जी पर श्री किशोरी जी की इस प्रकार की असीम कृपा देख कर हमसे भी नहीं रहा गया। यद्यपि हम उस समय एक आवश्यक कार्य में लगे थे, उसको अधूरा छोड़ कर पहले उन सन्त जी को उपासना का विषय समझा कर फिर सम्बन्ध-पत्र भी दे दिया। श्री किशोरी जी की इस प्रकार की दया एवं अन्तर्यामीपने का चमत्कार देख सुन कर हमें तो बड़ी भारी प्रसन्नता हुई, और हमारी श्रद्धा उनमें पहिले से अधिक बढ़ने लगी।

(१५) बाबू मन्नूलाल घड़ीसाज श्री अयोध्या निवासी का

कथन है कि लीलास्वरूपों में मेरी भाव-भक्ति अथवा श्रद्धा कुछ भी नहीं थी। एक दिन स्वाभाविक सड़क पर से बाजे-गाजे की आवाज सुनकर मैं बिहौतीभवन मन्दिर में चला गया तो देखा कि युगल सरकार की झाँकी का उत्सव समाप्त हो चुका था और श्री सिद्धकिशोरी जी अपने करकमलों द्वारा कुछ प्रेमियों को किसी को पान, किसी को इलायची, और किसी-किसी को गुलाब का फूल देकर बिदा कर रही थीं। मन्नू बाबू का कहना है कि मैं उस समय मन्दिर में खड़ा-खड़ा दूर से यह चरित्र देख रहा था, और अपने मन ही मन में अनुमान कर रहा था, कि हमको भी यदि बुलाकर यह स्वरूप कुछ प्रसाद दे दें तब तो मैं समझूँगा कि लीलास्वरूपों में भी आवेश होता है और अगर खाली हाथ जाना पड़ा तो उसको केवल खेल तमाशा ही समझूंगा। सज्जनो! मैं इतना विचार ही रहा था कि श्री सिद्ध किशोरी जी ने एक बालक द्वारा मुझे अपने समीप बुलवाया, ज्योंही मैंने सिंहासन के समीप पहुँच कर श्री युगल सरकार को प्रणाम किया, अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरीजी मेरे हृदय की बात को भी ताड़ गईं, तभी तो हमसे कहा कि आप इसकी चिन्ता न करें, हमारे दरबार से ख़ाली कैसे जा सकते हैं। यह गुलाब का फूल है इसको ले जाओ, इसको अपने सिर पर रख कर टोपी लगा लिया करो। घड़ीसाज का कथन है कि मैं वह फूल लेकर अपने घर चला आया और सरकारी आज्ञानुसार जब कभी कहीं जाना होता तो उस गुलाब के फूल को सिर पर रख कर ऊपर से टोपी लगा लिया करता था। वह गुलाब का फूल सात आठ दिन तक ज्यों का त्यों हरा भरा बना रहा, और सुगन्ध भी देता रहा। इसका कारण सोचते २ एक दिन हमको दिल में शंका हुई कि यह कोई चमत्कार नहीं है केवल सिर के पसीने से तरी के कारण यह फूल नहीं कुम्हलाया। थोड़ी देर

बाद ही क्या देखता हूँ कि वह गुलाब का फूल कुम्हला कर बिल्कुल सूख गया और उसकी सुगन्धि भी जाती रही। फूल की यह दशा देखते ही मैं तुरन्त श्री सिद्धकिशोरी जी के समीप पहुँचा तो मेरे कहने से पहिले ही उन्होंने झट से कह डाला कि आपके मन में शंका उत्पन्न होने के कारण ही इस फूल की यह दशा हुई है। ज्योंही श्री सिद्धकिशोरी जी ने मेरे हृदय की बात कह डाली, मैं उनके इस प्रकार के अन्तर्यामीपने के अद्‌भुत चमत्कार को प्रत्यक्ष देखकर अति प्रभावित हुआ और नित्य प्रति उनके दर्शनार्थ मन्दिर में जाने लगा। यद्यपि श्री सिद्ध-किशोरी जी इस समय दृश्यस्वरूप् में नहीं हैं परन्तु मैं प्रतिदिन नियमपूर्वक श्री कनकभवन महल में जाकर श्री कनकभवन बिहारिन-बिहारी जू के दर्शन कर आया करता हूँ। मुझे इनके दर्शनमात्र से ही सिद्धकिशोरी जी के दर्शनों का भान होकर चित्त सुखी एवं शान्त बना रहता है।

(१६) पं० सीताबल्लभशरण जी का कहना है कि यद्यपि बाल्यावस्था से ही मैंने वैष्णवी गुरु दीक्षा ग्रहण कर ली थी, परन्तु मेरे विचार कुछ आर्यसमाजी लोगों के से थे, इसलिये लीलास्वरूपों में मेरी भावना या श्रद्धा न थी। श्री पुजारी जी महाराज बिहौतीभवन से कुछ पूर्व परिचय होने के कारण उनके समाज में रह कर कुछ सेवा करने लगा। और उनके श्री युगल सरकार लीलास्वरूपों को कुछ हिन्दी भी पढ़ा दिया करता था। एक दिन की घटना है कि श्री युगल सरकार शृंगारी जी और मैं चारों बैलगाड़ी द्वारा नड्ढा ग्राम से बहावल (चम्पारन) जा रहे थे! बैलगाड़ी में श्री सिद्धकिशोरी जी से मैंने कुछ पढ़ने को कहा तो मुझे उत्तर मिला "हम सब कुछ पढ़े हैं।" मैंने जवाब दिया कि आप कुछ भी नहीं जानतीं। इस प्रकार परस्पर तर्क वितर्क होने लगे। फिर मैंने कहा कि देखिये!

यहाँ के बाद का प्रसंग आठ पन्ना पीछे है

पृ०१२८ के बाद का प्रसंग →

प्रतिदिन प्रेमपूर्वक खेला करती थीं, भला इन्हें अवधू के बिना अकेले कल कैसे पड़ सकती थी, इसलिये उनका दुःखद समाचार सुनते ही श्रीकिशोरी जी मेरे संग-संग तम्बू में पहुँचीं जहाँ अवधू सो रहा था, और जाते ही उसका हाथ पकड़ कर उसको जगा दिया, उसके सिर पर अपना हस्तकमल फेरा और "अवधू चलीं खेलीं", यह कर उसके साथ खेलने भी लग गईं। उसको कुछ पसीना आया और बुखार जाता रहा! प्रातः काल से परिक्रमा प्रारम्भ हो गई और वह बालक भी चौदह दिन तक चौरासी कोसी पूरी परिक्रमा पैदल आनन्दपूर्वक कर आया! सज्जनो! इसको कहते हैं सिद्धाई का अपूर्व चमत्कार। केवल सिर पर हाथ फेरते ही ज्वर दुम दबा कर भाग खड़ा हुआ और मारे डर के फिर निकट नहीं आया। इधर श्री जनकपुर की यात्रा में हम लोगों को प्रत्यक्ष देखने में आया! जहाँ कहीं भी श्री सिद्धकिशोरी जी पधारतीं आपका दर्शन करते ही अच्छे-अच्छे संत महन्त भी आपका खड़े होकर आगत स्वागत करते और विधिवत् मान सम्मान सहित आपको आसन देते! क्यों न हो! भला सूर्य उदय होने पर कमल हँस कर स्वागत करने में कब चूकते हैं? ऐसा सलोना सुकुमार भोला बच्चा उस पर इनके पवित्र आचरण, शील, स्नेह एवं दयालु स्वभाव को देख सुनकर समस्त प्रेमीजन आप पर सर्वस्व न्योछावर करने को तैयार रहते थे! अच्छे-अच्छे अहलकार, सेठ-साहूकार एवं हाकिम तक जो उस समय परिक्रमा कर रहे थे, आपके वचनामृत का पान करके कृतार्थ हो जाया करते थे। मगर हाँ कोई बिरला पाखण्डी या अभागा ही ऐसा हो सकता है जिसको पक्षपात ही भाता हो और केवल वही आपके आकर्षण से बचा भी हो तो उसकी बात दूसरी है। और वह लोग भी कितने अभागे हैं जो कि समीप रहने पर भी उनके स्वरूप से

वंचित रहे। यह तो केवल सरकारी लीला एवं उनकी माया ही थी।

(२५) राय साहब पं० रुद्रदत्तसिंहजी (जो कि इस समय राज-सदन में श्री अयोध्या राज के परसनल असिस्टेन्ट हैं) का कथन है कि मैं एक दिन बिहौलीभवन में श्री सिद्धकिशोरी जी के समीप बैठा-बैठा कुछ वार्तालाप कर रहा था। अकस्मात् पटना (बिहार) लेजिसलेटिव एसेम्बली के स्पीकर श्री रामदयालुसिंह जी भी वहाँ पहुँच गये (जो कि श्री किशोरी जी के अनन्य भक्तों में से थे) और श्री किशोरी जी से प्रार्थना करने लगे कि सरकार! श्री पुजारी जी महाराज से ज्ञात हुआ है कि अब कुछ ही दिनों पश्चात् आपका श्रृंगार विसर्जन होकर अन्तिम आरती होने वाली है। आपने सात वर्ष तक निरन्तर सिंहासन पर विराजते हुये समस्त प्रेमीजनों को सुख दिया है। हम लोग अब आपका नीचे धरती पर बैठना नहीं देख सकेंगे। इसलिये मैं दो-चार दिन में एक अंग्रेजी पढ़ाने वाले मास्टर को पटना से बुलवाता हूँ आप उनसे कुछ अंग्रेजी भी पढ़-सीख लें। जिससे हम लोग आपको सिंहासन पर नहीं तो कुर्सी पर तो बैठा देख सकें! अर्थात् आपको किसी आफ़िस में बाबू की जगह दिलवा देंगे, तब आपको कुर्सी तो अवश्य मिल ही जायगी। इतना सुनते ही श्री सिद्धकिशोरी जी ने मन्द-मन्द मुसकानयुक्त स्पीकर साहब को उत्तर दिया कि आप हमारे लिये इस बात की तनिक भी चिन्ता न करें, हम सदा से सिंहासन पर बैठी हैं और अन्त तक सिंहासन पर ही बैठेंगी। आप हमको अंग्रेजी पढ़ाने का कष्ट न करें! बस इसके कुछ ही दिनों पश्चात् आपने स्पीकर साहब को पटना से बुलवाकर अपनी अन्तिम लीला उनको दिखलाई ही तो दी। अन्तिम समय में उनसे यह भी कहा कि देखिये! हमारा विसर्जन धरती पर नहीं बल्कि आपके ही

सामने एक बड़े भारी विमान पर होने वाला है। आप श्री पुजारी जी को बुला कर अब हमारे अन्तिम विसर्जन के लिये श्री सरयू जी के तट पर आरती की तैयारी भी करा लें।

आपका शील भी सराहनीय था, ठीक भी है। शीलरूपी शैल पर चढ़ता हुआ मनुष्य वन्दनीय होता है जैसे कि चन्द्रमा। दुखी एवं ग़रीबों के साथ तो आपका विशेष ही प्रेम और सरलता का बर्ताव हुआ करता था। कभी भूल कर भी किसी से आपका रूखेपन का व्यवहार देखने में नहीं आया। आपका सिद्धांत यह था कि सब में परमात्मा का निवास समझ कर सब का मान सम्मान करो, और किसी का भूल से भी अपमान मत करो। जो कोई आप से एक बार भी वार्तालाप कर लेता, मुग्ध हो जाता! कहाँ तक कहूँ, आपके अनमोल बोल सुन-सुनकर प्रेमी लोग तो गद्गद हो जाया करते थे।

जिनके हृदय में भगवान के प्रति सच्चा प्रेम है, सच्चा विश्वास और पूर्ण श्रद्धा है, भला वह फिर किसी दूसरे के प्रति कब निर्भर रह सकता है? और जिस किसी को भगवान के प्रेमी भक्त अथवा सेवक बनने का पद प्राप्त हो गया, उसको कोई दूसरा पद प्राप्त होने से प्रतिष्ठा व गौरव का अनुभव कब हो सकता है? बस! यही दशा हमारे स्पीकर साहब की थी। अंग्रेजी जीवन में पले हुये स्पीकर साहेब का श्री सिद्धकिशोरी जी के प्रति सच्चा प्रेम, श्रद्धा एवं सेवा नये युग के लिये अनुकरणीय है।

सज्जनो! संस्कारी एवं परोपकारी महान पुरुषों का प्रभाव छिपा नहीं रहता। समय-समय पर प्रकट हुआ ही करता है, क्योंकि उनके जन्म-जन्मान्तरों का योगबल एवं आत्मबल सदैव उनके साथ ही रहता है, जो कि अवसर पाते ही अपना काम कर दिखाता है। गुप्तदान एवं गुप्तसेवा आपको अधिक प्रिय थीं, श्री किशोरी जी कहा करती थीं कि जो कोई

केवल लोगों को दिखाने के निमित्त ही किसी की सहायता करता है, वह तो उसका ताप मिटाने के लिये नहीं किन्तु उसको जलाने के लिये आग जलाता है।

(२६) श्री शर्मा जी का कथन है कि हमारे मकान पर एक दिन श्री बिहौतीभवन श्री युगल सरकारों का झूला उत्सव भादों में होना था, परन्तु किसी विशेष कारणवश भादों में न होकर पौष में होना ही निश्चित हुआ। हमारे भाई साहब पं० श्री दुर्गादत्त जी के मन में कुछ दुःख इसलिये हुआ कि यदि यही झूला कहीं वर्षा ऋतु में पड़ता तो कैसा अपूर्व सुख मिलता। अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी ने झूले पर विराजते ही ऐसी अनोखी लीला रची कि चारो ओर से अकस्मात् बादल छा गये और वर्षा होने लगी। इतना देखते ही सब प्रेमीजनों के मन प्रफुल्लित हुये और भाई साहब तो मारे प्रेम के बेसुध होकर श्री किशोरी जी के चरणों में ही लोटने लगे, उनकी खुशी की कोई सीमा न थी।

(२७) संगीतरत्न महात्मा महावीर दास जी का कथन है; कि श्री किशोरी जी ने अपने अद्भुत आकर्षण से अपने प्रेम-पाश में हमको इतना कसकर बाँधा कि सन् १९३४ से सन् १९३६ (तीन वर्ष) तक हमारा छूटना कठिन हो गया था अर्थात् तीन वर्ष तक मुझे भी श्री युगल सरकार की सेवा में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी लिखित जीवनी को हमने श्री भैया जी से सुना है। जितने भी चरित्र इन्होंने संग्रह करके लिखे हैं उनमें से कई चरित्र तो हमारी उपस्थिति में ही हुये थे। उनको कहाँ तक दुहराया जाये। एक अपूर्व एवं विलक्षण चमत्कार उनमें यह भी था कि जो कई बार प्रेमीजनों को भी दृष्टिगोचर होता रहा है। जिस समय श्री किशोरी जी शृंगार धारण कर लेतीं तब तो श्री राम जी से चार अंगुल छोटी प्रतीत होने लगतीं,

परन्तु बिना शृंगार के श्री राम जी से दो अंगुल बड़ी दिखाई देती थीं।

(२८) संगीतरत्न जी का कहना है कि अकस्मात् एक समय मेरा विचार उठा कि ग्वालियर कालेज में जाकर कुछ संगीत विद्या एवं पक्के गाने भी सीखकर कोई परीक्षा भी दे डालूँ। इस आशय को लेकर मैंने दूसरे ही दिन श्री किशोरी जी से प्रार्थना भी की कि सरकार! मुझे आशीर्वाद के साथ-साथ प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा दे दी जाय तो मैं ग्वालियर जाने के लिये प्रस्थान कर दूँ। इतना सुन कर श्री किशोरी जी ने टाल-मटोल करते हुये मेरे हाथों में अपनी सीथ प्रसादी दे दी और कहा कि जाने के लिये फिर देखा जायगा। मेरे हृदय में ग्वालियर जाने की उत्कट अभिलाषा हो रही थी, मैंने प्रतिज्ञा कर ली थी कि जब तक ग्वालियर जाने की आज्ञा न होगी तब तक अन्न-जल न करूँगा। भक्तों के हृदय की जाननहारी अन्तर्यामिनी श्री सिद्धकिशोरी जी ने जब मेरी हार्दिक अभिलाषा को जान लिया तो उसी समय प्रसन्नतापूर्वक मुझे आज्ञा दी कि पहले इस प्रसादी को सेवन कर लो तब तुम्हारे मन की सब अभिलाषायें पूर्ण हो जायेंगी। कारण कि तुमने तीन वर्ष तक प्रेमपूर्वक हमारी तन, मन से सेवा की है, और चलते समय यह भी कहा कि यद्यपि ग्वालियर के संगीत महाविद्यालय में तुम्हारा प्रवेश होना कठिन है क्योंकि तुम्हारी आयु वहाँ के नियम से अधिक हो चुकी है, तथापि मैं प्रसन्नतापूर्वक आज्ञा देकर आशीर्वाद भी देती हूँ कि ग्वालियर जाते ही आप के समस्त मनोरथ पूर्ण हो जायेंगे। परन्तु पहले हमको इतना तो बताओ कि गानविद्या से क्या-क्या लाभ होता है?

मैंने इस प्रकार निवेदन किया कि भक्तिमार्ग में गायन विद्या को एक बहुत बड़ा महत्व दिया गया है। इसका कारण यह है कि अनुराग से चित्त की एकाग्रता हो जाने का नाम ही भक्ति है, और चित्त को एकाग्र करने के लिये गान विद्या

जितनी उपयोगी है ऐसा कोई दूसरा साधन नहीं नजर आता। गान की यह प्रत्यक्ष महिमा है कि अत्यन्त चञ्चल हिरन भी अपनी चौकड़ी भूल कर सिर नीचा लटकाये मस्त होकर खड़ा रहे। और अत्यन्त तमोगुणी सर्प भी सिर हिलाता हुआ परमानन्द में मग्न दीख पड़े। उत्तम गान के समय विज्ञ और अज्ञ सब प्रकार के मनुष्यों को आत्मस्मृति एवं जगत विस्मृति कम से कम कुछ क्षणों के लिये हो जाना एक अनुभव सिद्ध बात है, जो कि बरसों तक ध्यान लगाने के परिश्रम से भी होती दिखाई नहीं पड़ती। इसलिये विद्वान महात्माओं का कथन है कि गन्धर्व शास्त्र का पूर्ण विद्वान बिना परिश्रम ही मोक्ष पा जाता है। देखिये ! भक्तिशास्त्र के परम आचार्य श्री नारद जी महाराज ने तो और सब साधनों को छोड़ इस गान विद्या को ही अपनाया है। ठीक भी है, भक्ति परमानन्द रूपा है तो गान भी आनन्द का एक प्रधान चिन्ह है।

श्री वृज गोपियों ने सब उपायों से खिन्न होकर गोपिकागीत के बल ही पर तो भगवान को प्रकट किया था, एवं मीराबाई ने भी गान के पदों द्वारा अपने आप को भगवत स्वरूप में लीन किया था। किसी के चित्त को एक तरफ खींच लेना यही राग रागिनी का काम है। तभी तो गोस्वामी श्री तुलसीदास जी महाराज ने पदावली, गीतावली, विनयपत्रिका द्वारा, एवं श्री सूरदास जी महाराज ने भी गान के पदों में ही भक्ति मार्ग का खूब प्रवाह बहाया है। इसके अलावा श्री चैतन्य महाप्रभु आदि ने भी गानात्मक कीर्तन के प्रचार को ही अपना लक्ष्य माना है।

देखिये सरकार ! स्वास्थ्य को बनाये रखने और उसे अनन्त बनाये रखने के लिये भी गाने के महत्व को कोई अस्वीकार नहीं कर सकता, गाना जीवन में निश्चित रूप से प्रसन्नता की

वृद्धि करता हुआ स्वास्थ्य को भी लाभ पहुँचाता है। महावीर दास जी का कथन है कि श्रीकिशोरी जी इसे सुनकर अति प्रसन्न हुईं। और मुझे आशीर्वाद के साथ-साथ कुछ अपनी सीथ प्रसादी व कुछ रेल खर्चा भी देकर विदा किया। सन् १९३७ में तारीख—को ग्वालियर जाते ही मुझे श्री माधव संगीत महा विद्यालय के प्रधान जी ने प्रसन्नतापूर्वक भर्ती कर लिया। मेरी आयु के बारे में किसी प्रकार की कोई भी जाँच या पूँछताँछ तक नहीं की, यह केवल श्री सिद्धकिशोरी जी की अपार अनुकम्पा नहीं तो और क्या थी? जिस किसी को विश्वास न हो, वह मेरे पास आकर मेरे उपाधिपत्र को देख सकता है, जिसमें आयु का खाना आज तक बिल्कुल खाली पड़ा है। ग्वालियर में ६ वर्ष तक रहकर मैंने गानविद्या के अतिरिक्त कई प्रकार के वाद्य यन्त्र (साज) भी सीखे। और यह भी श्री किशोरी जी की ही कृपा थी कि सन् १९४३ में मैंने उपरोक्त महा विद्यालय में द्वितीय श्रेणी से उत्तीर्ण होते हुये "संगीतरत्न" की उपाधि भी प्राप्त की। यह सब सरकारी कृपा का ही तो फल है, मुझ में इतनी योग्यता कदापि न थी। श्री किशोरी जी की दयालुता, उदारता, अनुकम्पा इत्यादि की जितनी भी प्रशंसा की जाय वह थोड़ी ही है। उत्तर प्रत्युत्तर करने में भी आप हाज़िर जवाब रहा करती थीं। आप की विचारधारा बड़ी ही प्रभावशाली एवं मांगलिक होती थी, जो कि संसारी लोगों के अनिष्ट दूर करने में समर्थ थी। इसी कारण से आप हर समाज के लिये परम श्रद्धा की पात्र थीं। और प्रेमी भक्तजनों की दृष्टि में तो आप परम प्रसिद्ध एवं अधिक गौरवशाली और अग्रगण्य प्रतीत होती थीं। जितनी मान प्रतिष्ठा (आदर सत्कार) आप की होती थी उसकी सीमा ही नहीं है। कहाँ तक कहूँ जैसे खिले हुये कमल के आस-पास भौंरे मंडराते रहते हैं, उसी प्रकार

प्रभाजन आपके चारो ओर झुंड के झुंड मँडराया करते और आप के वचनामृत में स्नान करते ही तृप्त हो जाते थे। आपकी वाणी में भी वह शक्ति थी कि जिससे जो कुछ भी कह दिया वह अवश्य हो ही जाता था। कितना भी असाध्यकार्य क्यों न हो, वह आप के केवल वचनमात्र से ही पूर्ण हो जाया करता था। आपके आशीर्वाद एवं वचन द्वारा ही कई लोगों के लड़के उत्पन्न हुये, तो कई लोग अदालत से मुकद्मा जीत गये। कई मनुष्यों को मनवांछित फल की प्राप्ति हुई। इन्हीं अलौकिक चमत्कारों एवं सिद्ध प्रभावों के कारण आपका शुभ नाम "श्री सिद्धकिशोरी जी" पड़ गया था।

प्रिय सज्जनो एवं पाठको! श्री अवधवासी सन्त महावीर दास जी (संगीतरत्न) कई वर्षों से मेरे (लेखक) से पूर्ण परिचित हैं। मुझे यहाँ उनके विषय में यह कहना है कि वास्तव में आप पर श्री सिद्धकिशोरी जी की अनुपम ही कृपा हुई है, मैंने कई बार आपको भगवान के मन्दिरों में गाते बजाते देखा है। सचमुच! इस समय तो आप संगीत कला के पूर्ण कलाधार हैं। श्री युगल रस सुधासिन्धु माधुरी में डूबते समय तो आपकी संगीत गति का एक अलौकिक स्वरूप हो जाता है। गानविद्या से जैसा आपका प्रेम है वैसा ही आपको भावुक हृदय भी भगवान ने दिया है। आपके मधुर गान, ताल एवं अलाप को सुनकर मनुष्य संगीतानन्द में निमग्न हो जाते हैं। जनता को आनन्द में विभोर तथा प्रेम से तृप्त कर देना यह आपकी पूर्ण योग्यता एवं हृदय की तन्मयता को प्रकट करता है। मैं तो अपनी शुभकामनाओं सहित आपकी गानविद्या का आदरपूर्वक स्वागत करता हुआ प्रेमी पाठकों से भी अनुरोध करता हूँ कि जिस किसी को परमानन्द की आवश्यकता हो, गानविद्या का अभ्यास अवश्य करे! श्री अयोध्या जी में

जो कोई भी जिज्ञासु आपके समीप पहुँच जाता है आप उसे परमार्थ रूप से प्रतिदिन प्रेमपूर्वक गाना बजाना सिखा देते हैं। धन्य है आपकी इस प्रकार की उदारता को—(लेखक)

(२६) श्री जानकीघाट अवधनिवासी महात्मा श्री सियाराम दास जी का कथन है कि विहौतीभवन समाज को एक समय श्री रामदैनीसिंह जी हेडक्लर्क डी० आई० जी० पुलिस मुजफ्फरपुर के निमंत्रण में उनकी जन्मभूमि ग्राम वृन्दावन में १०।१२ दिन के लिये जाना था, मैं भी उनके साथ-साथ चला गया। जाते ही उत्सव प्रारम्भ होने लगा। नौ दिन तक श्री रामनाम• अखण्ड कीर्तन के अतिरिक्त श्री रामअर्चा पूजन, श्री रामविवाह और कलेवा उत्सव भी हुआ। उन दिनों मेरी कर्म-काण्ड में अधिक रुचि रहती थी, इसलिए मैं स्वयंपाकी भी था। एक दिन की घटना है मैंने सत्तू अपने भगवान् के भोग के लिए तैयार किया, उसमें तुलसी छोड़ आँख मूँद भगवान का ध्यान करने लगा, जब आँख खुली तो क्या देखता हूँ कि श्री सिद्ध-किशोरी जी आसन पर आसीन हो बड़े प्रेम से सत्तू आरोग रही हैं! इसी प्रकार जब दुबारा भगवान् को भोग लगाने लगा तो अब की बार भी फिर वही दशा देखकर मुझे दुःख हुआ और मैंने श्री पुजारी जी से सब वृत्तान्त कह सुनाया। पुजारीजी ने हमारे सामने श्री किशोरी जी को समझाया कि बार-बार महात्मा जी को कष्ट क्यों देती हैं? तब श्री किशोरी जी ने उत्तर दिया कि "आप हमको तो ताड़ना कर रहे हैं किन्तु महात्मा जी से क्यों नहीं कहते कि वह ध्यान करते समय हमको क्यों बुलाते हैं?" बस इतना सुनकर श्री पुजारी जी ने कहा कि "यदि यह आपको बुलावें तो भी आप न जावें।" श्री किशोरी जी ने कहा कि "हमसे ऐसा नहीं हो सकता, हमको तो जहाँ पुकारेगा हम वहाँ अवश्य जायेंगी।" सज्जनो!

श्री किशोरी जी के तेज से प्रभावित होकर महात्मा जी चुप होकर लज्जित भी हो गये, और उनके उसी सत्तू प्रसादी का प्रेमपूर्वक भोजन करने लगे।

(३०) दूसरी घटना इस प्रकार है। जब यही समाज श्री गया जी पहुँचा। वहाँ भी मैंने खिचड़ी बना थाल में परोस उसमें तुलसीदल छोड़ कर अपने भगवान श्री सालिगराम जी को भोग लगाते समय उनका ध्यान करने लगा, अपने नियमानुसार मैंने भगवान श्रीराम जी एवं श्री किशोरी जी से प्रार्थना की कि भगवन्! आज देर हो गई है अपराध क्षमा करें। सज्जनो! यद्यपि उस समय श्री युगल सरकार अपने भंडार में भोजन कर रहे थे। भोग लगाने के बाद जब आँखें खोली तो श्री सिद्धकिशोरी जी को प्रेमपूर्वक खिचड़ी आरोगते देखा, और जब उनके भंडार की तरफ जाकर देखा तो वहाँ श्री युगल सरकार भोजन कर रहे हैं। जब युगल सरकार भोजन करके अपने पलंग पर शयन कर गये तब सुन्दर अवसर देख कर मैंने जो खिचड़ी बटलोई में बाकी बची थी उसी को अपने भगवान को फिर से भोग लगाया! अबकी बार भी जब आँख खोली तो इधर श्री किशोरी जी को खिचड़ी आरोगते देखा और उधर जाकर देखता हूँ तो अपने पलंग पर सो रही हैं। इस घटना की सूचना मैंने तुरन्त श्री पुजारी जी को दी। ∴ पुजारी जी ने उस समय कई प्रेमियों को दिखलाया। तो इस रहस्य को देखकर सब लोग चकित हो गये। किसी की कुछ भी हिम्मत बोलने की न रही। और उस समय श्री सिद्धकिशोरी जी की वाणी केवल देव वाणी ही थी। कर्मकाण्डी जी का कथन है, कि सिद्धकिशोरी जी के उस समय के तेज एवं आभा से मैं इतना प्रभावित हुआ कि उनके आकर्षण से मैं अपने आप को भी भूल गया, मेरा स्वयंपाकीपना और कर्मकाण्ड भी बिल्कुल फीका पड़ गया। मैं जो

पहले उनकी प्रसादी को लड़कों का जूठन कहा करना था उसी दिन से मैं भी उनकी सीथ प्रसादी उनके हाथों से छीन-छीन कर खाने लगा। इस घटना की खबर समस्त ग्राम में फैल गई। तब से बहुत सी जनता नित्य प्रति इनके दर्शनार्थ आने लगी। श्री सिद्धकिशोरी जी के आचार-विचार, शुद्धता, परोपकार, उदारता, दयालुता, भजन एवं पूजा-पाठ को देख सुन कर तो अच्छे-अच्छे महात्मा भी मुग्ध हो जाया करते थे।

(३१) शृंगारी श्री रामविलासशरण जी का कथन है कि श्री सिद्धकिशोरी जी अपने अन्तर्यामीपने के कारण सबके हृदय की गति मति पहिचानती थीं और उनके सुधार की युक्ति भी किया करती थीं। एक दिन एक महात्मा आपकी सेवा में पहुँचे, उनका मुख देखते ही आप ताड़ गईं कि इनका आचरण कुछ खराब है (कारण कि मुख तो मानसिक विचारों का दर्पण है, मन में अच्छे-बुरे जैसे भी विचार उठेंगे वैसे ही भाव भी मुख पर व्याप्त हो जायेंगे) आप ने मनोहर वचनों द्वारा उसको बहुत समझाया बुझाया, परन्तु जब वह नहीं माना, तो कह दिया कि जाओ आज से मरते दम तक तुमको कभी श्री अयोध्या जी का दर्शन न मिलेगा। लगभग २४ वर्ष हो चुके हैं वह आज तक श्री अयोध्या जी दर्शनार्थ कभी नहीं आया। मैं यहाँ उसका नाम प्रकट नहीं करना चाहता। बहुत लोग तो उनको जानते भी हैं।

(३२) शृंगारी जी का कहना है कि श्री जानकीघाट के समीप ही चारुशिला बाग में श्री युगल सरकार की झाँकी होती थी। वहाँ पहुँचते ही शृंगार होने लगा, मैं श्री युगल सरकार का मुख शृंगार कर रहा था तो परस्पर होड़ बँध गई। श्री रामजी कहने लगे कि मम शृंगार पहले हमारा होगा, इधर श्री सिद्ध-

किशोरी जी का कथन था कि पहिले हमारा होगा । श्री किशोरी जी ने पहिले अपने वस्त्र भूषणबक्स से निकाल लिये, और ताला बन्द करके चाबी भण्डारी जी को दे दी । इधर श्री राम जी चाबी लेकर ताला खोलने लगे, ताला खोलते-खोलते स्वयं जब हार गये तब शृंगारी जी तथा और प्रेमीजन भी ताला खोलने लगे, मगर ताला किसी से भी नहीं खुला । तब तक श्री किशोरी जी का सम्पूर्ण वस्त्र शृंगार भी धारण हो गया । अब तो विवश होकर जब श्री राम जी ने हार मानी तब श्री किशोरी जी ने अपने चरण का अँगूठा ताले से छूकर कहा कि "खुल जा", बस इतना कहना ही था कि ताला तुरन्त खुल गया । इस प्रकार का अद्भुत चमत्कार देखते ही समस्त उपस्थित प्रेमी दर्शकगण चकित हो गये और श्री सिद्धकिशोरी जी की भूरि-भूरि प्रशंसा करने लगे ! और उनके उस चरणकमल को (जिसके स्पर्शमात्र से ताला खुल गया था) धो धोकर चरणामृत लेने लगे । पाठको ! महात्माओं का संसर्ग सभी को लाभदायक होता है। सज्जनों का संग प्राप्त करके जब कि साधारण लोग भी महत्ता को प्राप्त करते हैं तब ऐसे संस्कारी, चमत्कारी सिद्ध बालकों का तो कहना ही क्या ?

(३३) शृंगारी जी का कथन है कि श्री अयोध्या जी रायगंज के एक महात्मा श्री रामचरणदास जी ने बैशाख शुक्ला अष्टमी प्रातःकाल ही बिहौतीभवन में पहुँच कर श्रीकिशोरी जी से प्रार्थना की कि यदि आज रात्रि को हमारे स्थान में श्री युगल झाँकी का प्रेमीजनों को दर्शन हो जाय तो अहोभाग्य समझूँगा। श्री किशोरी जी ने प्रसन्नतापूर्वक इसको स्वीकार कर लिया और महात्मा जी भी शाम तक झाँकी का समस्त प्रबन्ध करके सवारी लेकर जब आये तो क्या देखते हैं कि श्री सिद्धकिशोरी जी को बहुत जोरों से ज्वर चढ़ रहा है। महात्मा जी को देखते ही श्री किशोरी जी चलने को तैयार हो गईं । यद्यपि उन महात्मा जी ने

पुजारी जी और मैंने भी बलपूर्वक बहुत ही उपाय किये कि आज झाँकी स्थगित रक्खी जाय, परन्तु दयासागरी श्री किशोरी जी को अपने वाक्यदान की भारी चिन्ता लगी थी इसलिये किसी की एक भी नहीं मानी, और वही की जो दिल में थी ठानी। श्रृंगार और परिकर सहित उन महात्मा जी के स्थान में पहुँच कर बुखार की दशा में ही अपना श्रृंगार कराना आरम्भ करा दिया। श्री चन्द्रिका धारण होते ही न जाने बुखार और जाड़ा कहाँ भाग गया? तीन घंटे तक आनन्दपूर्वक झाँकी हुई, ब्यारू भी हुई, परन्तु चन्द्रिका के उतरते ही तुरन्त जाड़े का बुखार चढ़ना पुनः आरम्भ हो गया।

(३४) वैशाख शुक्ला ६ को श्री जानकीनवमी प्रधान उत्सव श्री विहोतीभवन में होने के कारण श्री युगल सरकार की झाँकी भी होनी थी परन्तु श्री किशोरी जी को ज्वर ज़ोरों से चढ़ रहा था, इसलिये पुजारी जी ने आज की झाँकी स्थगित रखने का निश्चय कर लिया। परन्तु श्री सिद्धकिशोरी जी को जब यह खबर मिली तो हठपूर्वक आप मचल गईं कि झाँकी कदापि रुक नहीं सकती। और सन्ध्या होते ही आप श्रृंगार घर में पहुँच कर श्री पुजारी जी को बाध्य करने लगीं कि आज जानकी नवमी है, इसलिए पहले हमारा श्रृंगार होना चाहिए तब श्रीराम जी का! आप की इस प्रकार की प्रबल एवं उत्कट अभिलाषा को टालने की शक्ति भला किसमें थी? श्रृंगार होना प्रारम्भ हो गया। ज्यों ही श्री चन्द्रिका धारण हुई, कल की तरह आज भी न जाने आपका जाड़ा (ज्वर) कहाँ भाग गया? आज का उत्सव चार-पाँच घंटे तक आनन्दपूर्वक होने के बाद रात को ब्यारू में फलाहार का भोग भी लगा। इधर श्रृंगार विसर्जन होते ही उनको ज्वर फिर से चढ़ आया, किन्तु केवल एक ही घंटे के लिये रहा। और फिर उसके बाद बिल्कुल जाता रहा।

सज्जनो ! आपको वाक्यदान की हमेशा भारी चिन्ता बनी रहती थी, इसीलिये आप ने यह विचित्र लीला रची, आप की दुखी एवं निर्बल जीवों पर तो सदा भारी अनुकम्पा एवं दया रहती थी, इसलिये किसी को कुछ तो किसी को कुछ आप वितरण किया ही करती थीं। आपके दरबार से कभी कोई याचक, आर्त अथवा अभ्यागत भूखा-प्यासा नहीं जाता था। आप सबके मनोरथ को पूर्ण कर दिया करती थीं। आपका ऐसा नम्र एवं दयालु स्वभाव देखकर ही तो आपके गुरुदेव श्री पुजारी जी महाराज ने आपको समस्त भंडार एवं खजाने तक की चाबी भी सौंप रखी थी। सज्जनों ! मनुष्य के हृदय में युग-युग के तथा जन्मजन्मान्तरों के संस्कार सञ्चित रहते हैं। और जिनके संस्कार साधना के, भजन के या भगवद्‌भक्ति के हुआ करते हैं, छिपाये से छिपते नहीं, तभी तो भगवान भी अपनी साधना एवं प्रेम की पूँजी उनको सौंप देते हैं। यदि श्री पुजारी जी ने अपने भंडार एवं खजाने की चाबी श्री सिद्धकिशोरी जी को सौंप दी तो कौन बड़ी बात हुई ? आपके हस्तकमल में तो एक ऐसी रेखा पड़ी थी कि आप जितना भी अन्न, धन एवं वस्त्रादि लुटातीं, उससे कहीं अधिक आ भी जाता, दरबार में कभी किसी वस्तु की कमी न पड़ती थी।

(३५) श्री अयोध्या जी बिहौतीभवन के वर्तमान संचालक पुजारी श्री रामशंकरशरण जी महाराज का कथन है कि किसी समय हमारे समाज को निमंत्रण में श्री राजगृही जाना पड़ा। ज्येष्ठ का महीना था, एक दिन तप्तकुंड के दर्शनार्थ एवं स्नान करने के लिये हम सब वहाँ गये। उस तप्त कुंड में श्री राम जी केवल दो ही गोते लगा कर तुरन्त बाहर निकल आये, जब कि उसी कुंड में श्री किशोरी जी ने पचासों डुबकियाँ लगाईं, लगभग आधा घंटा तक स्नान करने से न तो उकताई

और न ही घबराईं। इस प्रकार की आश्चर्यमई घटना को देख सुन कर सब प्रेमी और दर्शकगण मूक से रह गये, और श्री किशोरी जी की बड़ी प्रशंसा करने लगे।

(३६) श्री पुजारी जी का कथन है, माघ का महीना था, ठण्डी अधिक पड़ रही थी। श्री युगल सरकार ने एक दिन प्रातःकाल हमसे श्री सरयू स्नान करने के निमित्त कहा। ठण्डी अधिक होने के कारण ऊनी वस्त्र एवं अग्नि की अँगीठी का भी प्रबन्ध करके प्रेमी लोग सरकार के साथ गये। श्री राम जी ने श्री सरयू जी में केवल चार-पाँच गोते लगाये, ऊनी कपड़े पहिन कर अँगीठी भी तापने लगे, इधर श्री सिद्धकिशोरी जी एक घण्टा तक आनन्दपूर्वक श्री सरयू जी में स्नान करती रहीं, पचासों डुबकियाँ लगाईं न तो ऊनी वस्त्र पहिने और न ही अग्नि को तापा। इस प्रकार का अपूर्व प्रभाव एवं साहस देख कर प्रेमी लोग उन पर न्योछावर हो गये।

(३७) श्री पुजारी जी का कहना है कि एक दिन विहौती-भवन मन्दिर की छत पर से एक कबूतर जगमोहन में गिरते ही मर गया। उधर मन्दिर में झाँकी होनी थी और श्री सिद्धकिशोरी जी का शृंगार भी हो चुका था यह देखते ही श्री सिद्धकिशोरी जी के दयालु हृदय पर भारी ठेस लगी, उनको झाँकी तो भूल गई, अपने दयालु स्वभाव के वशीभूत होकर उस मरे कबूतर को अपने रेशमी रूमाल में बाँध कर श्री लक्ष्मण-शरण जी के हाथों में दे दिया, और कुछ सन्तों को संग में लेकर वैसे ही शृंगारस्वरूप में आप भी श्री सरयूतट पर पधारीं, और स्वयं अपने करकमलों द्वारा उस कबूतर की लाश को श्रीसरयू जी में प्रवाह करते हुये उसको आशीर्वाद और तिलाँजलि भी दी, न जाने इसमें क्या गुप्त रहस्य था। प्रभु की लीला प्रभु ही